आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 जुलाई, 2021
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2021

वर्ष : 79 अंक : 07
आषाढ़, 2078 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

जुलाई , 2021

Website : www.jinwani.in

अहंकारी व्यक्ति से समाधि कोसों दूर होती है।

– आचार्यश्री हीरा

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जय गुरु हस्ती जय महावीर जय गुरु हीरा-मान

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रहीरागणिभ्यो नमः

अंक सौजन्य

स्वर्गीय सेठ
श्री जोगीदासजी बाफना
भोपालगढ़-जोधपुर (राज.)
(1888-1956)

तपस्विनी स्वर्गीय
श्रीमती मानकँवरजी बाफना
भोपालगढ़-जोधपुर (राज.)
(1903-1990)

स्वर्गीय सुश्रावक
श्री सम्पतराजजी बाफना
भोपालगढ़-जोधपुर (राज.)
(1930-2012)

स्वर्गीय सुश्राविका
श्रीमती सीतादेवीजी बाफना
भोपालगढ़-जोधपुर (राज.)
(1932-2019)

मूलत: भोपालगढ़ (राज.) के निवासी स्व. श्री जोगीदासजी बाफणा के सबसे छोटे सुपुत्र स्व. श्री सम्पतराजजी बाफना के जीवन की अमूल्य बातें :-चारित्रवान साधु-साध्वियों के प्रति अगाध श्रद्धाभाव, प्रसन्नचित्त होकर उदारभाव से उनकी सेवा-सुश्रूषा, गोचरी आदि का उलट भाव से बहराना। सामायिक-स्वाध्याय के प्रति अत्यन्त श्रद्धा एवं सामायिक के तुल्य पृथ्वी का सब धन बेकार-इतनी श्रद्धा कि नित्य 11 से 15 सामायिक करना। दीन-दु:खियों के प्रति अत्यन्त करुणा भाव। जीवन में प्रमाद बिल्कुल शून्य। गुणिओं के गुण देखकर उनकी स्तुति करना। अपने से विपरीत चलने वालों के प्रति भी द्वेष नहीं, बदले की भावना लेश मात्र भी नहीं। जीवन में किसी को धोखा नहीं दिया। धोखा देने वालों के प्रति द्वेष नहीं। गम खाने की कला जीवन में अपनायी। अष्टमी, चौदस को करीब 28-30 वर्ष तक उपवास, तेला, अठाई, नौ, ग्यारह, सत्रह, इक्कीस की तपस्याएँ। बेला और अठाई कई बार बड़ी तपस्या में 2 पोरसी पर्यन्त ही पारणा। जिनशासन के प्रति अत्यन्त श्रद्धा, हिंसा में धर्म नहीं दृढ़ता से पालन। 50-52 वर्ष की आयु में अपरिग्रही, सभी सम्पत्ति का बँटवारा किया अपने पास कुछ नहीं रखा। धर्म दलाली उत्कृष्ट। साहित्य वितरण, स्वाधर्मियों की गुप्त आर्थिक सहायता। दृढ़ निश्चयी गज़ब का आत्मबल। पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. एवं पूज्य श्रुतधर श्री प्रकाशचन्दजी म.सा. के दर्शनार्थ पधारने पर 108 बार वन्दन करते थे। आज रात्रि में चला जाऊँगा, ऐसा पूर्वाभास व्यक्त। अन्तिम समय में स्वयं ने सभी त्याग करके सकाम मरण प्राप्त किया। समाधि मरण के बाद ललाट पर ॐ का चिह्न जो लगभग 5-6 घण्टे रहा।

श्रद्धान्वित परिवारजन

प्रकाशचन्द-पिस्ता बाफना
उमरावमल-पुष्पा बाफना
सुशीला-नवरत्नमल ललवाणी
कंचन-नेमीचन्द कवाड़
ममता-महेन्द्र मोहनोत
उषा-महावीर रेड, जोधपुर-सूरत

स्वरूपचन्द-सरला बाफना
सुदर्शन-समृद्धि
साध्य बाफना, सूरत

अंकिता-विनीत मेहता
विआन मेहता
अहमदाबाद

S. C Bafna & Co. (CA) Surat

जय गुरु हस्ती जय महावीर जय गुरु हीरा-मान

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रहीरागणिभ्यो नमः

अंक सौजन्य

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, अनन्त श्रद्धा के केन्द्र

आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा.

व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक

श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

के चरण कमलों में शत-शत वन्दन, नमन।

अनन्य गुरुभक्त

श्रावकरत्न स्व. श्री रतनलालजी नाहर

श्रावकरत्न स्व. श्री माणिकलालजी नाहर

श्राविकारत्न स्व. श्रीमती सरलाजी धर्मसहायिका स्व. श्री माणिकलालजी नाहर

श्राविकारत्न स्व. श्रीमती अलकाजी धर्मसहायिका श्री विजयजी नाहर

दृढ़धर्मी विनयवान

एवं

गुरु चरणों में समर्पित

श्रद्धान्वित गुरुभक्त

नाहर परिवार (बरेली वाले)

विजय,

जतिन, प्रिया, वेदान्त, ईशान नाहर

प्रिती, निलेश, रितिका, अनिका जैन

इन्दौर-भोपाल-बरेली

ISSN 2249 - 2011 हिन्दी–मासिक

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

卐 सह–सम्पादक
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

卐 सम्पादकीय कार्यालय
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

परिजूरइ ते सरीरयं,
केसा पंडुरया हवंति ते।
से फास-बले य हायइ,
समयं गोयम! मा पमायए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.25

हो रहा जीर्ण यह तन तेरा,
हो रहे केश ये धवल पककर।
घट रहा स्पर्श का बल तेरा,
गौतम! प्रमाद क्षण का मतकर।।

जुलाई, 2021
वीर निर्वाण सम्वत्, 2547
आषाढ़, 2078

वर्ष 79 अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि ``JINWANI'' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, E-mail : sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	पूज्य आचार्यप्रवरश्री हीरा की संघनायकता	–डॉ. धर्मचन्द जैन	7
विचार-वारिधि-	गुणियों के गुणों का कीर्तन	–आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	11
प्रवचन-	आचार्यश्री हमीरमलजी महाराज का प्रेरणादायी जीवन	–आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
	गौरवशाली संघ-दीप्ति में सजग बनें	–महान् अध्य.श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	15
	सम्यग्दर्शन की विशेषताएँ	–मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी	17
	शुभयोग एवं पुण्य कहीं हेय नहीं	–तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	19
आचार्यपद दिवस-	आचार्य श्री हीरा के संघनायकत्व के तीन दशक : प्रमुख उपलब्धियाँ	–श्री नौरतनमल मेहता	25
शोधालेख-	राजीमती चरित्र की विकास यात्रा : तुलनात्मक विवरण	–रेखा जैन (शोधार्थी)	34
तत्त्व-बोध	श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति एवं जीव	–डॉ. ओ. पी. चपलोत	45
युवा-स्तम्भ-	युवा पीढ़ी का आहार के प्रति रवैया	–श्री त्रिलोकचन्द जैन	47
आगम-वाक्-	जिनशासनसूत्र	–श्री हेमन्त लोढ़ा	54
जीवन-व्यवहार-	व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (6)	–श्री पी.शिखरमल सुराणा	55
तत्त्व-चर्चा	आओ मिलकर कर्मों को समझें (13)	–श्री धर्मचन्द जैन	56
English-section	**Let Us Call Our Soul**	–*Sh. Jitendra Chaurdia 'Prekshak'*	59
रिपोर्ट-	आचार्य हस्ती-स्मृति व्याख्यान माला के अन्तर्गत तीन वेबिनार का आयोजन	–डॉ. धर्मचन्द जैन	61
गीत/कविता-	जिनशासन की पुकार	–श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	24
विचार/चिन्तन-	संसार की अधिकांश समस्याओं की जड़ हमारी वाणी	–श्री जसराज देवड़ा	14
	महाप्रभावशाली 13 उपाय	–श्री पीरचन्द चोरड़िया	24
	शिष्टाचार प्रशंसक	–श्री नवरतन डागा	88
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	–श्री गौतमचन्द जैन	64
चातुर्मास-सूची-	रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास	-संकलित	68
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	75
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	89
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	–विभिन्न लेखक	91

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 7
ISSN 2249-2011

सम्पादकीय

पूज्य आचार्यप्रवरश्री हीरा की संघनायकता

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

वैशाखशुक्ला अष्टमी विक्रम सम्वत् 2048 तदनुसार 21 अप्रेल, 1991 को अध्यात्मयोगी युगमनीषी परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का तेरह दिवसीय तप संथारे के साथ महाप्रयाण हुआ और दूसरे दिन 22 अप्रेल को आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा में पूज्यश्री के द्वारा कृत मनोनयन के आधार पर सुयोग्य शिष्यों में श्रद्धेय श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को संघ का आचार्य एवं श्रद्धेय श्री मानचन्द्रजी म.सा. को उपाध्याय घोषित किया गया। आचार्य पद तो आपका 22 अप्रेल को घोषित हो गया, किन्तु आचार्यपद की चादर ज्येष्ठकृष्णा पञ्चमी, 2 जून 1991 को जोधपुर में सरदार स्कूल के प्राङ्गण में चतुर्विध संघ की उपस्थिति में ओढ़ायी गई। यह भव्य कार्यक्रम एक ऐतिहासिक घटना रही। 52 वर्ष की वय एवं पौने 28 वर्ष की दीक्षा पर्याय में आप रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर के रूप में पदासीन हुए। सबके नयन यह देखने के लिए आतुर थे कि पूज्यश्री के द्वारा 61 वर्षों तक संघनायक के रूप में मार्गदर्शन किया गया, अब यह संघ किस प्रकार अब आगे बढ़ेगा। किन्तु परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के संघनायकत्व के ये तीन दशक अत्यन्त सफल रहे हैं। अनेक कठिन परिस्थितियाँ भी उपस्थित हुई, किन्तु आपकी सूझबूझ, समता एवं दृढ़ता से उनका प्रभाव निष्प्रभ हो गया तथा संघ अडोल एवं अविचल गति से निरन्तर आगे बढ़ता रहा।

आपके संघनायकत्व की कतिपय उपलब्धियों एवं विशेषताओं का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है–

1. संघ के आचार्य के रूप में आपका उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के साथ सुन्दर सामञ्जस्य एवं समन्वय रहा। दोनों महापुरुषों ने संघ की सुगन्ध को द्विगुणित और बहुगुणित किया। उपाध्यायप्रवर दीक्षा पर्याय में आपसे छह माह बड़े थे, अत: आप उन्हें वन्दन करते थे तथा आचार्य का पद बड़ा होता है अत: उपाध्यायप्रवर आपको वन्दन करते थे। आप दोनों के जोधपुर (सन् 1991), मदनगंज-किशनगढ़ (1998), जलगाँव (2000) एवं धुलिया 2001) में संयुक्त चातुर्मास हुए। विभिन्न विषयों में आप उपाध्यायप्रवर से परामर्श कर निर्णय करते थे। एक-दूसरे को सम्मान देकर आप संघ की नैया के कुशल खिवैया बने।
2. अपने पूज्य गुरुदेव के प्रति आपका सर्वतोभावेन उत्कट कोटि का समर्पण रहा। अत: उनके शिष्यों एवं अपने सतीर्थ्यों (साथी मुनिप्रवरों) के साथ भी पूर्ण स्नेह एवं मैत्री का व्यवहार रहा। उन सतीर्थ्यों ने भी आपको मन, वचन एवं कर्म से पूरा सहकार दिया। इसीलिये यह संघ निरन्तर प्रगतिपथ पर आगे बढ़ता रहा है। महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने तो एक भी चातुर्मास स्वतन्त्र नहीं किया। सभी चातुर्मास पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सन्निधि में किए। वे पूज्य आचार्यप्रवर को अपने गुरुदेव की भाँति आदर, सम्मान देते हैं और उनकी हर पल अन्तेवासी की भाँति सेवा में तत्पर रहते हैं। पूज्य आचार्यप्रवर भी उनकी भावनाओं का आदर करते हैं। मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के अधिकांश चातुर्मास पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की सन्निधि में हुए। वे भी पूज्य आचार्यप्रवर के हर आदेश एवं सन्देश को पूरा आदर देते हैं। सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणजी म.सा. एवं तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के भी वर्षों तक अनेक चातुर्मास पूज्य आचार्यप्रवर की

सन्निधि में हुए। अब कतिपय वर्षों से आचार्यप्रवर की अनुज्ञा से उनके स्वतन्त्र चातुर्मास हो रहे हैं। सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणजी म.सा. थोकड़े के अच्छे जानकार हैं तथा तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आगम, कर्मग्रन्थ, संस्कृत, प्राकृत, दर्शनग्रन्थ आदि सभी विषयों के मर्मज्ञ हैं। आपके कुछ चातुर्मास उपाध्यायप्रवर की सेवा में भी हुए हैं। पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री हस्ती के द्वारा घड़े हुए ये सभी सन्तप्रवर संघ एवं संघनायक के प्रति निष्ठावान रहकर संघ की समृद्धि में प्रयत्नशील रहते हैं। पूज्यआचार्य हस्ती के द्वारा दीक्षित साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा., विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा., विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि सभी महासतीवृन्द भी पूज्य आचार्यप्रवर के प्रति एवं संघ के प्रति समर्पित रहकर धर्मसंघ के उत्थान एवं आत्मकल्याण में सन्नद्ध रहते हैं। यह संघ के लिए महती उपलब्धि है।

3. पूज्य आचार्यप्रवर सभी सन्त-सतियों को प्रेम एवं मैत्री के साथ अनुशासन में जोड़े रखते हैं। स्वयं भी आचार-पालन में कठोर हैं, कहीं कोई समझौता नहीं है, शिथिलता नहीं है, अतः सन्त प्रवर एवं महासतीवृन्द भी आपके संकेतों का आदर करते हैं। आप प्रचार से अधिक आचार को महत्त्व देते हैं। प्रचार के लिए आचार में शिथिलता आपको स्वीकृत नहीं है। आचार से प्रचार स्वतः होता है। जिनमें शिथिलता देखी तो उन्हें संघ से पृथक् करने में भी विलम्ब नहीं किया। आपमें दृढ़ता है, निर्भयता है एवं जिनशासन के प्रति समर्पण है।
4. आपने कभी-भी अपने नाम को आगे लाने एवं अपना प्रचार-प्रसार किए जाने का कोई उपक्रम नहीं किया। पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री हस्ती के नाम को ही आप सदैव आगे रखते हैं और उनकी कृपा का स्मरण कर संघ को दोषों से बचाए हुए हैं। आपने आचारनिष्ठा को सुदृढ़ रखने और संमय के प्रति जागरूकता बनाए रखने के लिए समिति-गुप्ति एवं साधना के विकास के सम्बन्ध में सभी सन्त-सतियों से पत्रक भरवाना प्रारम्भ किया एवं स्वयं ने भी वे पत्रक भरे। आपका मानना है कि सन्त-सतियों का आचार-विचार ही संघ का आधार है।
5. आधुनिकता के इस दौर में भी आपने लाउडस्पीकर (माइक) के प्रयोग को पूर्णतः निषिद्ध रखा है। अनेक परम्पराओं के सन्तों के प्रवचन टी.वी. पर प्रसारित हो रहे हैं, मोबाइल, लेपटॉप आदि का उपयोग किया जा रहा है, किन्तु पूज्य आचार्यप्रवर के शासन में जहाँ पर सन्त-सती विराजते हैं, वहाँ पर इनका प्रवेश भी वर्जित है।
6. आप सन्त-सतियों को यश-कीर्ति की चाह से दूर रखना चाहते हैं, क्योंकि वह चाह भी साधना में शिथिलता का प्रवेश करा देती है। अहंकार-विजय के स्थान पर अहंकार बढ़ाने का कार्य प्रारम्भ हो जाता है। अतः साधुचर्या में कषायविजय की साधना ही आपकी दृष्टि में प्रमुख है।
7. ज्ञानाराधना एवं ज्ञान संवर्धन के लिए पूज्य आचार्यप्रवर की निरन्तर प्रेरणा रहती है। संघ में सम्प्रति अनेक सन्त एवं महासतीवृन्द को अनेक आगम कण्ठस्थ हैं। बीस-बाईस आगम वाली अनेक महासतियाँजी एवं सन्त संघ की शोभा बढ़ा रहे हैं। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. बड़े उत्साह एवं लगन से बड़ी विनम्रता के साथ अध्यापन में संलग्न रहते हैं। उनके माध्यम से पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा सन्त-सतियों को विभिन्न आगमों पर प्रश्न प्रेषित कराकर सतत ज्ञान संवर्धन

के कार्य समय-समय पर सम्पन्न हो रहे हैं।

8. आज अनेक सन्तों एवं महासतीवृन्द के संघ में प्रभावी प्रवचन हो रहे हैं। पूज्य आचार्यप्रवर की शिष्य मण्डली में श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. विनयसम्पन्नता, ज्ञानसम्पन्नता, आचरण सम्पन्नता के साथ सहज वाणी में प्रवचन फरमाते हैं जो जन-जन को प्रियकारी होते हैं। आपके संघनायकत्व में दीक्षित महासतीवृन्द में व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा., महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा., महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा., महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि महासतीवृन्द के प्रवचन भी जन-जन को प्रभावित करते हैं। बिना ज्ञान के एवं आचरण के प्रवचनों में प्रभावकता नहीं आती है।

9. श्रावक-श्राविका समुदाय को भी ज्ञान एवं आचरण में आगे बढ़ने हेतु पूज्य आचार्यप्रवर की निरन्तर प्रेरणा रहती है। आपके संघनायकत्व में पहले श्रावकरत्न श्री रतनलाल सी. बाफना साहब के द्वारा, फिर श्राविका मण्डल के द्वारा एवं युवक परिषद् के माध्यम से अनेक आगमों, इतिहास ग्रन्थों आदि पर प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। अभी भी आवश्यकसूत्र पर आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के माध्यम से प्रतिक्रमण की सही समझ एवं ज्ञानवर्धन का कार्य चल रहा है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड सन् 2001 से सम्पूर्ण विश्व में व्यवस्थित रीति से ज्ञानवर्द्धन के कार्य में संलग्न है। हजारों परीक्षार्थियों ने इसकी अर्द्धवार्षिक/वार्षिक परीक्षा में भाग लेकर जैनधर्म एवं तत्त्वज्ञान का बोध किया है। अभी 12 कक्षाओं का पाठ्यक्रम बना हुआ है तथा थोकड़ों की परीक्षाओं का भी पृथक् से पाठ्यक्रम है।

10. आप युवाओं को भी धर्मसाधना से जुड़ने हेतु प्रेरित करते रहते हैं। उन्हें निर्व्यसनता, स्वाध्याय, सामायिक एवं सेवा से जोड़ते हैं। आपके संघनायकत्व में स्थापित अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् सुयोग्य नेतृत्व में तीस वर्षों से निरन्तर प्रगतिपथ पर बढ़ रही है। इसने जिनवाणी पत्रिका के सदस्यों की संख्या में अभिवृद्धि की, जिनवाणी के अंकों पर प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया, संघसेवा, विहारसेवा, तपस्या, ज्ञानाराधन आदि को प्रोत्साहित किया। इसकी अनेक शाखाएँ एवं केन्द्र भारत में एवं बाहर भी कार्यरत हैं। इससे युवकों में एक-दूसरे को सम्बल प्राप्त होता है। अभी भगवान महावीर के जीवन से सम्बद्ध 'वीर गुण गौरव गाथा' का सभी सदस्यों द्वारा स्वाध्याय चल रहा है, साथ ही प्रतिक्रमणसूत्र भी अर्थसहित कण्ठस्थ किया जा रहा है।

11. श्राविका मण्डल भी ज्ञानवर्द्धन, तपश्चरण एवं सन्त-सतीसेवा में अग्रणी है। आपके माध्यम से इतिहास एवं आगमों पर अनेक प्रतियोगिताएँ हुईं। युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. ने नारी शिक्षा एवं संस्कारों को महत्त्व दिया, उसी प्रकार पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने भी नारियों को ज्ञान एवं आचरण के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है। आचार्यश्री शील की रक्षा को विशेष महत्त्व देते हैं, अत: फैशन के पूर्व शालीनता को अनिवार्य मानते हैं।

12. श्रावक-श्राविका धर्मस्थान में जाकर सामायिक साधना करेंगे तो वहाँ घर की अपेक्षा चित्त अधिक एकाग्र हो सकेगा तथा एक-दूसरे को प्रोत्साहन एवं सम्बल मिलेगा। इसी प्रकार श्रावक-श्राविकाओं को धार्मिक, स्वास्थ्यपरक एवं वैज्ञानिक कारणों से

भी रात्रि-भोजन के त्याग की प्रेरणा आचार्यप्रवर के द्वारा अभियान के में की जाती है। इस विषय पर कोटा चातुर्मास (सन् 2014) में एक विद्वत्संगोष्ठी भी आयोजित हुई थी। रात्रि-भोज के समारोह न हों, इस प्रेरणा का दक्षिण भारत के चेन्नई में सकारात्मक परिणाम हुआ। वहाँ पर अनेक विवाह समारोह दिन में ही सम्पन्न होते हैं। ऐसे उदाहरण जयपुर, जोधपुर, सवाईमाधोपुर आदि क्षेत्रों में भी देखे गए हैं। इससे धन का दुरुपयोग भी रुकता है तो जीवहिंसा भी कम होती है और अन्न की बर्बादी भी नहीं होती है।

13. आपने शीलव्रत की दृष्टि से भी संघ का समुचित मार्गदर्शन किया है। आप प्रतिवर्ष अपनी आयु के जितने आजीवन शीलव्रती बनाते हैं। अन्य सन्त-सतियों के सान्निध्य में भी यह क्रम चलता है। इससे व्यक्ति एवं समाज का कल्याण होता है।

14. पूज्य आचार्यप्रवर की दीक्षा-अर्द्धशती के अवसर पर नवम्बर 2013 में जिनवाणी का 'आगमादर्श आचार्यश्री हीरा' विशेषाङ्क प्रकाशित हुआ था, उसमें पूज्य आचार्यप्रवर की चारित्रिक विशेषताओं, घटनाओं एवं प्रभावी प्रसङ्गों का विवरण उपलब्ध है। आपके आचार्यपद को जब 25 वर्ष हुए तब जून 2016 में 'आचार्यपद विशेषाङ्क' प्रकाशित हुआ था। इस अंक में 'आचार्यप्रवरश्री हीरा के सन्देश' आलेख है, जो सर्वदा पठनीय है। इसमें साधु-साध्वियों के लिए, श्रावक-श्राविकाओं के लिए, मुमुक्षुओं के लिए, स्वाध्यायी वर्ग के लिए, पदाधिकारियों के लिए, कार्यकर्त्ताओं के लिए पूज्य संघनायक के अमूल्य पावन सन्देश प्रकाशित हैं, जो सबका सदैव मार्गदर्शन करते रहेंगे। उनके सन्देशों का सार है-1. गुणज्ञ बनें। 2. सन्त-सती संयम के भाव बनाने और बढ़ाने में निमित्त बनते हैं, तो उनके प्रति कृतज्ञ भाव रहना ही चाहिए, लेकिन रागभाव से बँधना नहीं चाहिए। 3. वीतरागता की साधना में तीन बाधक तत्त्व हैं-(अ) व्यक्तिराग (ब) लोकैषणा और (स) अहंकार। 4. अरिहन्त-सिद्ध की शरण ही सच्ची शरण है, अन्य रूढ़ियों पर चलने की आवश्यकता नहीं है। 5. स्वाध्यायी भी विरतिमय जीवन का अभ्यास करें। 6. निर्व्यसनतापूर्वक सामायिक की साधना करें। 7. वैयावृत्त्य अग्लानभाव से किया जाए।

15. संघ एवं संघ की संस्थाओं के पदाधिकारी संघसेवा में संलग्न हैं। पूज्य आचार्यप्रवर के अनुसार पदाधिकारी का जीवन प्रामाणिक होना चाहिए, कथनी-करनी में एकरूपता होनी चाहिए, उसे निर्व्यसनी, रात्रिभोजन त्यागी, शाकाहारी एवं सद्प्रवृत्तियों से युक्त होना चाहिए तथा साधु-साध्वियों की ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि में सहायक होना चाहिए। परस्पर सौहार्द, सामञ्जस्य एवं अच्छे सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आए, इस हेतु सहनशीलता का विकास अपेक्षित है। व्यक्ति में संघ के प्रति समर्पण होगा तो संघ सदैव गतिमान रहेगा। कार्यकर्त्ता के सम्बन्ध में आचार्यप्रवर का चिन्तन है-संघ वक्ताओं से नहीं कार्यकर्त्ताओं से चलता है। कार्यकर्त्ता में पाँच गुण आवश्यक हैं-1. समर्पण, 2. समन्वय, 3. सम्यग्दृष्टिकोण, 4. सक्षमता, 5. सहनशीलता। कार्यकर्त्ता किसी कार्य को छोटा नहीं समझे और अपने आपको कभी बड़ा मानकर नहीं चले।

इस प्रकार रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर की संघनायकता अप्रतिम है। वे समस्त जैनाचार्यों में चमकते सितारे हैं, स्थानकवासी परम्परा में ज्येष्ठ हैं। सुज्ञता, विनीतता, दूरदर्शिता, अनुशासनप्रियता, संयमनिष्ठा, आचारनिष्ठा आदि अनेक गुणों के आप पुञ्ज हैं। आपकी संघनायकता इतिहास में एक मिशाल है। सम्प्रति आप अधिकांश समय ध्यान-मौन के साथ आत्म-साधना में ही लगाते हैं। आपकी कुशल संघनायकता के 30 वर्ष पूर्ण होने पर शतशः वन्दन।

■

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 11
ISSN 2249-2011

विचार-वारिधि

गुणियों के गुणों का कीर्तन

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- धर्म एकान्त मंगलमय है। वह आत्मा, समाज, देश तथा अखिल विश्व का कल्याणकर्त्ता और त्राता है। आवश्यकता इस बात की है कि जनता के मानस में धर्म और नीति के प्रति आस्था उत्पन्न की जाए।
- जो शासन धर्मनिरपेक्ष नहीं, धर्मसापेक्ष होगा वही प्रजा के जीवन में निर्मल, उदात्त और पवित्र भावनाएँ जागृत कर सकेगा।
- प्रत्येक साधनापरायण व्यक्ति को चार बातें ध्यान में रखनी चाहिये-(1) स्थिर आसन (2) स्थिर दृष्टि (3) मित भाषण और (4) सद्विचार में निरन्तर रमणता। इन चार बातों पर ध्यान रखने वाला लोक-परलोक में लाभ का भागी होता है।
- जिसके मन में संयमी होने का प्रदर्शन करने की भावना नहीं है, वरन् जो आत्मा के उत्थान के लिए संयम का पालन करता है,वह संयम में आयी हुई मलिनता को क्षण भर भी सहन नहीं करेगा।
- व्रती पुरुष कुटुम्ब, समाज तथा देश में भी शान्ति का आदर्श उपस्थित कर सकता है और स्वयं भी अपूर्व शान्ति का उपभोक्ता बन जाता है।
- परस्पर सापेक्ष सभी गुणों की यथावत् आयोजना करने वाला ही अपने जीवन को ऊँचा उठाने में समर्थ हो सकता है।
- ज्ञानावरण का क्षयोपशम कितना ही हो जाय, यदि मिथ्यात्व मोह का उदय हुआ तो वह ज्ञान मोक्ष की दृष्टि से कुज्ञान ही रहेगा।
- अनुभव जगाकर अपने ज्ञान-बल से भी बहुत से व्यक्ति वस्तुतत्त्व का बोध प्राप्त कर सकते हैं, पर इस प्रकार बोध प्राप्त करने के अधिकारी कोई विशिष्ट व्यक्ति ही होते हैं। निसर्ग से ज्ञान उत्पन्न होने की स्थिति में इधर उपादान से सिद्धि की ओर जोर लगाया तो निमित्त गौण रहा, उपादान प्रधान रहा। दूसरी ओर अधिगम आदि निमित्त के माध्यम से ज्ञान उत्पन्न होने की दशा में निमित्त प्रधान रहता है और उपादान गौण। प्रत्येक कार्य की निष्पत्ति में उपादान और निमित्त ये दोनों ही कारण चलते हैं।
- पाँचों व्रतों का यथाशक्ति आगार के साथ पालन, भोगोपभोग का परिमाण, अनर्थदण्ड से बचना आदि पाप को घटाने के साधन हैं।
- विनय तप के अहर्निश आराधन से, साधारण से साधारण साधक भी गुरुजनों का अनन्य प्रीतिपात्र या कृपापात्र बनकर अन्ततोगत्वा सर्वगुण सम्पन्न हो, ज्ञान का भण्डार और महान् साधक बन जाता है।
- जैसे बिना पाल के तालाब में पानी नहीं ठहरता वैसे ही बिना व्रत के जीवन में सद्गुणों का पानी समाविष्ट नहीं हो सकता, अत: श्रावक अपने व्रत की पाल अवश्य बाँधे।
- जीव दो प्रकार के होते हैं-एक भवमार्गी और दूसरे शिवमार्गी। विश्वभर में अनन्तानन्त प्राणी भवमार्ग का अनुगमन कर रहे हैं। उनकी कोई गुण-गाथा नहीं गायी जाती। उनका उल्लेख कहीं नहीं होता। उनका कोई पता नहीं होता कि किधर से आये और किधर गये। दूसरी ओर शिवमार्गी वे जीव हैं, जो संख्या में असंख्य नज़र नहीं आते, किन्तु शास्त्रों में, सत्साहित्य में उन्हीं की गुण-गाथा गायी हुई है।
- गुणियों के गुणों का कीर्तन प्रभावना का कारण है, पर साधक को प्रशंसा सुनकर खुश नहीं होना चाहिए। यही समझना चाहिये कि इसने प्रेमवश मेरे गुण देखे हैं, इसको मेरे दोषों का क्या पता? मुझे अपने दोषों को निकाल कर इसके विश्वास पर खरा उतरना है, ताकि उसे धोखा न हो।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 12
ISSN 2249-2011

प्रवचन

आचार्यश्री हमीरमलजी महाराज का प्रेरणादायी जीवन

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के द्वारा सुराणा मार्केट स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन, पाली में रत्नसंघ के तृतीय पट्टधर आचार्यश्री हमीरमलजी म.सा. के त्याग-वैराग्य का विवेचन करते हुए उस महापुरुष की मौलिक विशेषताओं पर 24 अक्टूबर, 2010 को फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। **-सम्पादक**

अष्टकर्मों का अन्त कर अविचल-अविनाशी पद पाने वाले सिद्ध भगवन्त, घनघाती कर्मों को क्षयकर सर्वज्ञ-सर्वदर्शी बनने वाले अरिहन्त भगवन्त और कर्म काटने के लिए पापों का परित्याग कर महाव्रत-समिति-गुप्ति की आराधना करने वाले सन्त-भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थङ्कर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में अभी आप त्याग का महत्त्व सुन रहे हैं। भूतकाल में त्याग का महत्त्व था, आज है और आगे भी रहेगा। हम कितना त्याग कर पाते हैं, यह अलग बात है, पर त्याग-धर्म की महिमा थी और सदा रहेगी। आज एक त्यागी का स्मरण-चिन्तन करने का दिन है। नवकोटि मारवाड़ के नगीना नगर नागौर में गाँधी नगराज जी के यहाँ विक्रम सम्वत् 1952 में एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ। पुत्र का नाम हमीरमल रखा गया। बचपन बीतते-बीतते पिताश्री का स्वर्ग-गमन हो गया, मातुश्री ने नागौर छोड़कर पीहर पीपाड़ में रहना प्रारम्भ किया।

पीपाड़ पुण्य भूमि है जहाँ सन्त-सतीवृन्द का प्राय: आना-जाना बना रहता है। सन्त-सतीवृन्द उपदेश के माध्यम से जीवन-निर्माण का सन्देश देते हैं। संसार का वर्जन और पापों को विसर्जित करने की प्रेरणा देने वाली महासती श्री बिरजूजी महाराज आदि ठाणा का पीपाड़ में समागम प्राप्त हुआ और माँ-बेटे को वैराग्य का रंग लग गया। जैसे भोजन देखने पर भूख जगती है, महल देखने पर बंगला बनाने की भावना होती है, पैसे वालों को देखकर पैसा बढ़ाने की धुन में आती है, इसी तरह धर्मात्मा-त्यागी-वैरागी का सङ्ग पाकर त्याग-वैराग्य की भावना जगना स्वाभाविक है। वैराग्य की भावना जगने में दु:ख भी एक कारण है। शास्त्रकार कहते हैं-दु:ख को दु:ख नहीं समझें। क्यों? तो कहा-दु:ख तो सुख की खान है। कभी व्यक्ति दु:ख पाकर आगे प्रगति-उन्नति की तरफ बढ़ता है, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता।

महासती की सेवा-सन्निधि के सुयोग से माँ की वैराग्य-भावना तो जगी ही, वैराग्य का पक्का रंग लग गया। महासती जी महाराज के श्री चरणों में माँ ने चारित्र-धर्म में प्रवेश करने की भावना रखी। पुत्र में भी कल्याणकारी मार्ग का पथिक बनने की सोच आई। महासती श्री बिरजूजी महाराज ने परामर्श दिया कि आप पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. की सेवा में अपनी भावना रखें। माँ बेटे को साथ लेकर बर के पास एक गाँव जिसे लोग मेले वाला बिरांटिया कहते हैं, पहुँची और पहुँच कर अपनी भावना पूज्यश्री के चरणों में निवेदन की। माँ-बेटे की भावना जान-समझ कर पूज्यश्री ने विक्रम सम्वत् 1862 की फाल्गुन कृष्णा सप्तमी का दिन दीक्षा के लिए उपयुक्त बताया। माँ-बेटे की दीक्षा हुई और मातुश्री को महासती श्री बिरजूजी महाराज के पास और बालक हमीरमल को अपने नेश्राय में रखा।

दीक्षा लेकर बाल मुनि ने विद्याध्ययन प्रारम्भ किया। पूज्य गुरुदेव की कृपा से एवं बालमुनि के सत्पुरुषार्थ से नवदीक्षित मुनि ने अपनी प्रज्ञा-प्रतिभा-विनय और श्रम से शास्त्रों का अभ्यास किया। बाल मुनि ने संस्कृत-प्राकृत का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। ज्ञान के साथ तपश्चर्या में भी बालमुनि ने पुरुषार्थ किया। चार वर्ष तक निरन्तर एकान्तर तप के साथ चारों विगयों के त्याग के साथ केवल दस द्रव्यों की मर्यादा रखी। एक

चद्दर-एक आसन से अधिक वस्त्रों का उपयोग नहीं करने का संकल्प लिया, चाहे कितनी ही सर्दी क्यों न हो।

आप शरीर का जितना ध्यान रखते हैं उतना कर्म-काटने वाली साधना का ध्यान कहाँ रखते हैं? सङ्ग से रंग आता है। यह रंग दु:ख में अधिक उभरता है। दु:ख देखा हुआ व्यक्ति जीवन में फूँक-फूँक कर चलता है, क़दम-क़दम पर सावधानी रखता है। जो केवल ऐशो-आराम में रहते हैं उनमें से कई दर-दर की ठोकरें भी खाते हैं।

नव-दीक्षित मुनि श्री हमीरमलजी महाराज ने दीक्षा लेने के साथ तप किया और ज्ञानार्जन भी किया। पूर्व की पुण्यवानी तो थी ही, पुरुषार्थ से वे आगे चलकर विशिष्ट साधक बन गये। उन्होंने अर्थ सहित शास्त्र और टब्बे लिखे। उनके अक्षर बहुत सुन्दर थे। अध्ययन के साथ उस महापुरुष ने सेवा-कार्य को भी प्रधानता दी।

पुराने दोहों में एक बड़ा शिक्षाप्रद दोहा है-

"काम दहन क्रिया करे, गुरु से राखे द्वेष।
फले न फूले माधवा, करणी करो विशेष।।"

सब-कुछ करके भी यदि बड़ों का मन नहीं जीता तो मानना चाहिए कि उसने कुछ नहीं किया। योग्य शिष्य को देखकर गुरु प्रसन्न होता ही है। जब तक पूज्य गुरुदेव श्री रत्नचन्द्रजी महाराज जीवित रहे तब तक उस महापुरुष ने एक भी चातुर्मास अलग नहीं किया। उनकी योग्यता-क्षमता-पात्रता, सेवा-भक्ति और गुरु-चरणों में समर्पण के कारण वे जीवन भर गुरु से अलग नहीं हुए। गुरुदेव के स्वर्ग-गमन पश्चात् पूज्य श्री हमीरमलजी महाराज ने मार्मिक प्रवचनों से ऐसा रंग जमाया कि प्रज्ञाचक्षु विनयचन्दजी कुम्भट जिन्होंने विनयचन्द्र चौबीसी की रचना की, वह चौबीसी आज कई सन्त प्रवचन के प्रारम्भ में बोलते हैं। यहाँ मैं चन्द पंक्तियाँ रखकर केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि प्रज्ञाचक्षु श्री विनयचन्दजी कुम्भट के शुद्ध हृदय में गुरु-भक्ति के बीज अंकुरित हो गये थे, इसीलिए चौबीसी के भजनों में सार-सार भरा है। उनकी नेत्र-ज्योति भले नहीं थी, लेकिन कविवर द्वारा सुन-सुनकर भावों को हृदय में जगाते-जमाते काव्य-रचना होती रही। आज कई आचार्य और सन्त-मुनिराज विनयचन्द चौबीसी के भजन से प्रवचन का शुभारम्भ करते हैं और रचनाओं का हार्द समझाते हैं।

आचार्य श्री हमीरमल जी महाराज की गुरु-चरण सेवा में श्रद्धा-भक्ति और आस्था थी। समय सार नाटक का एक पद पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी महाराज बोलते तो दूसरा पद पूज्य श्री हमीरमलजी महाराज कहते।

आपका यह पाली क्षेत्र उस समय भी सौभाग्यशाली था, आज भी है। इस क्षेत्र में पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी महाराज, पूज्य श्री दुर्गादासजी महाराज, पूज्य श्री हमीरमलजी महाराज ने पाली शहर में अनेकानेक चातुर्मास किए। क्षेत्र में विचरण-विहार तो प्राय: सभी जगह होता है, लेकिन सात-आठ और दस-ग्यारह चातुर्मास का सुयोग तब मिलता है जब क्षेत्र के निवासियों की श्रद्धा-भक्ति हो।

आपका यह शहर आज से नहीं, सदा से भाग्यशाली रहा है। इस धर्म-धरा पर अनेकानेक महान् आचार्यों-सन्तों ने चातुर्मास किए, शेखेकाल विराजे और विचरण-विहार कर अपनी पद-रज से क्षेत्र को पावन किया, आज भी पाली की पुण्यवानी गाई जाती है। इस पाली शहर में कई दीक्षाएँ भी हुई हैं। सामायिक-स्वाध्याय और संवर-साधना में क्षेत्र सदा से अग्रणी रहा है। जैसे हरे-भरे खेतों में लहलहाती फसल देखकर कहा जा सकता है कि यहाँ अच्छी वर्षा हुई है ऐसे ही आप लोगों का धर्म-साधना में उत्साह देखकर अनुमान होता है कि यह क्षेत्र चातुर्मास के योग्य है।

आप ज्ञान-ध्यान में, त्याग-तप में, साधना-आराधना में और व्रत-नियमों में आगे बढ़ें। पूज्य आचार्य श्री हमीरमल जी महाराज ने विक्रम सम्वत् 2010 की आश्विन शुक्ला चतुर्दशी को उपवास करके पूर्णिमा के दिन पारणक किया। शारीरिक पीड़ा अधिक

होने से पूज्य श्री ने सब जीवों से क्षमायाचना कर बीस प्रहर का सागारी संथारा किया। आज ही के दिन कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा को पूज्य आचार्य श्री हमीरमलजी महाराज ने समाधि-मरण प्राप्त कर नश्वर देह का त्याग किया।

आप परम गुरु-भक्त, विनय-मूर्ति, विशिष्ट साधक, बाल ब्रह्मचारी पूज्य आचार्यश्री हमीरमल जी म.सा. के जीवन से त्याग-तप में, ज्ञानाराधन में, साधना-आराधना में समय का उपयोग करके आपका अन्त समय भी समाधि में बीते, इसका ध्यान रखें। जन्म सुधारने वाला मरण सुधार लेता है, इस दिन में आप प्रगति करें इसी मंगल भावना के साथ ....

संसार की अधिकांश समस्याओं की जड़ हमारी वाणी

श्री जसराज देवड़ा

अपने मन की अभिव्यक्ति प्रकट करने के लिए हमें बोलने की शक्ति प्राप्त है। यह हमारी योग्यता पर निर्भर करता है हम इसका सदुपयोग करते हैं या दुरुपयोग।

बोलना भी एक कला है। जीवन में शान्ति-अशान्ति में जबान की अहम भूमिका होती है। हमें किसी को कितना, कब और कैसे कहना, इस विषय पर गहरा चिन्तन करना चाहिये। कड़वी, अप्रिय बात भी सामने वाले क़ो मधुर और सरल शब्दों से कही जा सकती है। संघ संस्थाओं में कई बार कुछ मुद्दे ऐसे आ जाते हैं, जब आपकी राय अन्य को नहीं मान्य होती है, परन्तु आप ऐसे समय हठाग्रही बन जाते हैं। समाज का अन्य कोई व्यक्ति आपको इस विषय में कुछ अन्य सुझाव देना चाहता है, परन्तु आप उसको बोलने का भी अवसर नही देते हैं, विद्वान जनों का कहना है कि एक दूसरे को समझने का प्रयत्न बहुत कठिन काम है, उसमें अंहकार बाधक बनता है, कोई मुझे क्यों कहे?

अशान्ति के बीज की शुरुआत कहाँ से हुई, अगर व्यक्ति उसका आत्म-शोधन कर ले तो वहीं अशान्ति समाप्त हो जायेगी।

संसार में दूसरे की सीख, चेतावनी आदि का सम्यक् ग्रहण बहुत कठिन है, क्योंकि हमारी ग्रहण-शक्ति में धैर्य नहीं है, कभी-कभी कहीं देखने को मिलता है कि किसी एक पक्ष के एक वाक्य कहने मात्र से ही झगड़ा शुरू हो जाता है। सामने वाले को अपनी बात रखने का मौका ही नही मिलता है।

ज्ञानी जन कहते हैं-विनम्रता और शान्ति का गहरा सम्बन्ध है। अक्सर यह भ्रान्ति है कि छोटे-बड़ों को सीख, सलाह नहीं दे सकते हैं, परन्तु यह सोच भी सही नहीं है; कारण कि गलती, भूल, त्रुटि आदि बड़ों से भी हो सकती है।

बात करने की कला से ही शान्तिपूर्ण सहवास हो सकता है। सहिष्णुता, धैर्य, विनय, प्रतिकूल बात सुनने की शक्ति, सम्यक् ग्रहण-शक्ति आदि अच्छा जीवन जीने की कला में इन गुणों का समावेश होना अत्यन्त आवश्यक होता है।

बात कैसे कहें, कब कहें, कितना कहें इसका विवेचन जैनधर्म के दशवैकालिकसूत्र के 7वें और 9वें अध्याय में तथा उत्तराध्ययनसूत्र के पहले अध्याय में मिलता है। आचार्य महाप्रज्ञजी ने एक बार प्रवचन के माध्यम से कहा था कि दूसरे सब कामों से बच्चे, बड़े और महिलाएँ थक सकती हैं, परन्तु बातें करते-करते नहीं थकते हैं चाहे काम और बगैर काम की कितनी भी बातें करा लो।

वचन का नियम है-'पहले तोलो और फिर बोलो।' जीवन में वाणी का संयम अत्यन्त आवश्यक होता है 'अन्धे के बेटे अन्धे ही होते हैं' ऐसी कटु बात द्रौपदी के द्वारा कहने से महाभारत का युद्ध हो गया था।

-काचीगुड़ा हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 15
ISSN 2249-2011

प्रवचन

गौरवशाली संघ-दीप्ति में सजग बनें

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट, पाली में 29 सितम्बर, 2019 को फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

आदि का अन्त कर अभयदयाणं-पद को अलंकृत करने वाले, व्याधि का वमन कर वीतरागता का वरण करने वाले, उपाधि का उपमर्दन कर स्व-स्वरूप में सञ्चरण करने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्तों को वन्दन!

आत्मगुणों से मण्डित, शील-सुरभि से सुरभित भक्तों के द्वारा भगवान के रूप में चर्चित, गुरु हस्ती के द्वारा तृतीय पद पर अधिष्ठित, मम मन्दिर में प्रतिष्ठित अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त को नमन!

बन्धुओं!

जयवन्त जिनशासन में जिसे प्रवेश मिल जाता है वह स्वयं जिन बन सकता है। वह तीर्थङ्कर प्रभु के द्वारा प्ररूपित तीर्थ में सम्मिलित हो जाता है। वह स्वयं तो तिरता है, औरों को तारने में भी सहायक बन जाता है। अरिहन्त भगवन्तों के द्वारा स्थापित संघ में जिसे स्थान मिल गया तो समझिये वह स्वयं सिद्ध बन सकता है।

संघ का सुरक्षा-कवच होता है-धर्म संघ। आप सब धर्म-संघ के सदस्य हैं। गौरवशाली रत्नसंघ के आप सदस्य हैं। आपको संघ में साधना का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। आचार्यश्री हस्ती के शब्दों में कहें, तो कहना होगा-संघ सदस्यों को संघ का गौरव अक्षुण्ण तो रखना ही है, गौरव-गरिमा को बढ़ाते भी रहना है।

जहाँ ज्ञान-क्रिया और दृढ़ श्रद्धा की
बहती निर्मल धारा वह पावन संघ हमारा।।

हम भाग्यशाली हैं। हमें वह धर्म-संघ मिला है जहाँ आचार और विचार की प्रधानता रही है। आचार की निर्मलता और विचारों की पवित्रता से जो प्रचार होता है वह अखबार, पत्र-पत्रिकाओं, वाट्स-एप्प से नहीं हो सकता। हमारा संघ प्रचार-प्रधान नहीं, आचार-विचार प्रधान संघ है। किसी की जेब में कस्तूरी हो तो उसे कहने की जरूरत नहीं पड़ती कि मेरे पास कस्तूरी है। कस्तूरी की सुगन्ध स्वत: चहुँओर महकती है। जहाँ आचार-विचार की शुद्धता होती है वहाँ स्वत: प्रचार होता ही है।

आज गुणी अभिनन्दन और सम्मान-समारोह का दिन है। मुनिराज (श्री योगेश मुनि जी महाराज) ने ठीक ही कहा-'हम स्वयं गुणी बनें। आप गुणी बनेंगे तो संघ का गौरव अक्षुण्ण बना रहेगा, संघ की दीप्ति दिनों-दिन बढ़ती जाएगी।

पूर्वाचार्यों ने जिस संघ को सींचा है उसे आचार्य श्री हीरा पल्लवित-पुष्पित-फलित कर रहे हैं। आप गौरवशाली संघ का विकास करना चाहते हैं तो आपको चाहिए कि आप संघनायक से जुड़ जायें। संघनायक से जुड़ने पर आपमें अपने-आप शक्ति आ जाएगी।

एक उदाहरण है, जिसे आपको समझना होगा। एक टोकरी में दो आम अलग-अलग रखे हुए हैं। वे आम जैसे हैं, वैसे ही रहेंगे जब कि वृक्ष पर लगे आम पुष्पित-फलित होते जाएँगे।

संघ जड़ से सुरक्षित है तो वह खिलता जाएगा। संघ में प्रतिभावान सदस्य चाहिए, होशियार सदस्य चाहिए पर डेढ़ होशियार नहीं चाहिए। आप यदि मूल से जुड़े रहेंगे तो फल-फूल आते रहेंगे। आप कई बार कहते तो हैं-'एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।' इसे करके देखें। आवश्यकता है संघ का प्रत्येक सदस्य न तो किसी की निंदा करे और न ही आलोचना। एक-दूसरे की टाँग खिंचाई होने पर विकास अवरुद्ध हो जाएगा।

आज निंदा-आलोचना करने वाले बहुत हैं। आप

नारे तो लगाते हैं, जोर-जोर से बोलते भी हैं- 'हम सब हैं भाई-भाई, हममें न हो तनिक जुदाई।' मात्र नारों से संघ का विकास नहीं होता। विकास तो तभी सम्भव है जब आप तन से भले ही अलग-अलग हैं, पर मन से एक रहें। संघ में विचार-भेद तो हो सकता है, मन-भेद नहीं होना चाहिए।

आप-सब गौरवशाली धर्म-संघ के सदस्य हैं, परस्पर में गुरु भाई हैं इसलिए एक-दूसरे के प्रति आत्मीयता का भाव जगना चाहिए। संघ के हर सदस्य के प्रति अपनत्व का भाव हो। आपने गुरु हस्ती-गुरु हीरा का जीवन-व्यवहार देखा है। गुरु हस्ती के शब्दों में कहूँ-

निर्व्यसनी हो, प्रामाणिक हो,
धोखा न किसी जन के सङ्ग हो।
संसार में पूजा पाना हो तो,
सामायिक साधन कर लो।
जीवन उन्नत करना चाहो तो
सामायिक साधन कर लो।

गुरु हस्ती ने अनमोल सूत्र दिए हैं। संघ का हर सदस्य निर्व्यसनी हो और प्रामाणिक हो।

आप गुरु हीरा का आह्वान भी गुन-गुनाते हैं-

'गुरु हीरा का है आह्वान, निर्व्यसनी हो हर इन्सान।'

आप घर सुधारने के पहले अपने-आपको सुधारें। आप में सुधारने की कितनी ललक है?

आप चाहे युवक हैं, बाल हैं, वृद्ध हैं, किसी में कोई व्यसन नहीं होना चाहिए। रत्न संघ में अधिकतर सदस्य निर्व्यसनी हैं, पर जो कोई भी व्यसनी हैं वे व्यसन-त्याग करके अपने जीवन को निर्व्यसनी बनाएँ।

निर्व्यसनता के साथ प्रामाणिकता भी हो। प्रामाणिक कौन? प्रामाणिक वह होता है जो संघ की रीति-नीति से चलता है, संघ की मर्यादा और समाचारी को ध्यान में रखकर आचरण करता है। संघ में प्रीति-प्रेम और वात्सल्यभाव होगा तो प्रामाणिकता बनी रहेगी। आप-सब संघ की आचार-संहिता का पालन करें। आचार-संहिता हम सन्तों के लिए ही नहीं, आप श्रावकों के लिए भी है।

रत्नसंघ की स्थापना को पैंतालीस साल हो जाएँगे। ब्यावर में रत्नसंघ की स्थापना हुई।

आप संघ की रीति-नीति पर चलें। रीति-नीति से हटकर कोई भी काम करेंगे तो संघ की बदनामी होगी। आप संघ के सदस्य हैं, आपका अपना कार्यक्रम है, संघ के कार्यक्रम संघ वाले करें, पर आप क्या करते हैं? वहाँ ऐसा हो गया, वैसा नहीं करना चाहिए, इधर-उधर की बातें संघनायक को आकर कहेंगे तो उनकी साधना में विक्षेप के भागी होंगे। संघ का हर सदस्य प्रीति से रहे और नीति से चले तो किसी को किसी के प्रति शिकायत नहीं होगी।

आप संघ द्वारा प्रदत्त कार्य को करें, यदि उन कार्यों को नहीं करते हैं तो आपका वह आचरण संघ के साथ धोखा है। आज पदों का सर्जन दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। क्यों, तो सबको पद चाहिए। पद की भूख किसे नहीं है? आप योग्य बनें तो पद बिना माँगे मिलेगा। योग्य को पद न भी न मिले तो कोई खतरा नहीं है और अयोग्य को पद दे दिया जाएगा तो पग-पग पर खतरा है। आप चाहे अध्यक्ष हैं या कार्याध्यक्ष, महामन्त्री हैं या मन्त्री आप-सब अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करें और संघ के विकास के लिए संघनायक से जुड जाएँ तो आपकी उन्नति कोई रोक नहीं सकेगा।

आपको पूर्वाचार्यों के आदर्श को ध्यान में रखना है। आप भजन में बोलते भी हैं-

निन्दा-विकथा न हो पर घर की
जय बोलो रत्न मुनीश्वर की।।

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज के समक्ष कोई निन्दा-विकथा करता तो वे तुरन्त दया पालने का कह देते। गुरु हस्ती ने जीवन को निर्व्यसनी और प्रामाणिक बनाने की सीख दी है। गुरु हीरा ने निर्व्यसनता का आह्वान किया है। आप पूर्वाचार्यों की उज्ज्वल-धवल परम्परा का अनुसरण करें और संघ-सेवा में समर्पित रहें तो संघ का उत्तरोत्तर विकास होता रहेगा।

■

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 17
ISSN 2249-2011

प्रवचनांश

सम्यग्दर्शन की विशेषताएँ

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. द्वारा सवाईमाधोपुर चातुर्मास 2020 में समय-समय पर अपने प्रवचनों में सम्यग्दर्शन पर की गई चर्चाओं का संकलन श्री त्रिलोकचन्दजी जैन ने किया है। -सम्पादक

साधक, साधना का अवलम्बन लेकर साध्य की प्राप्ति करता है। साध्य की प्राप्ति में साधना की नींव सम्यग्दर्शन है। समस्त साधनाओं की आधारशिला सम्यग्दर्शन है। सम्यग्दर्शन अङ्क है और सम्यग्दर्शन के बिना साधनाएँ शून्य के समान हैं। शून्य के आगे अङ्क लगने से ही संख्या बनती है, उसी प्रकार सम्यग्दर्शन पूर्वक की गई साधनाएँ ही साध्य तक पहुँचाती हैं। सम्यग्दर्शन आत्म-भाव में घटने वाली अद्‌भुत घटना है। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के बाद ही अनादि संसार में अनन्त जन्म-मरण का अवसान माना जाता है और भविष्य में होने वाले भवों की गणना होती है। सम्यग्दर्शन मोक्ष प्राप्ति का प्रमाण पत्र है।

परिभाषा

व्यवहार दृष्टि से सुदेव, सुगुरु और सुधर्म पर अविचल-यथार्थ श्रद्धा करना सम्यग्दर्शन है। निश्चय दृष्टि से अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ एवं मिथ्यात्व, मिश्र और समकित मोहनीय, इन सात कर्म प्रकृतियों के क्षय, क्षयोपशम, उपशमादि से उत्पन्न होने वाले आत्मा के परिणाम को सम्यग्दर्शन कहते हैं।

योग्यता

शुक्ल पक्षी, भवी, संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव ही सम्यग्दर्शन की प्राप्ति की योग्यता रखता है।

प्राप्ति

नरक गति में वेदना से, तिर्यञ्चगति में जाति-स्मरण ज्ञान से, मनुष्यगति में गुरु उपदेश, सुपात्रदान आदि से और देवगति में प्रभु-भक्ति से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है।

उदाहरण

(1) नाव नदी में रहती है, पर नदी में डूबती नहीं है। वैसे ही सम्यग्दर्शनी संसार में रहता है, पर संसार में डूबता नहीं है।

(2) कमल कीचड़ में उत्पन्न होता है, पर कीचड़ से निर्लिप्त रहता है। वैसे ही सम्यग्दर्शनी संसार में उत्पन्न होता है, पर संसार से निर्लिप्त रहता है।

(3) साँप अपनी केञ्चुली को छोड़ने पर पीछे मुड़कर नहीं देखता। वैसे ही सम्यग्दर्शनी संसार की ओर पीछे मुड़कर नहीं देखता है।

(4) धाय माता शिशु का लालन-पालन करती है, पर उससे ममता का भाव नहीं रखती। वैसे ही सम्यग्दर्शनी संसार में कर्त्तव्यपूर्ति करता है, पर ममत्व भाव नहीं रखता।

(5) मुनीमजी अथवा बैंक केशियर लाखों रुपयों का लेन-देन करते हैं, पर उन रुपयों को अपना नहीं मानते। वैसे ही सम्यग्दर्शनी संसार में रहकर भी संसार को अपना नहीं मानता है।

(6) अभिनेता किसी भी नाटक में अभिनय करके उस किरदार को जीवन्त करके निभाता है, पर भीतर में स्वयं जानता है कि मैं किरदार से अलग हूँ, वैसे ही सम्यग्दर्शनी गृहस्थ जीवन का पालन पूर्ण निष्ठा से करता है, पर वह जानता है कि मेरा स्वयं का अपनी आत्मा के प्रति कर्तव्य अलग है।

(7) गृहिणी रोटी को उचित रीति से सेक भी लेती है और रोटी को जलने भी नहीं देती है, वैसे ही सम्यग्दर्शनी परिवार का पालन भी कर लेता है और उसमें रचता-पचता भी नहीं है।

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के समय होने वाले लाभ

1. जीव के भीतर में अपूर्व उल्लास की धारा प्रकट होती है।
2. पुण्य प्रकृतियों के अनुभाग को चतु:स्थानिक और पाप प्रकृतियों के अनुभाग को द्विस्थानिक करता है।
3. सभी कर्म प्रकृतियों की सत्ता अन्त:कोटाकोटि के अन्दर कर देता है।
4. सभी कर्म प्रकृतियों का बन्ध भी अन्त:कोटाकोटि के अन्दर कर देता है।
5. अनादिकालीन अनन्तानुबन्धी कषाय रूपी दुर्भेद्य ग्रन्थि का भेदन कर देता है।
6. जीव विकास की 11 श्रेणियों में प्रथम श्रेणि का प्रारम्भ कर देता है।
7. ध्रुवबन्धी को छोड़कर अप्रमत्त गुणस्थान तक बन्धने वाली सभी अशुभ प्रकृतियों को नहीं बाँधता है।
8. प्रति समय अनन्तगुणी विशुद्धि और असंख्यातगुणी निर्जरा होती है।
9. जीव का संसार सीमित हो जाता है अर्थात् उसकी संज्ञा परीत संसारी हो जाती है।
10. जीव के सकाम निर्जरा का प्रारम्भ होता है।

सम्यग्दर्शन अवस्था में व्यावहारिक लाभ

1. संसार में अमूढ़ रहता है। (सम्मदंसी सया अमूढे)
2. पाप क्रिया करने के लिए तत्पर नहीं होता है। (सम्मत्तदंसी न करेइ पावं)
3. सरल और ऋजु (अमायी) होता है। (आलोयणाए णं माया-नियाण-मिच्छादंसण-सल्लाणं मोक्ख-मग्ग-विग्घाणं अणंत-संसार-वद्धणाणं उद्धरणं करेइ। उज्जुभावं च जणयइ।)
4. पर-निन्दा नहीं करता है। (परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य।)
5. आत्म-प्रशंसा नहीं करता है।
6. लक्ष्य संवर साधना की ओर रहता है।
7. संसार को जन्म-मरण की परम्परा मानता है।
8. वास्तविकता में जीता है।
9. पुण्य कार्यों को उपादेय मानता है।
10. जड़ और चेतन के भेद विज्ञान का ज्ञाता होता है।

सम्यग्दर्शन अवस्था में आन्तरिक लाभ

1. सम्यग्दर्शन की प्राप्ति मोक्ष की गारण्टी देती है।
2. सम्यग्दर्शन के रहते नरक, तिर्यञ्च, भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद का बन्ध नहीं होता है।
3. सर्वोत्कृष्ट पुण्य प्रकृति तीर्थङ्कर नामकर्म के बन्ध करने की योग्यता प्राप्त हो जाती है।
4. सम्यग्दर्शन से ही ज्ञान सम्यग्ज्ञान तथा चारित्र सम्यक् चारित्र के रूप में प्रकट हो जाता है।
5. अनागत के शेष संसार में आयु कर्म को छोड़कर शेष 7 कर्मों की स्थिति अन्त: कोटाकोटि से ज्यादा नहीं बाँधता है।
6. सम्यग्दर्शन अवस्था में परभव की आयुष्य बन्ध हो जावे तो 15 भव के भीतर मोक्ष की प्राप्ति होती है।
7. सम्यग्दर्शन अवस्था में आयु बन्ध होवे तो मनुष्य और वैमानिक को छोड़कर शेष 22 दण्ड़कों में जाने का निषेध हो जाता है।
8. अनन्तानुबन्धी कषाय का विपाकोदय निष्प्रभावी होकर प्रदेशोदय हो जाता है।
9. अनादि काल से बन्धने वाली 41 कर्म प्रकृतियों का बन्ध-विच्छेद हो जाता है।

-पूर्व प्रधानाचार्य, महावीर नगर, मण्डी रोड़, सवाईमाधोपुर (राज.)

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 19
ISSN 2249-2011

प्रवचन

शुभयोग एवं पुण्य कहीं हेय नहीं

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा जोधपुर में वर्ष 2019 के चातुर्मास में 'सुपुण्यशाली की होती धर्म में मति' विषय से सम्बद्ध अनेक प्रवचन फरमाए गए थे। उनमें से इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर द्वारा किया गया है। **-सम्पादक**

शुभयोग की उपादेयता प्रकट करने वाले अनन्त अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और अधिकतम शुभयोग में रहने का प्रयास करने वाले आचार्य भगवन्त एवं उपाध्याय भगवन्तों के चरणों में वन्दना करने के पश्चात्-

वन्दना! उत्कृष्ट वन्दना में इच्छामि खमासमणो के पाठ में गुरु भगवन्तों की वन्दना करते हुए श्रद्धा से बोलते हैं-'अप्पकिलंताणं बहुसुभेणं भे दिवसो वइक्कंतो।'

गुरु भगवन्तों का अधिकतम समय शुभ में बीतता है। यहाँ शुभ से क्या अभिप्राय है? 'अपनी परम्परा' पुस्तक में आचार्य श्री उमेशमुनिजी म.सा. ने वर्तमान में जिनेन्द्र भगवान को मानने वालों के आठ प्रकार कहे हैं-

(अ) श्वेताम्बर-1. स्थानकवासी 2. तेरापन्थी 3. मूर्तिपूजक।

(ब) दिगम्बर-1. बीसपन्थी 2. तेरहपन्थी 3. तारणपन्थी।

(स) अन्य-1. कवि पन्थ (श्रीमद् रायचन्द्र) 2. कान पन्थ (निश्चयनयानुसारी चिन्तन)। (सन्दर्भ अपनी परम्परा भाग 1 पृष्ठ 5, 6)

इन सबकी अपनी अपनी परम्पराएँ हैं, कतिपय मूर्ति को पूजते हैं, कोई-कोई अपने आराध्य साधकों की फोटो को पूजते हैं। 32 आगम, 45 आगम, षट्खण्डागम, कषाय-पाहुड, समयसार, नियमसार, प्रवचनसार, श्रीमद् रायचन्द (पत्रावली), कानजी स्वामी, प्रवचनामृत आदि सभी के कोई न कोई पन्थ हैं। कतिपय प्रश्न उभर रहे हैं-

1. तीर्थंकर या आराध्य (गुरु) की मूर्ति पूजने वाले उन-उन उपासकों के योग अशुभ होते हैं या शुभ होते हैं?
2. तीर्थंकर या आराध्य (गुरु) ने जब प्रवचन फरमाया तब उनका योग कौनसा था- शुभ वचन योग या अशुभ वचन योग?
3. जब हम उनकी भक्ति करते हैं, गुणगान गाते हैं, स्तुति, स्तवन करते हैं तब हमारा योग शुभ होता है या अशुभ?
4. जब हम आराध्य की देशना उनसे या उनके विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न अनुयायी, पण्डित जी, कुशल वक्ता से सुनते हैं, कान में शब्द जाते हैं तब हमारा योग कैसा होता है? शुभ या अशुभ?
5. उसका चिन्तन, मनन करते हैं, स्वाध्याय करते हैं, भाव विभोर होते हैं, तब हमारा योग कौनसा होता है?
6. पहले से 13वें गुणस्थान तक किसी भी जीव का एक समय भी ऐसा नहीं हो सकता जब शुभ या अशुभ योग नहीं हो। अयोगी अवस्था 14 वें गुणस्थान और सिद्ध भगवान के अलावा जीव द्रव्य में कहीं अयोग नहीं है। अयोगी अवस्था के पूर्व आप कौनसी अवस्था में रहना चाहेंगे? शुभयोग की अवस्था में या अशुभ योग की अवस्था में?
7. सभी गुणश्रेणियों में प्रवेश के समय कौनसा योग होता है? शुभ योग या अशुभ योग?
8. अरिहन्त भगवान के सयोगी अवस्था तेरहवें गुणस्थान में कौनसा योग होता है?

यदि इन सबका उत्तर शुभयोग है तो वह हेय कैसे? ऊपर की अवस्था तक भी शुभयोग हेय नहीं है, वही शुभ योग पुण्य का कारण है। नीचे शुभ छूटा तो अशुभ योग है, पाप है, जो कि हेय है, तब सम्यक्त्व प्राप्ति के लिए शुभ योग को हेय कैसे कहा जाता है? तत्त्वार्थसूत्र ने 'शुभः पुण्यस्य' से शुभ योग को पुण्य कहा है। पेट्रोलियम के अनेक उत्पाद हैं, जैसे-डामर, डीजल, सामान्य पेट्रोल, विशेष पेट्रोल। डामर से सड़क बनती है, डीजल से गाड़ी चलती है, रेल भी चलती है, वह डामर से अधिक मूल्यवान है। सामान्य पेट्रोल से कार चलती है वह और अधिक मूल्यवान है। हवाई जहाज का पेट्रोल और अधिक कीमती है। एक यात्री घर से पेट्रोल की कार में डामर की सड़क पर से स्टेशन पहुँचा। डीजल इञ्जन वाली ट्रेन से दिल्ली पहुँचा और फिर हवाई जहाज से अमेरिका पहुँचा उससे पूछो कि भैया! इनमें कौन कीमती है? वह क्रम से बता देता है। अब पूछो कि आपको यात्रा में सहकार किसका? वह कहता है कीमत कम ज्यादा भले ही हो, पर सहकार सभी का है।

पूर्व में कहा जा चुका है कि जिससे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति हो वही पुण्य है। हाँ, इतना अवश्य है कि आत्मिक उन्नति वाला पुण्य सातिशय पुण्य है। उसी का सर्वाधिक महत्त्व है 'सुपुण्णाणं, धम्मे उप्पज्जए मई', जिससे धर्म में मति उत्पन्न होती है। बाकी शारीरिक और मानसिक उन्नति के पुण्य आत्मिक उन्नति में सहकारी हैं। आत्म उन्नति के अभाव में उनका विशेष महत्त्व नहीं। उनसे प्राप्त उन्नति का दुरुपयोग तो सदा सर्वदा हेय है त्याज्य है- यदि दुरुपयोग नहीं किया जाये, संयम पर्याय से अर्जित पुण्य को सदा बढ़ाया ही जाता रहे, तो बढ़े हुए शुभयोग से आत्म उन्नति होगी ही। घातक पुण्य नहीं, पाप है। घातक शुभयोग नहीं, योग की उपलब्धि का दुरुपयोग यानी पाप है और वही अशुभ योग त्याज्य है। सम्पूर्ण आगम का यही दिव्य उद्घोष है।

नवकार मन्त्र का पाठ बचपन से ही जानते हो। क्या बोलते हैं? **'एसो पंच नमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो'** इन पाँचों को किया गया नमस्कार सभी पापों का प्रणाशक है। यह नहीं कहा- **'सव्वपुण्णप्पणासणो'** सभी पुण्यों का प्रणाशक है। केवल पाप के नाश की ही बात कही। नमस्कार तो स्वयं पुण्य है। तस्स उत्तरी के पाठ को उठाकर देखें तो **'पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं'** पाप कर्मों का नाश करने के लिए कायोत्सर्ग करता हूँ। कितना स्पष्ट है पाप कर्मों का ही नाश होता है अन्यथा पाप-पुण्य कर्मों का नाश करने के लिए कायोत्सर्ग करता हूँ ऐसा पाठ आता, पर नहीं, केवल पाप कर्मों का नाश करने की बात स्पष्ट कही। अतः स्पष्ट होता है पाप हेय है, हेय है, हेय है, पर पुण्य हेय नहीं है। पुण्य छोड़ा नहीं जाता वह स्वतः छूट जाता है। चारित्र को क्या कभी हम हेय कहते हैं? नहीं, क्योंकि चारित्र हमको छोड़ना नहीं पड़ता वह हमें किनारे पहुँचाकर स्वतः छूट जाता है। जिसको छोड़ना पड़ता है, वह हेय होता है। जो स्वतः छूट जाता है वह सहयोगी साधन हो सकता है, उसे हेय की श्रेणि में नहीं रख सकते।

आगे देखें-'करेमि भंते' का पाठ भी वही उद्घोष कर रहा है-साधक 'सावज्जजोगं पच्चक्खामि'- सामायिक में सावद्य योग का त्याग करता है। इस पाठ में भी पाप के त्याग की बात ही कही।

अरे भइया! कहाँ से पुण्य को हेय बता दिया? सामायिक-प्रतिक्रमण के पाठों में तो कहीं इसे हेय नहीं बताया। आराधक बनना है तो जिनेश्वर भगवान के वचनों पर दृढ़ श्रद्धा रखें। जो जिनेश्वर भगवान ने फरमाया है, वही सत्य है, वही तथ्य है, वही यथार्थ है।

चलें, दशवैकालिक के चौथे अध्ययन की 8वीं गाथा क्या कह रही है? देखें-

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं ण बंधइ।।

अर्थात् यतना से चलता है, यतना से उठता है, यतना से बैठता है, यतना से सोता है, यतना से खाता है,

यतना से बोलता है, वह पापकर्म का बन्ध नहीं करता है। पापकर्म का बन्ध नहीं करने की ही बात बतायी, पर पुण्य कर्म का बन्ध नहीं होगा, ऐसा वर्णन नहीं किया। क्योंकि शुभयोग से यतनापूर्वक क्रिया कर रहा है तो पुण्य का बन्ध होगा ही। जब तक शरीर है, तब तक प्रवृत्ति करनी ही पड़ेगी, क्रिया करनी ही पडेगी। जैनदर्शन की क्रिया में बाहर की प्रवृत्ति नहीं है, जागृति रखने की बात कही है। समिति यही है प्रवृत्ति में जागृति रखे एवं सही कार्य करके उसका अहंकार नहीं करे। प्रवृत्ति शरीर की मजबूरी है, दोषपूर्वक प्रवृत्ति नहीं हो एवं निर्दोष प्रवृत्ति से जुड़ाव नहीं हो। श्रम, संयम, सदाचार शरीर धर्म है, पर इनका अभिमान नहीं करना आत्मधर्म है।

इस पुण्य की उपादेयता को उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं-

रोग खतरनाक है, शल्य क्रिया बहुत बड़ी होने वाली है। 8-10 घण्टे के लिए शल्य चिकित्सा कक्ष में रहना होगा। मुख्य शल्य क्रिया करने वाला डॉक्टर बहुत नामी है, फीस लाखों रूपये की है। उस मुख्य डॉक्टर के आने से पूर्व नीचे के सहायक डॉक्टर भिन्न-भिन्न कार्यों में सहयोगी बनने वाले हैं। हजारों की पगार है, वेतन है। नर्सिंग स्टाफ भी है, स्टॉफ पूरा कुशल है, पूरा सहकारी है, छोटे सहायक डॉक्टर से काफी कम कुछ हजार ही फीस के हैं। डॉक्टर, नर्सिंग स्टाफ पहले आकर सहायक सामग्री एवं अन्य आवश्यकताओं को जाँच लेते हैं और भी अधीनस्थ कर्मचारी हैं, काम आए सामान, गन्दगी, रुई, कवर आदि वे बाहर विसर्जित करते हैं। सभी अपनी-अपनी जगह सहकारी हैं। प्रारम्भिक कार्य कर्मचारी, फिर नर्सिंग स्टाफ, फिर छोटे डॉक्टर और मुख्य कार्य सबसे बडा डॉक्टर करता है। प्रारम्भ के सभी काम बड़े डॉक्टर पर ही निर्भर करते हैं। सारे काम हो जायें, अचानक बड़े डॉक्टर की तबीयत खराब हो जाए, अथवा उसके घर मौत हो जाए अथवा देश या राज्य के बड़े अफसर के दुर्घटनाग्रस्त होने पर पहले सेवा करने वहाँ जाना पड़े, तब पूर्व वालों की सारी तैयारी कुछ भी काम की नहीं, अगली तारीख मिल जाती है।

डॉक्टर ही मुख्य है, पूरी तरह उपादेय है, पर बाकी सबको क्या अनुपादेय कहा जा सकता है? महत्त्व कम है, बहुत कम भी हो सकता है इन 3-4 डॉक्टरों की टीम के अतिरिक्त अन्य डॉक्टरों की टीम के भी वे नर्सिंग स्टाफ, कर्मचारी सहायक बनते हैं, अन्य काम भी करते हैं, क्या उन्हें हेय कहा जा सकता है? महत्त्व सम्यग्दर्शन का है, महत्त्व संवरपूर्वक निर्जरा का है। सबसे ऊँचा स्थान चौदहवें गुणस्थान का है, अयोग, अलेश्य, अनाहारक आगम कह रहा है अल्पवेदना, महानिर्जरा- मात्र 5 लघु अक्षर की स्थिति लगभग $2^{1}/_{2}$ से 3 सैकण्ड की स्थिति सर्वाधिक निर्जरा, पर वहाँ तक पहुँचने के लिए 4, 7, 8, 9, 10, 12 व 13 इन सात गुणस्थानों में 7 गुणश्रेणी करनी ही होगी-

1. सम्यग्दर्शन 2. अनन्तानुबन्धी की विसंयोजना 3. क्षपक समकित 4. विरत 5. क्षपक श्रेणी 6. क्षीण मोह 7. सयोगी जिन।

मुक्ति प्राप्त करने वाले को श्रावक, उपशम श्रेणी एवं उपशमन कषाय इन तीन गुणश्रेणी करने की अनिवार्यता नहीं। तत्त्वार्थ 9/47 स्पष्ट कर रहा है- प्रत्येक गुणश्रेणी में प्रतिसमय अनन्त गुणी विशुद्धि बढ़ती है, असंख्यात गुणी निर्जरा बढ़ती है। पहले गुणस्थान में अपूर्वकरण के समय से प्रथम गुणश्रेणी प्रारम्भ हो जाती है। और वह अन्तर्मुहूर्त्त प्रमाण की बताई गई है। गुणश्रेणी के जितने समय उतने असंख्यात गुणे करने के पहले समय से अन्तिम समय तक की निर्जरा (असंख्यात) असंख्यात गुणी बढ़ जाती है, पर अन्तिम समय तो दिलाने वाली वह ही है। गुणश्रेणी निर्जरा को ज्ञानियों ने सकाम निर्जरा कहा है। दिगम्बर साहित्य में अविपाक निर्जरा शब्द अधिक प्रयुक्त हुआ है। प्राय: संवर और सकाम निर्जरा, बडे डॉक्टर-छोटे डॉक्टर की जोड़ी है। प्राय: साथ-साथ काम करते हैं। नर्सिंग स्टाफ और कर्मचारी के समान पुण्य है, संसार अवस्था में छोटा मोटा ही रहता है, उससे संसार परिभ्रमण समाप्त नहीं होता। उत्तराध्ययन 10/15 में आया-'संसरइ

सुहासुहेहिं कम्मेहिं' शुभ-अशुभ कर्मों के द्वारा संसरण करता रहता है। आत्मोत्थान में इसका कोई सहकार नहीं, कोई उपयोग नहीं। शारीरिक, मानसिक उन्नति अनन्त बार कर सकता है, बाहर की ऋद्धि दिला सकता है, लोगों में सम्माननीय बना सकता है। इसका दुरुपयोग भव-भव में भटका सकता है। इस दृष्टि से कतिपय परम्परा इसे हेय कह देती है। यहाँ विचारणीय बात यह है कि इसने आत्मोत्थान नहीं कराया यह बात सही है, किन्तु संसार में दुर्गति से तो बचाया। यद्यपि सर्वाधिक महत्त्व आत्मिक पुण्य का है, आत्मोन्नति कारक सुपुण्य है, पर उसमें सहकारी तो शारीरिक और मानसिक उन्नति ही बनी है। यदि इस उपलब्धि को भोग में, दुराचार में , व्यसन में, आतंक में लगाता है तो ये सब दुरुपयोग हैं पाप हैं, आस्रव हैं, बन्ध हैं। दोष उनका है। सामग्री मिलना दोषकारक नहीं है, सामग्री का ममता बुद्धि से सञ्चय करना, सामग्री से किसी की आशा को पूरी करने में हिचकिचाना, सामग्री को स्वार्थ से भोग में, गलत तौर-तरीकों में, दूसरों के विनाश में लगाना ये दोष हैं। ये दोष पुण्य के नहीं है। वहाँ शुभयोग नहीं है। इन दोषों के समय अशुभ योग है, मनदण्ड, वचनदण्ड , कायदण्ड है। मन, वचन, काया का मिलना गलत नहीं। मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति में लगना, मनसमाधारणता, वचसमाधारणता, कायसमाधारणता में लगता तो शुभयोग होता है, पुण्य होता है।

डॉक्टर नहीं आया, ऑपरेशन नहीं हो पाया, इसका दोष नीचे वालों का तो नहीं, वे अनुपयोगी तो नहीं हो सकते। भले आज उनकी मेहनत काम नहीं आ सकी, अगले ऑपरेशन में भी तो उनकी मेहनत चाहिये। अस्तु, वे हेय नहीं हैं।

मनुष्य गति, पञ्चेन्द्रिय जाति, वज्रऋषभनाराच संहनन अनन्त बार काम नहीं आ सके, अपितु इनका दुरुपयोग सप्तम पृथ्वी में ले गया। पर इसका दोष मनुष्य गति, पञ्चेन्द्रिय जाति और वज्रऋषभनाराच संहनन का तो नहीं है न। इनके दुरुपयोग रूपी पाप का है। कषाय की कमी सदा लाभदायक है, संक्लेश कम होना, विशुद्ध बनना सदा हितकारी है। विशुद्धि बढ़ने से जिन प्रकृतियों का अनुभाग बढ़ता है उन्हें पुण्य कहते हैं। कषाय घटने पर अशुभयोग घटता है, शुभयोग बढ़ता है। अस्तु, तत्त्वार्थसूत्रकार ने कह दिया 'शुभः पुण्यस्य।' वह शुभयोग पुण्य है, हितकारी है।

किन्तु सैद्धान्तिक अभिप्राय: में पाप के घटने को महत्त्व देते हैं, पाप का अनास्रव हुआ इसलिए शुभयोग को संवर में शामिल किया। ये शुभयोग, प्रशस्त योग किन ऊँचाइयों तक पहुँचा सकते हैं? उत्तराध्ययन के 29 वें अध्ययन की 7वीं पृच्छा में कह दिया-**'पसत्थजोग-पडिवन्ने य णं अणगारे अणंतघाइपज्जवे खवेइ।'**

अर्थात् प्रशस्त योग से युक्त अनगार (साधु) अनन्त घाति पर्यायों को क्षय कर देता है। शुभ योग से युक्त अनगार ज्ञानावरणीय आदि चार घाति कर्मों का क्षय करता है। उस शुभ योग से अनगार पुण्य का उपार्जन भी करता ही है, उसे रोक नहीं सकता। आगम के उद्धरणों से, अनेक सूत्रों से एक-एक करके देखें- उत्तराध्ययनसूत्र के 30वें अध्ययन की छठी गाथा कह रही है-

एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे।
भवकोडीसंचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ।।

अर्थात् उसी प्रकार संयमी के भी, करोड़ भवों का सञ्चित किया हुआ पापकर्म तप से निर्जीर्ण किया जाता है। तप के द्वारा पापकर्म ही निर्जीर्ण किए जाते हैं, पुण्य कर्म नहीं। उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययन की चौथी पृच्छा में आया-सेवा से नरक तिर्यञ्च के साथ खराब मनुष्य और देव का बन्ध नहीं होता। वर्ण, संज्वलन, भक्ति, बहुमानता के कारण वह मनुष्य और देव सम्बन्धी सुगति (आयु) का बन्ध करता है। श्रेष्ठ गति और सिद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है।

विनय मूलक सर्व प्रकार के प्रशस्त कार्यों को साध लेता है। प्रशस्त कार्य प्रशस्त योग की ही देन है।

पुण्य तो इससे वर्धापित होने ही वाला है। आगे 10वीं पृच्छा में बताया–**वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ। उच्चागोयं कम्मं निबंधइ।**

अर्थात् वन्दना से यह जीव नीच गोत्र कर्म का क्षय करता है और उच्च गोत्र कर्म को बाँधता है। वन्दना से जीव अशुभ पाप कर्म का क्षय कर शुभ कर्म बाँधता है। तो क्या वन्दना हेय है? छोडने योग्य है? वन्दना करोगे तो पुण्य बन्धने वाला ही है। उसे कैसे रोक सकते हैं? अस्तु, वन्दना उपादेय है तो पुण्य को भी छोड़ नहीं सकते हैं। उत्तराध्ययनसूत्र 29वें अध्ययन की 23वीं पृच्छा में–**पवयणपभावेणं जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबंधइ।।**

अर्थात् प्रवचन की प्रभावना से यह जीव भविष्यकाल में केवल शुभ कर्मों का ही बन्ध करता है। स्वाध्याय का 5वाँ भेद धर्मकथा से भी पुण्य का उपार्जन होता है। स्वाध्याय आभ्यन्तर तप है वह उपादेय ही है तो उससे होने वाले शुभ कर्मों के बन्ध, पुण्य को कैसे रोक सकते हैं? सूत्रकृताङ्गसूत्र के 8वें अध्ययन की तीसरी गाथा में देखें–**पमायं कम्ममाहंसु**-प्रमाद को कर्म कहा। कारण में कार्य का उपचार कर दिया। प्रमाद में अशुभ योग हो तो संरम्भ, समारम्भ, आरम्भ होता है। छठे गुणस्थान के शुभयोगी को अनारम्भी कहा है। भगवती सूत्र के शतक 12 उद्देशक 2 में जयन्ती श्रमणोपासिका ने जब भगवान महावीर से पूछा–भगवन्! जीव किस कारण से शीघ्र गुरुत्व को प्राप्त होते हैं? तब भगवान फरमाते हैं–हे जयंती! जीव प्राणातिपात से लेकर मिथ्यादर्शन शल्य तक अठारह पापस्थानों के सेवन से शीघ्र गुरुत्व को प्राप्त होते हैं। अठारह पापस्थानों से निवृत्त होने से लघुत्व को प्राप्त होते हैं।

स्पष्ट है जीव को भारी बनाने वाले पाप ही हैं, पुण्य नहीं हैं। और तो क्या इसे विस्तार से भगवतीसूत्र के शतक 7 उद्देशक 6 में कह दिया–**कहं णं भंते! जीवा णं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति? गोयमा! पाणातिवातेणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु गोयमा! जीवाणं कक्कसवेदणिज्जा कम्मा कज्जंति।**

भगवन्! जीवों के कर्कशवेदनीय कर्म कैसे बँधते हैं?

हे गौतम! प्राणातिपात से यावत् मिथ्यादर्शनशल्य से जीवों के कर्कशवेदनीय कर्म बँधते हैं।

कहं णं भंते! जीवाणं अक्कसवेदणिज्जा कम्मा कज्जंति?

गोयमा! पाणातिवातवेरमणेणं जाव परिग्गह-वेरमणेणं कोहविवेगेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवि-वेगेणं, एवं खलु गोयमा! जीवाणं अकक्कसवेद-णिज्जा कम्मा कज्जंति।

अर्थात् हे भगवन! जीवों के अकर्कशवेदनीय कर्म कैसे बँधते है? गौतम! प्राणातिपातविरमण से यावत् मिथ्यादर्शनशल्यविवेक से जीवों के अकर्कशवेदनीय कर्म बँधते हैं।

भगवतीसूत्र के शतक 7 उद्देशक 10 में भी ऐसा ही सूत्र आया–जीव पापकर्म कैसे बाँधता है और क्या कल्याण (शुभ) कर्म कल्याणफलविपाक सहित होते हैं? प्राणातिपात से लेकर यावत् मिथ्यादर्शनशल्य तक अठारह पापस्थान का सेवन ऊपर–ऊपर से प्रारम्भ में तो अच्छा लगता है, किन्तु बाद में जब उनके द्वारा बाँधे हुए पापकर्म उदय में आते हैं, तब वे अशुभरूप में परिणत होते होते, दुरूपपने में, दुर्गन्ध रूप में यावत् बार–बार अशुभ परिणाम पाते हैं। इस प्रकार से जीवों के पापकर्म अशुभफल विपाक से युक्त होते हैं और उदाहरण दिया–जैसे कोई पुरुष सुन्दर स्थाली में पकाने से शुद्ध पका हुआ, 18 प्रकार के दाल, शाक आदि व्यञ्जनों से युक्त विषमिश्रित भोजन का सेवन करता है वह भोजन उसे प्रारम्भ में अच्छा लगता है, किन्तु उसके पश्चात् वह भोजन परिणमन होता–होता खराब रूप में, दुर्गन्ध रूप में यावत् बार–बार अशुभ परिणाम प्राप्त करता है।

जीवों के कल्याणकर्म, कल्याण फल विपाक से संयुक्त कैसे होते हैं? जैसे कोई पुरुष मनोज्ञ स्थाली में पकाने से शुद्ध पका हुआ और अठारह प्रकार के दाल,

शाक आदि व्यञ्जनों से युक्त औषधमिश्रित भोजन करता है, तो वह भोजन ऊपर ऊपर से प्रारम्भ में अच्छा न लगे, परन्तु बाद में परिणत होता होता जब वह सुरूपत्व रूप में, सुवर्ण रूप में यावत् सुख रूप में बार-बार परिणत होता है तब वह दु:ख रूप में परिणत नहीं होता, इसी प्रकार हे कालोदायिन्! जीवों के लिए प्राणातिपात विरमण यावत् परिग्रह-विरमण, क्रोधविवेक यावत् मिथ्यादर्शनशल्य विवेक प्रारम्भ में अच्छा नहीं लगता, किन्तु उसके पश्चात् उसका परिणमन होते-होते सुरूपत्व रूप में, सुवर्ण रूप में उसका परिणाम यावत् सुख रूप होता है, दु:ख रूप नहीं होता। इसी प्रकार हे कालोदायिन्! जीवों के कल्याण (पुण्य) कर्म कल्याण फलविपाक संयुक्त होते हैं।

पुण्य की यही परिभाषा है-करने में कठिन लगता है, किन्तु फल अति मधुर लगता है। यहाँ 18 पाप के त्याग से पुण्य कहा, शुभयोग कहा। अस्तु, पाप का रुकना, संवर हुआ और शुभयोग संवर में सम्मिलित हुआ।

सबसे अधिक संसार सुख, सर्वार्थ सिद्ध देव लहे।
निर्दोषता, निर्कांक्षता, निर्मल मुनि इक वर्ष लँघे।
अमृत प्रपा, गुरु की कृपा, मुदिता अनुपम और कहाँ।।

जिनशासन की पुकार

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

महावीर के शासन में ये, वीरों का दरबार ...
वीरप्रभु की वाणी जैसे, शेरों की ललकार ...
सुन ले जिनशासन की पुकार...।।टेर।।

आवाज लगाये शासन तुझको ...जगना ही होगा
रागद्वेष की इस सेना से ...लड़ना ही होगा!
ढाल अहिंसा की है तेरी ...संयम तप तलवार...
सुन ले जिनशासन की पुकार...।।1।।

महापुण्य से शासन पाया ...आगम है फरमाते
वीरमार्ग पर चलने वाले...मोक्षगति को पाते!
मोक्ष मिले तो मिट जाएगी ...जनम-जनम की हार...
सुन ले जिनशासन की पुकार...।।2।।

जिनशासन में प्रभुवाणी से ...बनना है पावन
गुरुवर की सच्ची सेवा ...कर आज्ञा का पालन!
सामायिक स्वाध्याय से संयम ...जीवन का उपहार...
सुन ले जिनशासन की पुकार...।।3।।

जिनशासन में जयवंता ...नवकार मन्त्र की शक्ति
मुक्तिपुरी की गारन्टी ये...परमेष्ठी प्रभु की भक्ति!
त्याग तपस्या ज्ञान ध्यान से ...कर ले भव को पार...
सुन ले जिनशासन की पुकार...।।4।।

जिनशासन है साथी सच्चा ...साथ कभी ना छोड़े
मन भी छूटे धन भी छूटे ...जब प्राण देह को छोड़े!
साथ चलेगा कुछ न तेरे ...घर गाड़ी परिवार ...
सुन ले जिनशासन की पुकार...।।5।।

जिनशासन में तिर गए इतने ...अब तेरी बारी है
सब दोषों को मिटना होगा ...जिनवाणी धारी है!
तीर्थ बनें अब तीर्थङ्कर भी...शासन का उपकार..
सुन ले जिनशासन की पुकार...।।6।।

-'जिनशासन' बी 102, वीतरागसिटी, जैसलमेर बाईपास रोड़, जोधपुर (राजस्थान)

महाप्रभावशाली 13 उपाय

श्री पीरचन्द चोरड़िया

1. जप साधना 2. माता-पिता के चरण-स्पर्श, 3. नवकारसी आदि तप आराधना, 4. गुरु वन्दन, 5. प्रभु भक्ति, 6. सुपात्रदान, 7. साधर्मिक भक्ति, 8. परस्पर मैत्री भाव, 9. जीवदया, 10. पाठशाला (धार्मिक अभ्यास), 11. कन्दमूल, अभक्ष्य व्यसनादि त्याग, 12. रात्रि-भोजन त्याग, 13. सामायिक/प्रतिक्रमण।

-माणक चौक, नया बास, सुतरखाना की हवेली, जोधपुर (राजस्थान)

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 25
ISSN 2249-2011

आचार्यपद दिवस

आचार्यश्री हीरा के संघनायकत्व के तीन दशक : प्रमुख उपलब्धियाँ

श्री नौरतनमल मेहता

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्यपद समारोह को 30 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के द्वारा 30 मई, 2021 को आयोजित वेबिनार में शासन सेवा समिति के सदस्य एवं जिनवाणी पत्रिका के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता के द्वारा प्रस्तुत विचारों का परिवर्धित रूप। **-सम्पादक**

आत्मीय बन्धुओं!

आज ज्येष्ठ कृष्णा पञ्चमी है। आज ही के दिन जोधपुर में आचार्यश्री हस्ती के पट्टधर आचार्य श्री हीरा का चादर-महोत्सव का भव्य आयोजन सरदार स्कूल के ग्राउण्ड में सम्पन्न हुआ।

गुरु हमारे चलते-फिरते तीर्थ हैं। गुरु अपने भक्तों को ज्ञान देते हैं तो गुरु-सेवा से सम्यक्-श्रद्धान जगता है और गुरु आज्ञा-आराधन से सम्यक् चारित्र का भाव पुष्ट होता है। ज्ञानी गुरु बोले या नहीं, तब भी गुरु सेवा और गुरु-सन्निधि से भक्त गुरु के आचार-विचार-व्यवहार से अनेक अनमोल-सूत्र सहज में प्राप्त कर लेता है।

आचार्यश्री हीरा पञ्चमहाव्रत पालक हैं, पञ्चाचार आराधक हैं, पञ्चेन्द्रिय विजेता हैं तो ब्रह्मचर्य का तेज आपश्री के मुख-मण्डल से साफ़ झलकता है। आचार्य के लिए आठ सम्पदाओं का शास्त्र में उल्लेख मिलता है, आपश्री में आठों ही सम्पदाएँ विद्यमान हैं। हर आगत भक्त सबसे पहले शरीर-सम्पदा देखता है। आपश्री का सुडौल शरीर, गौरवर्ण, प्रशस्त भाल, कानों पर विशाल केशराशि, साधना-आराधना से चमकता चेहरा और प्रेम-पीयूष बरसाते दिव्य नेत्र हर किसी को आकर्षित-प्रभावित करते हैं।

आचार्यश्री हीरा आचार-विचार-व्यवहार से सरल हैं तो ज्ञान-दर्शन-चारित्र में आपश्री की रमणता सबको प्रेरित करती है। सबके साथ प्रीति और मैत्री का भाव तथा पूज्य गुरुदेव की आत्मीयता-अपनत्व छुपाए नहीं छुपता। आपश्री के व्यक्तित्व से प्रभावित जैन-जैनेतर और आबाल-वृद्ध सभी दर्शन-वन्दन हेतु दौड़-दौड़कर आते हैं और अपने आपको सौभाग्यशाली समझते हैं।

आचार्यश्री हीरा पूर्वाचार्यों के प्रशस्त-पथ पर एवं विशेषत: अपने आराध्य गुरुवर्य पूज्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के चरण-चिह्नों पर गति-प्रगति करते हुए तीन दशक से रत्नसंघ का कुशलतापूर्वक सञ्चालन कर रहे हैं। आचार्यश्री हीरा अपनी वय सम्पन्नता को ध्यान में रखकर विगत कुछ समय से जप-तप में, ध्यान-मौन में, साधना-आराधना में आत्मचिन्तन-आत्मरमण में और शास्त्र-स्वाध्याय में विशेष रूप से तल्लीन रहते हैं।

आचार्यश्री हीरा को नि:स्पृहता से स्वाभाविक लगाव है अत: पूज्य गुरुदेव विगत कुछ समय से कम-से-कम भक्तों से बातचीत करते हैं शासन प्रभावना में अपनी भूमिका और भागीदारी सीमित रखकर अपने सहयोगियों से कार्य-दायित्व सम्पादित करवाने का प्रयास करते हैं। इसका केवलमात्र कारण यदि है तो पूज्य गुरुदेव अधिक-से-अधिक समय स्वयं की साधना में नियोजित करना चाहते हैं। ज्ञानी-ध्यानी-संयमी साधक के दर्शन-वन्दन मात्र से भक्तों के सारे मनोरथ और सारी भावनाएँ स्वत: पूरी होती जाती हैं। गुरु जब किसी को नियम करवाते हैं तो नियम निर्विघ्नता से पार लगता है। गुरु नियम करवाने के साथ नियम पालन की शक्ति भी

देते हैं।

भक्तों ने अनेक बार देखा है कि आचार्यश्री हीरा व्यसन-त्याग की सतत और प्रभावी प्रेरणा करते हैं। रात्रि-भोजन त्याग और सामूहिक-भोज में रात्रि भोजन नहीं करने का आह्वान करते रहते हैं। शीलव्रत के खन्द, सामायिक की प्रेरणा और देव-गुरु-धर्म का सही स्वरूप समझाकर जन-जन को धर्म के सम्मुख लाने की कला जैसे करणीय कार्यों को करते रहने से आचार्यश्री हीरा का व्यक्तित्व बिना किसी के कहे या बिना किसी के बताये अपने-आप स्वयं उजागर हो जाता है।

आप में से कइयों के अनुभव में आया होगा कि पूज्य गुरुदेव ब्रह्म-मुहूर्त में शय्या-त्याग करते हैं। आत्मचिन्तन-आत्मरमण में सहायक शास्त्रीय गाथाओं के साथ भजन-गीत गुनगुनाते हैं। प्रातः प्रतिक्रमण पश्चात् सन्त-मुनिराजों की वन्दना प्रेमपूर्वक स्वीकारते हैं, प्रत्याख्यान करवाते हैं और मंगल-पाठ सुनाते हैं। स्वयं अरिहन्त भगवन्तों को विधिवत् बारह बार वन्दना करते हैं। सस्वर में भक्तामर-स्तोत्र का पाठ प्रतिदिन निरन्तर-निर्विघ्न चलता है। प्राणायाम-योगा और धीरे-धीरे भ्रमण आपश्री का दैनिक क्रम है। प्रत्येक सोमवार को तथा प्रतिदिन 12 से 3 बजे तक (पहले 2 बजे तक मौन रहती थी) तथा कृष्ण पक्ष की दशमी को अखण्ड मौन वर्षों से बराबर चल रही है। पूज्य गुरुदेव की दिनचर्या सुव्यवस्थित रहती है और दिन की प्रमुख घटनाओं को तथा प्रत्याख्यानों को तुरन्त डायरी में नोट करने की आदत से लगता है कि डायरी-लिखना गुरुदेव का स्वभाव है। सायं प्रतिक्रमण पश्चात् सन्तों की दिनभर की चर्या जानकर कल्याणमन्दिर-महावीराष्टक बोलकर आचार्यश्री विश्राम करते हैं। जल्दी सोना और जल्दी उठना आपश्री का स्वभाव है। मुद्दे की बात तो यह है कि पूज्य गुरुदेव के जीवन में आनन्द का संगीत है तो आपश्री के अन्तर्मन में समाधि के पुष्प खिलते हैं। शान्ति और आनन्द के परमाणु आपश्री के चारों ओर विद्यमान रहते हैं। अनेक भक्त आचार्यश्री हीरा की सेवा-सन्निधि में बैठकर आनन्द और शान्ति पाते हैं।

आचार्यश्री हीरा जब तक विरक्त अवस्था में थे तब से आपने अध्यात्मयोगी गुरु हस्ती का विश्वास अर्जित कर लिया था। दीक्षित होकर काया-छायावत् सेवा-सन्निधि में रहते हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत का ज्ञान तो किया ही, शास्त्र ज्ञान और बोल-थोकड़ों के अभ्यास के साथ सुयोग्य गुरु के सुयोग्य शिष्य ने सरलता-सहजता-सजगता, सिद्धान्तप्रियता, समाचारी-पालन की दृढ़ता, कथनी-करणी की एकरूपता, निभने-निभाने की कला एवं समयानुकूल निर्णय करने की क्षमता जैसे अनेक सद्गुण गुरु-सेवा में रहते-रहते आपश्री ने सीख लिये। विचरण-विहार और चातुर्मास करते-करते आचार्यश्री हस्ती के मन-मस्तिष्क में सेवा और भक्ति से अपना स्थान बनाया, जिससे सन्तुष्ट होकर पूज्य गुरुवर्य ने आपको 'पण्डित रत्न' अलङ्कार से विभूषित किया।

आचार्यश्री हस्ती ने सामायिक-स्वाध्याय मिशन को घर-घर और जन-जन तक पहुँचाया जिसमें भी सुशिष्य मुनि श्री हीरा का अच्छा सहयोग रहा। आचार्यश्री हस्ती ने राजस्थान का हर क्षेत्र तो पावन किया ही, राजस्थान के बाहर अन्यान्य प्रदेशों में विचरण-विहार करके अनेकानेक ग्रामों-नगरों और महानगरों तक में तीन-तीन पीढ़ियों को सम्भालने में तथा उन्हें देव-गुरु-धर्म के शुद्ध स्वरूप को समझाकर धर्म के सम्मुख लाने में गुरु-शिष्य दोनों की भागीदारी रही।

आचार्यश्री हस्ती ने अपने विश्वस्त सुशिष्य को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया। तीर्थधाम निमाज में गुरुवर्य के पार्थिव देह के अन्तिम संस्कार पश्चात् 22 अप्रेल, 1991 को सायं श्रद्धाञ्जलि-सभा का आयोजन सुशीला भवन में बाहर ग्राउण्ड में आयोजित किया गया। श्रद्धाञ्जलि-सभा में अध्यात्मयोगी, युगद्रष्टा-युग मनीषी आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. का स्व-लिखित पत्र पढ़ा गया जिसमें संघ व्यवस्था के लिए आचार्य के रूप में पण्डित रत्न श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का नाम था तो उपाध्याय-पद हेतु

पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के नाम का उल्लेख श्रवण करते ही जन-समुदाय ने गगनभेदी जयनाद करके आचार्यश्री हस्ती के मनोनयन को सर्वानुमति से मान्य किया।

आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. का चादर-महोत्सव जोधपुर के सरदार स्कूल के ग्राउण्ड में विक्रम सम्वत् 2048 ज्येष्ठ कृष्णा पञ्चमी, रविवार, 2 जून, 1991 को सम्पन्न हुआ। चादर-महोत्सव पर उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. प्रभृति सभी सन्त-मुनिराज विराजित थे तो साध्वीप्रमुखा, प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकँवरजी म.सा., उप-प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकँवरजी म.सा. आदि समस्त महासतीवृन्द की भी उपस्थिति रही।

जोधपुर विराजित अन्य-अन्य परम्पराओं के प्रमुख सन्त-मुनिराजों में चादर-महोत्सव पर पधारने वाले सन्तों में श्री जयमल जैन संघ के आचार्यकल्प श्री शुभचन्द्रजी म.सा., पण्डित रत्न श्री पार्श्वचन्द्रजी म.मा. आदि सन्त-मुनिराज पधारे तो ज्ञानगच्छाधिपति तपस्वीराज पूज्य श्री चम्पालालजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती पण्डित रत्न श्री घेवरचन्दजी म.सा. 'वीरपुत्र', वयोवृद्ध श्री जौहरीमुनिजी म.सा. आदि सन्त-मुनिराजों के अतिरिक्त महासती श्री भीकमकँवरजी म.सा. आदि ठाणा के पधारने से चारद-महोत्सव कार्यक्रम अत्यन्त भव्यता और गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ।

चादर-महोत्सव पर समीपवर्ती-सुदूरवर्ती श्रीसंघों के हजारों श्रद्धानिष्ठ भक्तों के साथ देशभर के कोने-कोने से गुरुभक्तों के अलावा अन्यान्य परम्पराओं के प्रमुख पदाधिकारियों ने अपनी-अपनी शुभकामनाओं और मंगलभावनाओं के साथ रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का अभिनन्दन तो किया ही, रत्नसंघ में प्रथम बार उपाध्याय-पद पर मनोनीत पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के प्रति भी शुभकामनाएँ व्यक्त की गईं।

मंगलाचरण से चादर-महोत्सव कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। चादर-महोत्सव पर अनेक वक्ताओं ने विचाराभिव्यक्ति के साथ शुभकामनाएँ दी। प्रमुख वक्ताओं के भावों का सार-संक्षेप में इस प्रकार है-

चादर-महोत्सव में आत्मार्थी साधक श्री जौहरीमलजी पारख ने ठेट मारवाड़ी भाषा में कहा कि- ''आचार्य रो पद सत्ता रो नहीं, सेवा रो साधन है, इण वास्ते आप अहंकार ने पूरी तरह सुं गलाय दीजो।'' आगे कहा-''थें होडाहोड गोडा मती फोड़ जो। दूजां रे देखा-देखी करोला तो सन्मार्ग रो रास्तो भूल जावोला।'' तीसरी बात कही-''आप खाली रत्नसंघ रा आचार्य नहीं हो, आप सारा हिन्दुस्तान रा आचार्य हो, आ मानने थे काम करजो।'' पारख साहब ने अपनी ओर से शुभकामना भी व्यक्त की।

भारत जैन महामण्डल के अध्यक्ष श्री सांचालालजी डागा ने कहा-''आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने सामायिक-स्वाध्याय का जीवन पर्यन्त शंखनाद किया, आपश्री भी ऐसी प्रवृत्ति को आगे बढ़ाएँ, यही मेरी मंगल भावना है।''

अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् के मानद महामन्त्री डॉ. नरेन्द्रजी भानावत ने चादर-महोत्सव के पावन प्रसङ्ग पर राजस्थानी दोहों के माध्यम से अपनी शुभकामना व्यक्त की। एक दोहा है-

रत्नसंघ रो आठवो, पट्ट महोत्सव आज।
हीरा मुनि चादर ले, धर्म संघ रे काज।।

रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोफतराजजी मुणोत ने अपने हृदय के भाव व्यक्त करने के पूर्व चादर-महोत्सव पर पधारे सन्त-मुनिराजों का तथा महासतीवर्याओं के नामों का उल्लेख करके उन्हें वन्दन-नमन किया और फिर कहा-''महामहिम आचार्य भगवन्त ने अपने ज्ञान-दर्शन-चारित्र से सींच-सींचकर रत्नसंघ के अचार्य-पद की महिमा जैन-जैनेतर समाज में बेजोड़ शिखर तक पहुँचाई है। आचार्य भगवन्त के तप से तपी हुई, उनके ज्ञान से प्रज्वलित,

दर्शन से महकती हुई और चारित्र से रङ्गी हुई इस चादर को उन्हीं के आदेशानुसार आपश्री को ओढ़ाई गई है। आपश्री के शासनकाल में ज्ञान-दर्शन-चारित्र की महक सारे चमन में फैले, यही मेरी मंगलकामना है।

सन्त-मुनिराजों के द्वारा शुभकामनाओं के भाव रखने के पूर्व कार्यक्रम में श्रमण संघीय उपाचार्य पण्डित रत्न श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं श्रमण संघ की ओर से बालोतरा के सुश्रावक श्री ओमप्रकाशजी बाँठिया के साथ प्रेषित शुभकामना सन्देश प्रस्तुत किया गया।

सन्त-मुनिराजों में पण्डित रत्न श्री पार्श्वचन्द्रजी म.सा. तथा पण्डित रत्न श्री घेवरचन्दजी म.सा. 'वीरपुत्र' ने अपनी-अपनी ओर से तथा अपनी-अपनी परम्पराओं की ओर से हार्दिक शुभकामना व्यक्त करते हुए कहा कि आप दोनों सूर्य-चन्द्र की तरह यशस्वी बनकर रत्नसंघ की गरिमा और महिमा बढ़ायें।

उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने कहा कि आचार्य भगवन्त पिछले काफी समय से संघ की सारणा-वारणा-धारणा का प्रशिक्षण दे रहे थे। अब, सुयोग्य गुरु ने सुयोग्य शिष्य को संघ का भार सौंपा है। आप अब रत्नसंघ के नायक बन गये हैं, इसलिये संघ की उज्ज्वल-विमल-धवल छवि को निरन्तर ऊँचाइयों पर ले जायेंगे, ऐसा विश्वास है।

साध्वीप्रमुखा-प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकँवर जी म.सा. की ओर से विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती म.सा. ने शुभकामना व्यक्त की।

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने थोड़े, किन्तु प्रभावशाली शब्दों में सन्देश दिया, वह उस समय तो प्रभावी था ही, आज भी प्रासङ्गिक है और आगे भी सदा प्रेरणा देता रहेगा। **आचार्यश्री हीरा के द्वारा फरमाए गये भाव इस प्रकार हैं-**

1. आज का दिन मेरे लिए, रत्नसंघ के लिए और चतुर्विध संघ के लिए एक नया सन्देश लेकर आया है।
2. कुछ समय पूर्व तक हम एक कल्पवृक्ष से मनोवाञ्छित फल पा रहे थे। हमने कल्पना भी नहीं की थी कि आचार्य भगवन्त की छत्रछाया से वञ्चित होकर हमें कुछ सोचना पड़ेगा।
3. रत्नसंघ की गौरव, गरिमा और महिमा के अनेक प्रेरक प्रसङ्ग रखते हुए आचार्यश्री हीरा ने एक-एक पूर्वाचार्यों एवं प्रमुख-प्रमुख सन्तों और महासतियों के प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किए।
4. आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. ने हमें एक ऐसा चमन दिया है, जिसकी मधुर महक से समूचा रत्नसंघ सुरभित है। हमें इस बगिया की रक्षा और सुरक्षा तो करनी ही है, इसे पल्लवित-पुष्पित और फलित भी करना है।
5. आचार्यश्री हीरा ने कहा-''अभी मुझे जो चादर ओढ़ाई गई है उसमें प्रेम-श्रद्धा-निष्ठा और स्नेह के प्रतीक तार हैं। चादर का एक-एक तार एक-दूसरे से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। ऐसे ही संघ का एक-एक सदस्य संघ-व्यवस्था और संघ-अनुशासन से जुड़ा रहे तो ज्ञान-दर्शन-चारित्र की निधि अभिवर्धित होती जायेगी।''
6. आचार्यश्री हीरा ने आगे कहा-''पूर्वाचार्यों के आशीर्वाद से, श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के मार्गदर्शन और सहयोग से तथा आप सबकी शुभकामनाओं और मंगलभावनाओं से संघोन्नति और शासन-प्रभावना का सुन्दर रूप उत्तरोत्तर बढ़े, इसके लिए मैं प्रतिबद्ध रहूँगा।''
7. अन्त में आचार्यश्री हीरा ने यह भी कहा-''हमें सभी परम्पराओं से आज तक जो स्नेह-सहयोग मिलता रहा है, वह उत्तरोत्तर बढ़ता रहे और हम सब ज्ञान-दर्शन-चारित्र में गति-प्रगति करें।''

आचार्यश्री हीरा ने सभी परम्पराओं के प्रमुख महापुरुषों के नामों का उल्लेख करते हुए परम्परा प्रेम-मैत्री-सहयोग की अपेक्षा भी रखी।

चादर-महोत्सव कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक सञ्चालन संघ-सेवी, संघहितैषी, संघहित चिन्तक सुज्ञ श्रावकरत्न श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफणा ने किया।

चादर-महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसङ्ग पर 133 श्रावक-श्राविकाओं ने जीवन पर्यन्त एक वर्ष की समयावधि के साथ एक माह के अभ्यास के लिए क्रोध-कषाय के त्याग किए। कतिपय अन्य श्रावक-श्राविकाओं ने चादर-महोत्सव पर व्रत-प्रत्याख्यान अङ्गीकार कर अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

चादर-महोत्सव कार्यक्रम का समापन आचार्यकल्प श्री शुभचन्द्रजी म.सा. के मंगल-पाठ से हुआ। जन समुदाय ने गगनभेदी जयनादों के साथ आचार्यश्री हीरा एवं उपाध्याय श्री मान के जय-जयकार कर अपना हर्ष व्यक्त किया।

आचार्यश्री हीरा के तीन दशक के शासनकाल की प्रमुख-प्रमुख उपलब्धियाँ रखने से पूर्व यहाँ यह स्पष्ट करना प्रासङ्गिक होगा कि आचार्यप्रवर हों या कोई भी सन्त-सतीवृन्द ही क्यों न हों, वे जब भी प्रवचन करते हैं तो शास्त्रीय गाथाओं से सन्दर्भ लेकर संघ-समाज को ही नहीं, अपितु मानवता के व्यापक हित में प्रेरणा रूप प्रवचन करते हैं।

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की प्रेरणा के साथ संघ प्रमुखों की सकारात्मक सोच संयुक्त हो जाती है तो संघ और संघ की सहयोगी संस्थाओं के पोषण में, गतिविधियों के सञ्चालन में और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में उत्तरोत्तर सुधार होता ही है। उपलब्धि में चाहे व्यक्तिगत हों या स्थानीय संघ की अथवा केन्द्रीय स्तर की हों, सारी उपलब्धियाँ संघनायक के शासनकाल की ही होती हैं। यहाँ चन्द उपलब्धियों का विवरण-विवेचन संक्षेप में दिया जा रहा है-

1. संघ और संघ की सहयोगी संस्थाओं को सक्रिय-सक्षम स्वावलम्बी बनाने के साथ संघ की आत्मनिर्भरता के लिए सार्थक सद्-प्रयास

1. गजेन्द्र निधि ट्रस्ट की स्थापना।
2. गजेन्द्र फाउण्डेशन ट्रस्ट का श्रीगणेश।
3. आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना।
4. जिनवाणी प्रकाशन में लाभार्थी योजना।
5. साहित्य प्रकाशन-सहयोग।

2. संघ उन्नयन में सहायक संघों की आवश्यकता-पूर्ति में सफल प्रयास

आचार्य श्री हस्ती की प्रेरणा को साकार रूप मिला आचार्यश्री हीरा के शासनकाल में

1. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की स्थापना एवं टाउन हॉल, जोधपुर में 21 नवम्बर, 1991 को युवक परिषद् का सम्मेलन।
2. युवक परिषद् की शाखाओं का गाँवों तक विस्तार।
3. रत्नसंघ की भाँति युवक परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन तथा वार्षिक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन।
4. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का पुनर्गठन और शाखाओं का गाँव तक विस्तार।
5. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न विद्वत् परिषद् के अन्तर्गत संगोष्ठियों का सञ्चालन।

3. संघ में ज्ञानाभ्यास हेतु शिक्षण बोर्ड की स्थापना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की स्थापना एवं प्रतिवर्ष परीक्षाओं के आयोजन, पाठ्य-पुस्तकों का निर्धारण, पुस्तकों का प्रकाशन, परीक्षा-परिणाम एवं विशेष योग्यताधारी प्रतिभाओं को पुरस्कृत करने जैसे कार्य शिक्षण बोर्ड के सौजन्य से।

4. संघ-सेवा हेतु निर्मित बहु-उद्देशीय संस्थाएँ

1. श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत वात्सल्य निधि की स्थापना।
2. आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना का शुभारम्भ।

3. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र का गठन एवं नगरों-महानगरों में मोहल्ले-मोहल्ले तथा गाँवों में साप्ताहिक एवं दैनिक केन्द्रों का सञ्चालन।

5. संघ की प्रतिभाओं को प्रेरित-प्रोत्साहित और पुरस्कृत करने हेतु स्वागत-अभिनन्दन कार्यक्रम

1. आचार्यश्री हस्ती स्मृति सम्मान का शुभारम्भ।
2. युवा प्रतिभा-शोध-साधना-सेवा सम्मान का श्रीगणेश।
3. स्वाध्यायी सम्मान का विस्तार।
4. संघरत्न-सम्मान का शुभारम्भ।
5. संघ-सेवा शिरोमणि का चयन।
6. गुणी-अभिनन्दन कार्यक्रम को युक्ति संगत बनाने का प्रयास।

6. सामायिक-स्वाध्याय-साधना-सेवा के निमित्त विविध प्रवृत्तियों का शुभारम्भ

1. सामायिक-साधना की सतत और प्रभावी प्रेरणा।
2. युवकों को सामूहिक सामायिक-साधना से जोड़ने का कार्यक्रम आचार्यश्री के अजमेर चातुर्मास से।
3. आचार्यश्री-उपाध्यायश्री के जलगाँव संयुक्त-चातुर्मास में आचार्यश्री हीरा की प्रेरणा से 'भाऊ-मण्डल' की स्थापना एवं हजार से अधिक युवकों की साप्ताहिक सामूहिक सामायिक-साधना का अनूठा नज़ारा।
4. आचार्यश्री हीरा की प्रेरणा एवं मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के आह्वान पर महावीर जयन्ती का कार्यक्रम सामायिक-साधना से शुरु किया, वह निरन्तर गतिमान है।
5. स्वाध्याय शिविर, स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर एवं नये स्वाध्यायियों की संख्या वृद्धि के साथ उनकी पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना हेतु नियुक्तियाँ।
6. स्वाध्याय स्मारिका का समय-समय पर प्रकाशन।
7. ज्ञानाभ्यास के लिए श्राविकाओं, बालिकाओं एवं युवकों के लिए शिविर आयोजित करना।
8. ग्रीष्मावकाश में समय के सदुपयोग एवं संस्कार-निर्माण हेतु बालक-बालिकाओं हेतु शिविरों के आयोजन।
9. आचार्यश्री हीरा की प्रेरणा से गाँव-गाँव-, नगर-नगर और महानगरों तक धर्म स्थान पर आकर सामायिक-साधना करने की प्रवृत्ति में उत्तरोत्तर सुधार।
10. ध्यान-साधना शिविरों का समय-समय पर सफल आयोजन।

7. तपाराधन के कीर्तिमानों से संघ-दीप्ति

1. आचार्यश्री हीरा के चेन्नई चातुर्मास में तपस्विनी बहिन श्रीमती प्रकाशबाईजी धर्मपत्नी सुश्रावक श्री चैनरूपचन्दजी बाफना ने पूरे चातुर्मास काल में 121 दिन की तपस्या का कीर्तिमान कायम किया।
2. तपस्विनी बहिन बिन्दुजी (सुपुत्री सुश्राविका श्रीमती बीनाजी-श्री भागचन्दजी मेहता) ने कोसाणा चातुर्मास तक निरन्तर तप-साधना की एवं आचार्यश्री हीरा के पीपाड़ पधारने पर भी तपाराधन गतिमान रखकर 150 दिवसीय तप-साधना का कीर्तिमान कायम किया।
3. आचार्यश्री हीरा के चेन्नई चातुर्मास में पूरे चातुर्मास कार्यकाल में अखण्ड नवकार महामन्त्र के जाप से संघ-दीप्ति की दृष्टि से अनूठी उपलब्धि।
4. आचार्यश्री-उपाध्यायश्री प्रभृति सन्त-सतीवृन्द के चातुर्मास में प्राय: पचरङ्गी-नौरङ्गी-ग्यारहरङ्गी के साथ दया-संवर, उपवास-पौषध तथा आयम्बिल, एकाशन,

उपवास की लड़ी कई चातुर्मासों में होती है। बड़ी तपश्चर्याओं में मासखमण और मासखमण से ऊपर तक की तपस्याएँ होती हैं। प्रेरणा से तपाराधन के प्रति उत्साह जगता ही है। रत्नसंघीय चातुर्मासों में तपाराधन के प्रति सर्वत्र अच्छा वातावरण देखने में आता है।

5. तप के 12 भेदों में आभ्यन्तर तप के प्रति भी जन भावना देखने में आती है।

8. दीक्षा-महोत्सव के सफल आयोजन

आचार्यश्री हीरा के शासनकाल में अब तक 45 दीक्षा-महोत्सव के आयोजन सफल रहे हैं। अब तक 21 सन्त एवं 79 महासतियाँ रत्नसंघ में प्रव्रजित हुई हैं। विक्रम सम्वत् 2050 माघ शुक्ला दशमी, सोमवार, 21 फरवरी, 1994 को सवाईमाधोपुर में सात मुमुक्षु बहिनों ने भागवती दीक्षा अङ्गीकार की। एक साथ पुनः सात दीक्षाओं का सुयोग विक्रम सम्वत् 2055 वैशाख शुक्ला सप्तमी, शनिवार, 2 मई, 1998 को बना, जिसमें 4 मुमुक्षुभाई और 3 मुमुक्षु बहिनें थी।

आचार्यश्री हस्ती जन्म-शती के पावन-प्रसङ्ग पर बालोतरा, बेंगलोर, भरतपुर और चांगाटोला में ग्यारह विरक्ता बहिनों ने रत्नसंघ में दीक्षा अङ्गीकार की। 15 मई, 2010 को बालोतरा में पाँच, उसी दिन बेंगलोर में चार तथा एक दीक्षा भरतपुर में हुई। 23 मई, 2010 को एक मुमुक्षु बहिन ने मध्यप्रदेश में चांगाटोला में दीक्षा ग्रहण की।

निकट भविष्य में कतिपय अन्य दीक्षाओं की घोषणाएँ सम्भावित हैं।

9. सन्त-सतीवृन्द के अन्तिम मनोरथ-सिद्धि में संघनायक की शुभभावना से शासन प्रभावना

आचार्यश्री हीरा की अन्तर्मन की भावना रहती है कि रत्नसंघ के सन्त-सती संलेखना-संथारे के साथ समाधि-मरण का वरण करे। सन्त-सतीवृन्द भी पण्डित-मरण की शुभेच्छा रखते हैं। प्रायः रत्नसंघ में सन्त-मुनिराजों तथा महासतीवर्याओं की भावनाएँ साकार हुई हैं, लेकिन कतिपय संथारे हमारे संघ की यश-कीर्ति के लिए महत्त्व रखते हैं। उदाहरणार्थ हैं-

1. पण्डित रत्न श्री शुभेन्द्रमुनिजी म.सा. का 16 दिवसीय तप-संथारा 15 नवम्बर, 1995 को भोपालगढ़ में सीझा।
2. वयोवृद्धा महासती श्री सूरजकँवरजी म.सा. का ग्यारह दिवसीय चौविहार संथारा अजमेर में 27 नवम्बर, 1999 को सीझा। ग्यारह दिन का चौविहार संथारा पहले न देखा गया, न ही सुना गया, परन्तु वयोवृद्धा महासतीजी ने आत्मबल से एक कीर्तिमान बनाया।
3. साध्वीप्रमुखा-शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. का 16 दिवसीय संथारा 6 दिसम्बर, 2016 को जोधपुर में सींझा।
4. आचार्यश्री हीरा सावचेत अवस्था में संथारा करवाने के पक्षधर रहे हैं। वर्ष 1994 में साध्वीप्रमुखा-प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकँवरजी म.सा. को आचार्यश्री हीरा ने स्वयं 25 सितम्बर, 1994 को घोड़ों के चौक पधारकर पृच्छा की कि आपकी भावना हो तो संथारा करा दिया जाय। प्रवर्तिनीजी म.सा. उस समय अर्द्धचेतना में थे, अतः स्वीकृति नहीं दे सके। आचार्यश्री आवश्यक निर्देश उप-प्रवर्तिनीजी श्री लाडकँवरजी म.सा. को देकर एवं मांगलिक सुनाकर पुनः नेहरू पार्क पधारे। दोपहर में पुनः घोड़ों के चौक आकर देखा तो साध्वीप्रमुखाजी म.सा. ने हाथ जोड़कर संथारे की स्वीकृति दी। आचार्यश्री ने सागारी संथारे के प्रत्याख्यान करवाये, मांगलिक देकर नेहरू पार्क पधारे। 26 सितम्बर, 1994 को फिर प्रातःकाल आचार्यश्री ने पधार कर देखा कि प्रवर्तिनीजी म.सा. का धीरे-धीरे श्वास चल रहा है। आचार्यश्री ने चतुर्विध संघ की साक्षी से यावजज्जीवन चौविहार संथारा करवाया और यह उसी दिन सीझा। सावचेत अवस्था में संथारा करवाया जाता है यह बात प्रवर्तिनीजी म.सा. के प्रत्याख्यानों से सिद्ध हुई।

10. विविध उपलब्धियाँ

1. वृहद् एवं क्षेत्रीय सम्मेलनों के सफल आयोजन–आचार्यश्री हीरा के शासनकाल में वृहद् सम्मेलन का प्रथम आयोजन बेंगलोर में हुआ। बेंगलोर सम्मेलन से उत्साहित संघ सदस्यों ने आचार्यश्री हीरा के जयपुर चातुर्मास जो विक्रम सम्वत् 2040 में हुआ उसमें 2-3 अक्टूबर, 1993 को सुबोध महाविद्यालय परिसर में वृहद्-सम्मेलन का आयोजन हुआ। वृहद् सम्मेलन में 5000 संघ सदस्यों ने भाग लिया। परस्पर मिलने, परिचय करने, संघ के क्रियाकलापों की जानकारी पहुँचाने, संघोन्नति और शासन-प्रभावना में हमारा क्या दायित्व है, चिन्तन करने का अवसर तो मिला ही, संघ-सेवी सुश्रावकों को सम्मानित भी किया गया। आचार्यश्री हस्ती स्मृति सम्मान, युवा प्रतिभा-शोध-साधना-सेवा सम्मान भी प्रदान किए गए। जोधपुर में भी वृहद् सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ। क्षेत्रीय सम्मेलन कई स्थानों पर रखे गये। सम्मेलनों के माध्यम से परस्पर का प्रेम तो बढ़ा ही, संघोन्नति में स्वस्थ स्पर्धा-प्रतिस्पर्धा भी प्रारम्भ हुई अत: सम्मेलनों की सार्थकता सामने आई।

2. शीलव्रत के खन्द–आचार्यश्री हीरा की प्रेरणा और प्रभाव से अनेक दम्पतियों ने शीलव्रत अङ्गीकार किए हैं। आचार्यश्री के अतिशय प्रभाव से हजारों ने शीलव्रत अङ्गीकार कर अपने जीवन को पावन-प्रशस्त किया है। गुण सौरभ-गणिहीरा में 1724 शीलव्रतियों के नाम संकलित है। अब तक शीलव्रतियों की संख्या दुगनी हो चुकी है। स्थानकवासी परम्परा में सबसे ज्येष्ठ आचार्य के शासनकाल में शीलव्रतियों की लम्बी शृङ्खला है।

3. सामूहिक भोज में रात्रि भोजन के त्याग–आचार्यश्री हीरा के अतिशय-प्रभाव से सामूहिक भोज में रात्रि-भोजन त्याग की प्रेरणा साकार हो रही है। सैकड़ों संघ-सेवियों ने सामूहिक भोज में रात्रि-भोजन त्याग का आदर्श छोटे-छोटे गाँवों से लेकर नगरों-महानगरों तक में देखा जा सकता है। जोधपुर में सर्वाधिक सामूहिक भोज में रात्रि भोजन-त्याग करने वाले अधिकतर रत्नसंघीय गुरुभ्राता हैं। जोधपुर ही नहीं बड़े-बड़े नगरों-महानगरों में सामूहिक भोज के त्यागी बन्धु सर्वत्र हैं।

4. वीर परिवार सम्मेलन–रत्नसंघ में वीर परिवारजनों का स्वागत-सत्कार और बहुमान सदा से होता रहा है। दीक्षा महोत्सव पर तो वीर परिवारजनों का सार्वजनिक अभिनन्दन होता ही है, मगर वीर परिवार के सम्मानित सदस्य महानुभाव जहाँ भी जाते हैं उनका आदर होता ही है। वीर परिवार सम्मेलन प्राय: होते रहते हैं। जयपुर-जोधपुर जैसे स्थानों के अतिरिक्त भी अभी कुछ वर्ष पूर्व आचार्यश्री हीरा के मेड़ता चातुर्मास में वीर परिवारजनों का स्वागत-अभिनन्दन कार्यक्रम रत्नसंघ के नायक एवं सन्त-मुनिराजों के समक्ष परिचय होने से जनसमुदाय तक को वीर परिवारजनों का स्वागत-सत्कार का सौभाग्य मिला।

5. आयम्बिल-आराधना की प्रभावी प्रेरणा–आचार्यश्री हीरा जहाँ भी पधारते हैं प्राय: प्रेरणा करते हैं कि आयम्बिल की साधना से संकट नहीं आते। नगर में एक भी आयम्बिल होता हो तो नगर की रक्षा स्वत: होती है। विचरण-विहार में कई स्थानों पर आयम्बिल आराधना का श्रीगणेश हुआ, वह आज तक चल रहा है।

6. शादी-विवाह के प्रसङ्ग पर सीमित आयटम बनाने और विवाहोत्सव दिन में करने का प्रयास–आचार्यश्री हीरा ने दक्षिण भारत के प्रवास में सुना कि एक-एक विवाह में 100-125 आयटम्स बनते हैं। आचार्यश्री की प्रभावी प्रेरणा से चेन्नई-बेंगलोर-मैसूर आदि शहरों में शादी-विवाह दिन में होने प्रारम्भ हुए, साथ ही साथ खाने के सैकड़ों आइटमों में कमी भी देखने को मिलती है। समाज-सुधार की दृष्टि से आचार्यश्री हीरा की प्रेरणा के कारण मितव्ययता में वृद्धि हुई है।

7. दीक्षा-महोत्सव क्रीत की जगह पर नहीं

हो–आचार्यश्री हीरा ने विक्रम सम्वत् 2059 का चातुर्मास बालकेश्वर–मुम्बई में किया तो विक्रम सम्वत् 2065 का चातुर्मास कांदिवली–मुम्बई में किया। दो–दो वर्षावास का सुयोग मिलने पर भी मुम्बईवासियों को इस बात का मलाल रहा कि यहाँ एक भी दीक्षा नहीं हुई। पूज्य गुरुदेव के ध्यान में दीक्षा–महोत्सव की बात कही गई, तो पूज्यश्री ने स्पष्ट कह दिया कि हमारी समाचारी में किराये के स्थान पर दीक्षा नहीं करवायी जाती। ऋतम्भरा कॉलेज के ट्रस्टियों ने जब आचार्यश्री हीरा की बात सुनी तो समाज–सेवी, उदारमना दानवीर श्री दीपचन्दभाई गार्डी ने ट्रस्ट मण्डल के सदस्यों से कहा–ये महात्मा वीरभूमि राजस्थान के हैं, समाचारी–पालन की दृढ़ता के कारण नि:शुल्क भूखण्ड पर तो दीक्षा का आयोजन हो सकता है, अन्यथा नहीं।

ऋतम्भरा कॉलेज परिसर का ग्राउण्ड–कमरे–हॉल सभी खुले कर दिये गये और विक्रम सम्वत् 2065 वैशाख शुक्ला द्वितीय, बुधवार तदनुसार 7 मई, 2008 को दीक्षा कार्यक्रम घोषित कर दिया गया। मुम्बई महानगर में दीक्षा–महोत्सव अत्यन्त हर्ष–उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। तपस्वी श्री मोहनमुनिजी म.सा., महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा., महासती श्री भावनाजी एवं महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा. संयम–पथ पर अग्रसर हैं। आचार्यश्री हीरा का समाचारी–पालन की दृढ़ता से विशाल कॉलेज परिसर नि:शुल्क प्राप्त हुआ। तप और दान का विशिष्ट पर्व अक्षय–तृतीया का आयोजन भी ऋतम्भरा कॉलेज में सानन्द सम्पन्न हुआ।

8. सामायिक–साधना धर्मस्थान में आकर करें–आचार्यश्री हीरा धर्मस्थान में सामायिक करने की प्रेरणा करते रहते हैं। अनेकों श्रद्धालुओं ने धर्मस्थान में आकर सामायिक करने का नियम अङ्गीकार किया है। इस नियम की परिपालना के कारण चाहे गाँव हो या कस्बा, नगर हो या महानगर, अनेक स्थानों पर सामायिक–साधना करने वाले गुरुभक्त संख्या में चाहे कम ही क्यों न हो, धर्मस्थान पर पहुँचकर सामायिक करते हैं। सन्त–सती नहीं होने पर भी धर्मस्थान प्रतिदिन खुलता है, साफ–सफाई होती है और घर के स्थान पर धर्मस्थान में कोई विघ्न–बाधा भी नहीं आती।

आचार्यश्री हीरा के आस्थावान् भक्तों में उदारमना श्रीमन्त हैं, वे अपनी चञ्चल लक्ष्मी का उपयोग समाज–सेवा, जीवदया और परोपकारी कार्यों में करते रहते हैं।

–पारस, शिवशक्ति नगर रोड़ नं. 1, महामन्दिर तीसरी पोल के बाहर, जोधपुर–342010 (राजस्थान)

अंक एवं अक्षर के साधक

डॉ. दिलीप धींग

जिनवाणी (मई–जून 2021) में आपने अंक और अक्षर के साधक मनीषी सुश्रावक श्रीमान् सम्पतराजजी चौधरी (सी.ए.) के बारे में सारगर्भित श्रद्धाञ्जलि लेख लिखा तथा श्रद्धाञ्जलि स्वरूप ही उनकी कविता प्रकाशित की। आपकी, जिनवाणी की यह प्रासङ्गिक दृष्टि अनुमोदनीय है।

आचार्य हस्ती–स्मृति–स्मान (2010) से विभूषित श्री चौधरी साहब ने देव–गुरु–धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा को रचनात्मक बनाया। जीवन के उत्तरार्द्ध में उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में जो कार्य किया, वह सुखद आश्चर्यजनक और सबके लिए प्रेरणादायी है। पूज्य आचार्यश्री हस्ती के अप्रकाशित साहित्य को प्रकाश में लाने में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। यह कार्य उन्होंने शोधदृष्टि, निष्ठा और समर्पण से किया। काव्य–रचना की तरह निबन्ध, विवेचन आदि में भी वे निपुण थे। जब भी मैं उनकी साहित्य–साधना की अनुमोदना करता तो वे सारा श्रेय पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री हस्ती को देते। साथ ही वे वर्तमान आचार्यप्रवर का शुभाशीष एवं मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. के मार्गदर्शन का उल्लेख करना कभी भी नहीं भूलते थे।

यह उनकी सरलता ही थी कि मुझसे मित्रवत् स्नेह रखते थे। सही बात कहने का उनका साहस प्रभावित करता था।

–उमराव सदन, बम्बोरा, उदयपुर (राजस्थान)

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 34
ISSN 2249-2011

शोधालेख

राजीमतीचरित्र की विकास यात्रा : तुलनात्मक विवरण

रेखा जैन (शोधार्थी)

भारतीय संस्कृति में आत्मोन्नयन, तप, त्याग तथा ध्यान-साधना के क्षेत्र में जैन साधिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आर्यिका ब्राह्मी, सुन्दरी, सीता, राजीमती से चन्दना इत्यादि साध्वियों के त्याग, तपस्या, सहनशीलता और शील-रक्षा के साहसी व्यक्तित्व जिनशासन की प्राणशक्ति के अनुकरणीय उदाहरण हैं। जैसा तप-त्यागमय, निष्परिग्रही रूप जैनधर्म की साधिकाओं का मिलता है, वैसा अन्यत्र प्राप्त नहीं होता है। इसका स्पष्ट प्रमाण जैनागम ग्रन्थों में उपलब्ध इनकी गौरव-गाथा है।

जैनधर्म में प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान तक श्राविकाओं की और विशेषत: आर्यिकाओं की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रही, जहाँ एक ओर इन्होंने अपने शील को संरक्षित किया, वहीं दूसरी ओर आध्यात्मिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया। साधना में इन नारियों का अटूट विश्वास रहा और उसको ही अपने जीवन का ध्येय समझा।

जैन नारियों का उत्तरोत्तर उत्थान में ही विश्वास रहा है। राजकुल एवं उच्चवर्ग में जन्म लेकर सामन्ती-संस्कृति में पालित-पोषित होने पर भी उन्होंने अपने व्यक्तित्व को चिन्तन-मनन और सम्यक्-विवेक से निखारा तथा प्रतिष्ठित मानवी बनकर युग-युग को भी सँवारती रही हैं।

जैन नारी की महत्ता का प्रतीक इसके नारीत्व में अन्तर्निहित गुणों का अतुल वैभव है। ये नारियाँ अपनी गौरव विकास-परम्परा का विकास-सूत्र प्राचीनतम युग के स्वर्णिम अभ्युत्थान के समय से ही ग्रहण करती रही हैं। इनके जीवन-चरित्र भारतीय संस्कृति की अमरता और अखण्डता के द्योतक हैं। आज भी ये सन्नारियाँ संस्कृति की प्राणधारा बनकर वर्तमान भौतिकवादी-युग में अपनी व्यापक प्रेरणा का स्रोत प्रवाहित कर रही हैं। सभी युगीन समस्याओं का समाधान इनके उज्ज्वल चरित्र में उपलब्ध होता है। इन सन्नारियों के सामाजिक एवं धार्मिक चेतना के सक्रिय अवदान को बताने के लिए राजीमतीचरित्र को प्रतीक रूप में उद्घाटित किया जा रहा है।

भगवान नेमिनाथ और कृष्णकालीन अनेक धर्मपरायणा महिलाओं के चरित्र जैन परम्परा में निबद्ध हैं, जिनमें से राजीमती, रुक्मिणी, सुभद्रा, द्रौपदी आदि के चरित्र-विशेष महत्त्व के हैं। इनमें राजीमती का चरित्र शील सम्पन्न, संघर्षमयी, स्वाभिमानी, आदर्श-अनुकरणशीला आदि विशेषताओं के साथ वर्णित है।

जैनपरम्परा में प्राप्त राजीमती का संक्षिप्त कथानक इस प्रकार है-वसुदेव कृष्ण के निवेदन पर राजीमती का विवाह कृष्ण के चचेरे भाई नेमिकुमार के साथ निश्चित होता है। दोनों परिवारों में विवाह की तैयारी धूमधाम से होती है, किन्तु नेमिकुमार की बरात द्वारिका नगरी के राजा उग्रसेन के द्वार पर पहुँचने से पूर्व ही लौट जाती है। इसमें निमित्त बनती है, बारातियों के भोज के लिए बाड़े में रोककर रखे गये, भय से संत्रस्त प्राणियों के देखने से नेमिकुमार के मन में उत्पन्न वैराग्य की भावना। नेमिकुमार विवाह का परित्याग कर गिरनार पर्वत पर जाकर आत्म-साधना में लीन हो जाते हैं।

नेमिकुमार की विरक्ति की बात सुनकर स्तब्ध राजीमती भी जिन-दीक्षा लेना ही उचित समझती है। उसे अनेक राजकुमारों द्वारा विवाह का प्रस्ताव प्राप्त होता है तथा माता, पिता आदि स्वजनों द्वारा भी उसे बहुत समझाया जाता है, किन्तु वह नयी परम्परा का सूत्रपात करते हुए नेमिकुमार का अनुसरण कर दीक्षा की ओर अग्रसर हो जाती है।

राजीमतीचरित्र की विकास यात्रा

जैनसाहित्य में उपलब्ध राजीमती कथानक की विकासयात्रा का प्रारम्भ उत्तराध्ययनसूत्र से माना जाता है, जिसके बाईसवें अध्ययन में वर्णित रथनेमि-राजीमती कथा अरिष्टनेमि के जीवन का महत्त्वपूर्ण अङ्ग है। यद्यपि यह कथा अत्यन्त संक्षिप्त है, किन्तु इसका सम्प्रेषण तीव्र है। इस कथा में निम्नाङ्कित उद्देश्य स्पष्ट हैं-

1. अरिष्टनेमि की पशुओं के प्रति अपार करुणा का प्रकट होना, मांसाहार का प्रकारान्तर से निषेध तथा पशु-रक्षण का भाव प्रतिपादित करना।
2. अरिष्टनेमि की वैराग्य भावना एवं अनासक्ति को प्रकट करना।
3. राजीमती का भावी पति के प्रति प्रेम एवं अटूट सम्बन्ध सीमित करना तथा प्रकारान्तर से शीलव्रत को दृढ़ करना।
4. रथनेमि को ब्रह्मचर्य-भाव से च्युत होने की स्थिति में राजीमती द्वारा उसे प्रतिबोधन देकर पुनः श्रमणचर्या में दृढ़ करना।

उक्त संक्षिप्त-प्रसङ्गों के अनुसार इस कथानक का परवर्ती साहित्य में पर्याप्त विकास हुआ है, जिसे निम्नाङ्कित बिन्दुओं में देखा जा सकता है-

श्वेताम्बर ग्रन्थों में उपलब्ध राजीमती-कथानक का विकास

श्वेताम्बर परम्परा के ग्रन्थों में नेमि-राजीमती के साथ रथनेमि का प्रसङ्ग मुख्यतः प्राप्त होता है। इस कथानक का प्रारम्भ अर्धमागधी प्राकृत में रचित **उत्तराध्ययनसूत्र** से होता है। इसके पश्चात् ईसा की नौवीं सदी में जयसिंहसूरि ने **धर्मोपदेशमाला-विवरण** नामक प्राकृत ग्रन्थ की रचना की।[1] इस ग्रन्थ की दूसरी कथा में शील का फल बताने के लिए राजीमती की कथा वर्णित हुई है। इसमें राजीमती के विवाह महोत्सव के साथ ही साथ पर्वत की गुफा में वसन रहित राजीमती और रथनेमि का संवाद वर्णित हुआ है। राजीमती के उपदेश का वर्णन भी है।[2] इसके पश्चात् नौवीं सदी में आचार्य शीलांक द्वारा रचित **चउपन्नमहापुरिसचरियं** में अरिष्टनेमिचरित के अन्तर्गत राजीमती का प्रसंग उपलब्ध होता है। इसमें वर्णित है कि राजीमती उग्रसेन की पुत्री, सत्यभामा की सहोदरा और अत्यन्त रूपवती थी।[3] नेमिनाथ के साथ विवाह निश्चित होने पर भी उनकी विरक्ति के कारण विवाह नहीं हो पाता है।

तदुपरान्त बारहवीं शताब्दी के आस-पास देवेन्द्रसूरि विरचित **कण्हचरियं** में कृष्णचरित के अतिरिक्त राजीमती का जन्म, नेमिनाथ और राजीमती का विवाह-निर्धारण, नेमिनाथ के विवाह की तैयारी, नेमिनाथ के विवाह किये बिना ही मार्ग से लौट जाने, उनकी विरक्ति, रथनेमि और राजीमती के संवाद आदि प्रसङ्ग उत्तराध्ययन की तरह वर्णित हैं। हरिभद्रसूरि रचित नेमिनाहचरिउ में भी रथनेमि सहित राजीमती कथानक मिलता है। इसमें राजीमती के जन्म-वृत्तान्त[4] के बाद सत्यभामा द्वारा नेमि को विवाह हेतु प्रेरित कर स्वीकृति प्राप्त करना तथा श्रीकृष्ण से अपनी छोटी बहिन राजीमती और नेमि के विवाह का प्रस्ताव रखना,[5] श्रीकृष्ण का उग्रसेन के पास अपने अमात्य द्वारा राजीमती-नेमि-विवाह का प्रस्ताव भेजना, उग्रसेन की स्वीकृति, विवाह से पूर्व राजीमती और उसकी सखियों का संवाद, राजीमती के शृङ्गार-सौन्दर्य का वर्णन, उग्रसेन के द्वार पर बारात का पहुँचना, बाड़े में एकत्र किये गये जानवरों को नेमिकुमार द्वारा देखा जाना और उनके वैराग्य का प्रसङ्ग वर्णित है। वैराग्य का समाचार सुनकर राजीमती विरह से सन्तप्त होती है। यहाँ उसके विरह का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। राजीमती द्वारा वीतरागमार्ग का अनुसरण, रथनेमि से भेंट, कामासक्त रथनेमि द्वारा राजीमती से भोग-याचना, राजीमती द्वारा रथनेमि को उद्बोधन और दोनों का तप-साधना के माध्यम से मोक्ष-प्राप्ति की ओर अग्रसर होना वर्णित है।

मलधारी हेमचन्द्रसूरि (विक्रम सम्वत् 1170)

द्वारा रचित भव-भावना में हरिवंश कुल की उत्पत्ति को दस आश्चर्यों में गिनाया है। इसके अधिकांश भाग में नेमिनाथ का चरित्र वर्णित है। तत्पश्चात् राजीमती का जन्म, राजीमती वर्णन, राजीमती के विवाह की तैयारियाँ, बारात का आगमन, पशुओं का चीत्कार, नेमिनाथ का बिना विवाह किये लौट जाना, राजीमती का विलाप एवं उसके दीक्षा ग्रहण आदि का विशद वर्णन किया गया है।[6] वाग्भट्ट कृत नेमि-निर्वाणम् में अरिष्टनेमि को देखकर राजीमती के हृदय में प्रेमाकर्षण की उत्पत्ति होती है तथा वह वर के स्वागतार्थ अक्षत, कुंकुम, दूर्वा, दधि और मलयज से परिपूर्ण स्वर्ण-पात्र लेकर प्रस्तुत होती है। इनके अतिरिक्त कीर्तिराज उपाध्याय कृत नेमिनाथचरित (सम्वत् 1495) में भी प्रमुख वर्णनों सहित राजीमती कथानक उपलब्ध होता है। राजीमती-प्रबोध नाटक में रथनेमि प्रसङ्ग का अभाव है।

दिगम्बर ग्रन्थों में उपलब्ध राजीमती-कथानक का विकास

इस कथानक का विकास सर्वप्रथम हरिवंशपुराण में उपलब्ध होता है। इसमें राजीमती के पिता का नाम राजा उग्रसेन है तथा वे जूनागढ़ के राजा थे। साथ ही यह भी कहा गया है कि नेमिकुमार के संवाद से प्रभावित होकर राजीमती संन्यास के लिए तत्पर हुई थी और उनकी शिष्या बनकर राजीमती ने तपस्विनी-जीवन धारण किया था। हरिवंशपुराण आदि दिगम्बर ग्रन्थों में रथनेमि के प्रसङ्ग का उल्लेख नहीं है।

अपभ्रंश साहित्य में सर्वप्राचीन रचनाएँ 9वीं शताब्दी के महाकवि स्वयंभू की उपलब्ध होती हैं। इन्होंने **रिट्ठणेमिचरिउ अपरनाम हरिवंशपुराण** की रचना की है। इसमें राजीमती के प्रसंग में वर्णित है कि कृष्ण नेमिकुमार को द्वारिकानगरी दिखाने के बहाने, वे उन्हें वहाँ लाते हैं, जहाँ राजीमती ठहरी हुई है और उन्हें राजीमती की सुन्दरता की ओर आकृष्ट करते हैं।[7] किन्तु, वे राजीमती की सुन्दरता की ओर आकृष्ट न होकर मार्ग में बाँधकर रखे गये मृग आदि पशुओं को देखकर संसार से विरक्त हो जाते हैं तथा तप करके केवलज्ञान की प्राप्ति करते हैं। अनन्तर, राजीमती भी चालीस हजार आर्यिकाओं के साथ प्रव्रजित हो जाती है।[8] इस काव्य में राजीमती-नेमि-विवाह के प्रसङ्ग का अभाव है तथा राजीमती का विरक्ति-प्रसङ्ग भी वर्णित नहीं है।

सोलहवीं शताब्दी से पूर्व की एक अन्य रचना लक्ष्मणदेव कृत **णेमिणाहचरिउ** है, जिसकी दूसरी और तीसरी सन्धि में राजीमती कथानक के प्रसङ्ग मिलते हैं। इनमें क्रमशः श्रीकृष्ण द्वारा गिरनार के राजा उग्रसेन से पुत्री राजीमती की नेमिकुमार के लिए माँग, राजीमती का सौन्दर्य वर्णन, उग्रसेन द्वारा विवाह की तैयारी, राजीमती का शृङ्गार-वर्णन, पशु-क्रन्दन, विरह-वर्णन, राजीमती द्वारा आत्म-चिन्तन एवं सखियों द्वारा राजीमती की विरह-व्यथा वर्णित है। पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी के मध्य महाकवि रइधू ने भी नेमिणाहचरिउ नामक अपने ग्रन्थ में राजीमती का वर्णन किया है। इसमें उन्होंने गिरनार के निवासी उग्रसेन की पुत्री राजीमती को कृष्ण द्वारा नेमिकुमार के लिए माँगा जाना, विवाह के लिए जाते समय एक बाड़े में घिरे हुए भयाकुल तिर्यञ्चों को नेमिकुमार के द्वारा देखा जाना, उनके मन में विरक्ति उत्पन्न होने से वैराग्य धारण करना, राजीमती का रोना-कल्पना और अन्त में विरक्त होकर स्वयं वैरागी होना वर्णित है।

आचार्य गुणभद्र और महाकवि पुष्पदन्त का नाम प्रथम एवं अन्तिम है, जिन्होंने राजीमती को **मथुरा की** राजकुमारी बताया है। इन दोनों की रचनाओं में राजीमती के माता-पिता का नाम क्रमशः जयवतीदेवी और उग्रसेन उल्लिखित है[9] तथा उग्रसेन को मथुरा का राजा बताया गया है।[10] उत्तरपुराण में यह भी वर्णित है कि नेमिकुमार के साथ राजीमती के विवाह की प्रारम्भिक प्रक्रिया एक सजे हुए मण्डप में लोक परम्परानुसार

विधिवत् पूर्ण हुई थी।[11]

राजीमती का विवाह नेमिनाथ के साथ होना निश्चित होता है, किन्तु नेमिनाथ विवाह के लिए जाते हुए मार्ग में ही भोज के निमित्त बँधे पशुओं के करुण-क्रन्दन को सुनकर मोक्षमार्ग में अग्रसर हो जाते हैं। राजीमती के सन्दर्भ में इसके बाद का विवरण वर्णित नहीं है।

कुछ अन्य संक्षिप्त-प्रसङ्गों के माध्यम से भी राजीमती कथानक की विकास यात्रा को देखा जा सकता हैं, वे निम्न प्रकार से द्रष्टव्य हैं-

नेमिनाथ के विवाह न करने के कारण

उत्तराध्ययनसूत्र में नेमिनाथ के विवाह से पूर्व वैराग्य का कारण पशुओं के प्रति करुणाभाव के अतिरिक्त कोई अन्य प्राप्त नहीं होता है। इसी तरह हरिवंशपुराण में भी नेमिनाथ के विवाह से पूर्व वैराग्य का विशेष कारण नहीं दिया गया है, जबकि राजीमती प्रबोध में वर्णित है कि कृष्ण की भार्या नेमि को कहती है- तुम्हारे विवाह न करने का क्या कारण हो सकता है? इसके उत्तर में कहा गया है-क्या आपके अनुरूप कन्या का अभाव है? क्या समस्त लोक की स्त्रियों में दु:शीलता की सम्भावना है? या समस्त स्त्री जाति जुगुप्सनीय है? हे नेमिकुमार! युवतियों के द्वारा वह वन्दनीया होगी, जो तुम्हारे वचन-भुवन को मण्डित करती हो तथा दु:शीला भी न हो। अतएव इस भगवती वसुधा पर आपके अनुरूप कन्या अवश्य ही होगी। तुम्हारा इस अवस्था में विरागी रहना उचित नहीं है तथा हे नेमि! तुम्हारे लम्बे कर्ण कुण्डल के बिना सुशोभित नहीं होते।

वैरागी नेमिनाथ को विवाह हेतु सहमत करने का प्रयास

उत्तराध्ययनसूत्र में अरिष्टनेमि का संक्षिप्त परिचय देने के पश्चात् तुरन्त वाग्दान की बात की जाती है। यहाँ पर यह दर्शाया गया है कि वह विवाह से पूर्व भी विरक्त थे तथा इन्हें प्रयत्नपूर्वक विवाह के लिए सहमत किया गया, जबकि परवर्ती साहित्य में श्रीकृष्ण की पत्नियाँ सत्यभामा, रुक्मिणी आदि के द्वारा नेमिनाथ को मानसिक रूप से विवाहार्थ तैयार करने के लिए रागमय वातावरण बनाया गया है। हरिवंशपुराण में वर्णित है कि मनुष्य की मनोवृत्ति का हरण करने वाली श्रीकृष्ण की स्त्रियाँ पति की आज्ञा पाकर वृक्षों और लताओं से रमणीय वनों में नेमिकुमार के साथ चञ्चल क्रीड़ा करने लगीं।[12]

कितनी ही स्त्रियाँ साल और तमाल वृक्ष की छोटी-छोटी टहनियों से पँखों के समान उन्हें हवा करने लगी, कितनी ही अशोक वृक्ष के नए-नए पल्लवों से कर्णाभरण अथवा सेहरा बनाकर पहनाने लगी। कोई अपने आलिङ्गन की इच्छा से नाना प्रकार के फूलों से निर्मित माला उनके सिर पर पहनाने लगी, कोई गले में डालने लगी और कोई सिर का लक्ष्य कर कुरबक के पुष्प फेंकने लगी।[13] यद्यपि नेमिनाथ स्वभाव से ही रागरूपी पराग से पराङ्मुख थे, तथापि श्रीकृष्ण की स्त्रियों के अनुरोध से वे शीतल जल से भरे हुए जलाशय में जलक्रीड़ा करने लगे।[14] जब श्रीकृष्ण को विदित हुआ कि अपनी स्त्रियों के निमित्त से नेमिनाथ को कामोद्दीपन हुआ है, तब वे अत्यधिक हर्षित हुए।[15]

राजीमती-प्रबोध नाटक में भी वैरागी-नेमिनाथ का विवाह हेतु सहमति का प्रसङ्ग वर्णित है। इसमें नेमिनाथ की माता का कथन है कि श्रीकृष्ण कुछ ऐसा करें, जिससे नेमिनाथ पाणिग्रहण को सहमत हो जाएं, यही हमारा मनोरथ है। तदनन्तर श्रीकृष्ण की पत्नियों के द्वारा मदनविकार उत्पन्न करने का प्रयत्न किया गया।

रिट्ठणेमिचरिउ में उल्लिखित है कि विवाह की सहमति हेतु श्रीकृष्ण नेमिकुमार को द्वारिका नगरी दिखाने के बहाने लाकर राजीमती को दिखाते हैं और उसकी सुन्दरता की ओर आकृष्ट करते हैं।[16]

जैनमेघदूतम् में नेमिनाथ की विवाह की सहमति

हेतु कहा गया है कि जब नेमिकुमार लीलोपवन में जलकेलि कर उसमें से निकले, तब उनकी अप्रतिम शोभा दिखाई दे रही थी।[17] जलार्द्र वस्त्रों का त्यागकर रुक्मिणी द्वारा प्रदत्त आसन पर बैठने के पश्चात् श्रीकृष्ण की पत्नियाँ, श्रीकृष्ण स्वयं एवं बलदेव आदि सभी श्रीनेमि को पाणिग्रहण हेतु बहुत समझाते हैं।[18] अपने ज्येष्ठ एवं आदरणीय जनों के वचनों का तिरस्कार तथा निरादर न करते हुए श्रीनेमि उन समस्त अग्रजों की आज्ञा शिरोधार्य कर लेते हैं।[19]

तदनन्तर श्रीकृष्ण द्वारा योग्यकन्या को ढूँढ़ने का प्रयत्न किया जाने लगा और नेमिकुमार के साथ विवाह हेतु अनुपम रूप-गुणसम्पन्ना राजीमती का चयन किया गया।

राजीमती की मँगनी तथा वाग्दान

उत्तराध्ययनसूत्र में वासुदेव केशव राजीमती को नेमिनाथ की भार्या बनाने के लिए राजा उग्रसेन से याचना करते हैं।[20] राजीमती सर्वलक्षणों से सम्पन्न, विद्युत् और सौदामिनी के समान दीप्तिमती राजकन्या थी।[21] राजीमती के पिता उग्रसेन ने श्रीकृष्ण से कहा-कुमार यहाँ बारात लेकर आयेंगे तो मैं उन्हें अपनी कन्या दूँगा।[22]

हरिवंशपुराण में भी श्रीकृष्ण ने नेमिनाथ के लिए विधिपूर्वक भोजवंशियों की कुमारी राजीमती की याचना की तथा स्वीकृति होने पर पाणिग्रहण संस्कार के लिए बन्धुजनों के पास सूचना प्रेषित की।[23] पाण्डवपुराण में भी उल्लेख है कि श्रीकृष्ण ने नेमिनाथ के साथ पाणिग्रहण हेतु राजा उग्रसेन और रानी जयावती की कन्या राजीमती की याचना की।[24]

उत्तरपुराण में भी इसप्रकार वर्णन प्राप्त होता है- श्रीकृष्ण मथुरा के राजा[25] उग्रसेन और रानी जयावती की सर्वांगसुन्दर पुत्री राजीमती की नेमि के साथ विवाह के लिए याचना करते हैं। उग्रसेन की स्वीकृति के उपरान्त राजीमती का विवाहोत्सव प्रारम्भ होता है। विवाह-मण्डप में एक स्वर्ण चौकी पर नेमिकुमार को राजीमती के साथ गीले चावलों पर बैठाकर विवाह का नेग पूर्ण किया गया।[26] यहाँ पर विवाह का दस्तूर, दूल्हा-दुलहिन का गीले चावलों पर बैठना तत्कालीन समाज-संस्कृति का प्रतिबिम्ब है।

महाकवि पुष्पदन्त के महापुराण में वर्णित है कि राजीमती का विवाह नेमिनाथ के साथ होना निश्चित होता है और श्री कृष्ण के द्वारा राजीमती के हाथ में सन्तोष-दान के साथ अँगूठी रख दी जाती है।[27]

राजीमती-प्रबोध में उक्त वर्णन से थोड़ा भिन्न वर्णन उपलब्ध होता है। यहाँ पर कहा गया है कि श्रीकृष्ण की पत्नी सत्यभामा के द्वारा उग्रसेन की पुत्री राजीमती को नेमिकुमार के योग्य बताया जाता है तथा विचक्षणा प्रमुख को राजीमती को देखने के लिए भेजा जाता है।[28]

नेमिनिर्वाण ग्रन्थ में वर्णित है कि राजीमती बसन्त ऋतु में अपनी माता के साथ जलक्रीड़ा के लिए जाती है, जहाँ वह नेमिनाथ को देखकर काम-बाणों से विद्ध हो जाती है। इसी बीच श्रीकृष्ण की याचना पर उसका विवाह नेमिनाथ के साथ निश्चित होता है।

जैनमेघदूतम् में श्रीनेमि की स्वीकृति प्राप्त होने पर श्रीकृष्ण सहर्ष महाराज उग्रसेन से राजीमती को श्रीनेमि के साथ पाणिग्रहण हेतु माँगते हैं।[29] महाराज उग्रसेन राजीमती के साथ श्रीनेमि का विवाह स्वीकार कर लेते हैं। अनन्तर श्रीनेमि के विवाह का सुसमाचार ज्ञात होने पर राजा समुद्रविजय और शिवादेवी अत्यन्त प्रसन्न होते हैं।

बारात का प्रस्थान

उत्तराध्ययनसूत्र में बारात प्रस्थान के सम्बन्ध में कहा गया है कि अरिष्टनेमि ऊँचे छत्र तथा चामर से सुशोभित थे और श्रीकृष्ण के सर्वश्रेष्ठ मस्त गन्धहस्ती पर आरूढ़ थे।[30] वे दशार्हचक्र अर्थात् यदुवंश के प्रमुख क्षत्रियों से परिवृत्त थे।[31] त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में वर्णित है कि वाद्यों से नभमण्डल गूँज रहा था। नेमिकुमार

श्वेत घोडों के रथ पर आरूढ़ थे[32] और चतुरङ्गिणी सेना के साथ उनकी बारात आगे बढ़ी जा रही थी। वह विवाह-मण्डप के पास आयी, राजीमती ने दूर से अपने भावी पति को देखा, वह अत्यन्त प्रसन्न हुई।[33] हरिवंशपुराण में भी कहा गया है कि नेमिनाथ का विवाह वर्षा ऋतु में हुआ था, ध्वजा-पताकाओं से सुशोभित सूर्य के रथ के समान देदीप्यमान एवं चार घोड़ों से जुते रथ पर सवार हो अनेक राजकुमारों के साथ वनभूमि की ओर चल दिए। तदनन्तर प्रसन्नता से युक्त राजीमती तथा नगर की स्त्रियों ने अपने प्यासे नेत्रों से उनके शरीर रूपी जल का पान किया।[34]

जैनमेघदूतम् में बारात-प्रस्थान के प्रसङ्ग में उल्लिखित है कि सम्पूर्ण नगर में विवाह सम्बन्धी तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई। विवाह-मण्डप नाना तरह से सजाया गया। दिन-रात मधुर वाद्ययन्त्र एवं यदुस्त्रियों के अविश्रान्त-स्वर गुञ्जरित हो रहे थे। वर-वधू दोनों ही पक्षों में पधारे अतिथियों का यथाविधि स्वागत सत्कार हो रहा था। तत्पश्चात् श्रीनेमि मतवाले राजगज पर आरूढ़ होकर अपने सभी सम्बन्धी-परिजन के साथ विवाह हेतु चल पड़े। हाथी, घोड़े, रथ पर सवार यादव वीर श्रीनेमि के आगे-आगे चल रहे थे, नाना प्रकार के वाहनों पर सवार यादवों की स्त्रियाँ पीछे-पीछे चल रही थीं। पैदल-सेना हाथ में खुली तलवार को ऊपर किये हुए नेमिनाथ के बगल से चल रही थी।[35] विवाह हेतु सुसज्जित श्रीनेमि की शोभा को देखने हेतु पुरवासी अत्यन्त व्यग्र थे।[36]

अवरुद्ध पशु-पक्षियों को देखकर नेमिनाथ का तोरण से वापस लौटना

उत्तराध्ययनसूत्र के वर्णन से अनुमान होता है कि तत्युगीन क्षत्रियों में मांसाहार का प्रचलन था। राजा उग्रसेन ने बारातियों के भोजन के लिए सैकड़ों पशु-पक्षी एकत्रित किए थे। वर के रूप में जब अरिष्टनेमि वहाँ पहुँचे तो उन्हें बाड़े में बन्द किए पशुओं का करुण-क्रन्दन सुनायी दिया। उनका हृदय दया से द्रवित हो गया।[37]

अरिष्टनेमि ने सारथि से पूछा- हे महाभाग! ये सब सुखार्थी जीव बाड़ों और पिंजरों में क्यों डाले गये हैं।[38] सारथि ने कहा-ये समस्त मूक प्राणी आपके विवाह-कार्य में आए हुए व्यक्तियों के भोजन के लिए हैं।[39] करुणामूर्ति अरिष्टनेमि ने सोचा-मेरे कारण से इन बहुत से जीवों का मारा जाना मेरे लिए कल्याणप्रद नहीं होगा।[40] यह विचार कर उन्होंने अपने कुण्डल, कटिसूत्र आदि सभी आभूषण उतार कर सारथि को दे दिए।[41] त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में कहा गया है कि अरिष्टनेमि ने पशुहिंसा का कारण जानकर अपने सारथि से कहा- रथ को वापिस ले चलो, मुझे इस प्रकार का हिंसाकारी विवाह नहीं करना है।[42] श्रीकृष्ण आदि परिजनों के समझाने पर भी वे नहीं माने और बिना विवाह किए ही लौट गये।[43]

चउपन्नमहापुरिसचरियं में कहा गया है कि विवाह-महोत्सव के दिन अपने परिजनों एवं अन्य बारातियों के साथ नेमिकुमार सज-धजकर प्रस्थान कर वहाँ पहुँचते हैं, जहाँ क्रन्दन करते हुए अनेक पशुओं को बाँधकर रखा गया था।[44] सारथि से पूछने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि इन सारे पशुओं के मांस को विवाह-मंगल के बाद होने वाले भोज में बारातियों को परोसा जायेगा। यह सुनकर नेमिकुमार अत्यन्त दु:खी हुए। उन्होंने सारथि से सभी पशुओं को बन्धन मुक्त करवा दिया।[45]

उत्तरपुराण और हरिवंशपुराण में इससे भिन्न वर्णन प्राप्त होता है। इन पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण ने नेमिनाथ को विरक्त करने के लिए बाड़ों में हिरणों को एकत्रित करवाया था। श्रीकृष्ण ने विचार किया कि नेमिकुमार वैराग्य का कुछ कारण पाकर भोगों से विरक्त हो जायेंगे। ऐसा सोचकर वे वैराग्य का कारण जुटाने का प्रयास करने लगे। उनकी समझ में एक उपाय आया, उन्होंने शिकारियों द्वारा अनेक मृगों को पकड़वाया और

उन्हें एक स्थान पर इकट्ठा कर दिया। चारों ओर बाड़ा बनवा दिया, वहाँ रक्षक नियुक्त कर दिए। उन रक्षकों को कह दिया कि नेमिकुमार दिशाओं का अवलोकन करने के लिए आये और इन मृग-समूह के सम्बन्ध में पूछे तो उनसे स्पष्ट कह देना कि आपके विवाह में मारने के लिए चक्री ने यह मृगों का समूह एकत्र किया है।[46]

भय से व्याकुल दीन मृगों को देखकर नेमिनाथ ने दयावश वहाँ के रक्षकों से पूछा-पशुओं का यह इतना बड़ा समूह एक स्थान पर क्यों, किसलिए रोका गया है?[47] रक्षकों ने कहा-देव! आपके विवाहोत्सव में मांसाहार करने के लिए यहाँ पशुओं का निरोध किया गया है।[48] मृगों के हितैषी भगवान् शीघ्र ही मृगों को मुक्त कर लौट आए।[49] आचार्य मेरुतुंग ने भी लगभग ऐसा ही उल्लेख किया है।

जैनमेघदूतम् में श्रीनेमि के माता-पिता तथा श्रीकृष्ण आदि ने श्रीनेमि को अश्रुपूर्ण-नेत्रों से देखते हुए उनके इस चिराभिलषित विवाहोत्सव से अकस्मात् निवृत्त होने का कारण पूछा और श्रीकृष्ण ने कहा कि पशु-पक्षियों पर तो तुम करुणा दिखा रहे हो, पर बन्धुओं के लिए निर्दय हो, शरीर को कष्ट देकर तो तुम मुक्ति के कामी हो, परन्तु कुलीन राजीमती को स्वीकार करने के अनिच्छुक हो।[50] इस प्रकार बार-बार आग्रह करने पर श्रीनेमि ने श्रीकृष्ण आदि सभी को यह कहकर निवारित कर दिया कि ''इस दीक्षा के बिना कोई भी स्त्री संसार की बाधाओं को दूर नहीं कर सकती है, जिसका परिणाम सदैव सुखकारी हो। अतएव मैं कर्मपाश से बँधे हुए समस्त प्राणियों को इन्हीं पशुओं के समान मुक्त करूँगा।''[51]

विरही राजीमती-कथानक का विकास

पन्द्रहवीं शताब्दी में विक्रम कृत नेमिदूतम् तथा मेरुतुंग कृत जैनमेघदूतम् के पश्चात् इस कथानक का विकास हिन्दी की रचनाओं में देखने को मिलता है। हिन्दी में प्राप्त रचनाओं में राजीमती को राजुल नाम से कहा गया है। हिन्दी रचनाओं में इस कोटि की महत्त्वपूर्ण रचना चंदागीत है।[52] इसमें विरही राजुल दूत के रूप में चन्द्रमा को इंगित कर उज्ज्वल गिरि (उर्जयन्त पर्वत) के विषय में बताते हुए अपनी विरह-व्यथा का वर्णन करती है।[53] कुछ अन्य रचनाओं में वह सखियों के समक्ष अपनी विरह-व्यथा व्यक्त करती हुई तथा उन सखियों को दूत बनाकर नेमि की स्थिति जानने का प्रयास करती हुई दिखाई पड़ती है।[54] विरह की विविध भाव दशाओं, स्वप्न, प्रलाप, उन्माद आदि के वर्णन रत्नकीर्ति की रचनाओं में अनेक स्थलों पर प्राप्त होते हैं। विनयचन्द्रसूरि कृत नेमिनाथ चउवइ प्रथम बारहमासा है, जिसमें बारह माह की सुन्दर योजना मिलती है। यह सावन मास से प्रारम्भ होकर आषाढ़ मास तक चलता है। इसमें सखी और राजुल के संवाद के माध्यम से कवि ने बारह महीनों में राजुल के विरही हृदय का अत्यन्त स्वाभाविक एवं संवेदनात्मक दृश्य प्रस्तुत किया है।

अरिष्टनेमि द्वारा प्रव्रज्या ग्रहण से सम्बद्ध संवाद

उत्तराध्ययनसूत्र में दीक्षा न लेने के सम्बन्ध में कोई संवाद नहीं होता है। यहाँ पर अरिष्टनेमि भयग्रस्त एवं अत्यन्त दुःखी प्रणियों को देखकर तुरन्त मन में दीक्षा लेने का विचार करते हैं तथा दीक्षाग्रहण करके केवलज्ञान प्राप्त करते हैं।[55]

कण्हचरियं में विवेचित है कि बलराम और कृष्ण उन्हें विवाह के लिए मनाते हैं, किन्तु किसी भी प्रकार तैयार नहीं होते हैं और अपने घर चले जाते हैं।[56] चउपन्नमहापुरिसचरियं में भी वर्णित है कि अपने परिजनों से पूछकर तथा राजीमती के अनुराग को छोड़कर उर्जयन्त उद्यान में चले गये।[57]

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में उल्लेखित है कि माता-पिता द्वारा पूछे जाने पर नेमिकुमार विरक्ति का कारण व्यक्त करते हुए दीक्षा-ग्रहण की अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं।[58] श्रीकृष्ण उन्हें समझाने का बहुत प्रयास करते हैं, किन्तु वे असफल ही रहते हैं। नेमि की विरक्ति

सुनकर राजीमती मूर्च्छित हो जाती है और चेतन होने पर शोकग्रस्त विलाप करने लगती है। नेमि को छोड़कर दूसरे के साथ परिणय का निषेध कर वह नेमि के ध्यान में निमग्न रहती हुई समय व्यतीत करने लगती है।[59] तदनन्तर नेमिकुमार दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं।

हरिवंशपुराण में दीक्षाग्रहण के पूर्व श्रीकृष्ण आदि परिजनों का संवाद होता है। श्रीकृष्ण आदि ने दीक्षा के लिए इच्छुक नेमिकुमार को समझाने का अत्यन्त प्रयत्न किया, किन्तु वे सभी असफल रहे। यदुवंशी और भोजवंशी आदि कोई भी उन्हें दीक्षा-संकल्प से डिगा नहीं सके।[60]

राजीमती प्रबोध में भी कहा गया है कि विवाह-मण्डल से वापस घर आकर नेमिकुमार का दीक्षा-ग्रहण से पूर्व समुद्रविजय, शिवादेवी, उग्रसेन, वसुदेव, श्रीकृष्ण, बलभद्र, रुक्मिणी और राजीमती के साथ हृदय-विदारक संवाद वर्णित है।[61]

राजीमती का श्रीनेमि को मनाने का प्रयास

इस कथानक का विकास विशेष रूप से दूतकाव्यों में दृष्टिगोचर होता है। जहाँ राजीमती अपनी सखियों के साथ श्रीनेमि को मनाने जाती है। इनके मध्य जो संवाद होता है, वह अत्यन्त ही हृदय-विदारक है।

श्रीनेमिकुमार के साथ विवाह की सम्भावना से राजीमती के चेहरे पर जो गुलाबी खुशियाँ छायी हुई थी, वे प्रभु के लौट जाने पर गायब हो गयीं, वह अपने भाग्य को कोसने लगी, उसे बहुत ही दु:ख हुआ। अरिष्टनेमि उसके हृदय में बसे हुए थे, माता-पिता और सखियों ने समझाया-अरिष्टनेमि चले गए तो क्या हुआ? बहुत से अच्छे वर प्राप्त हो जायेंगे, किन्तु उसने दृढ़ता के साथ कहा-विवाह का बाह्य रीतिरस्म भले ही न हुआ हो, किन्तु अन्तरङ्ग हृदय से मैंने उन्हें वर लिया है, अब मैं आजन्म उन्हीं स्वामी की उपासना करूँगी।[62]

उक्त प्रसङ्गों के तुलनात्मक अध्ययन से निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि राजीमती वह नवयौवना है जो अन्तरङ्ग में सुहाने सपनों का उपहार लेकर तोरण-द्वार पर सोलह शृङ्गार में सजी-धजी वरमाला लिए हुए खड़ी हुई थी, लेकिन अचानक सब कुछ बिजली की चमक की भाँति समाप्त हो जाता है। वहाँ खुशमय वातावरण शीघ्रता से शोकमग्न हो जाता है। सभी हतप्रभ देखते रह जाते हैं। कुछ समय पूर्व तक जिसको विश्व की सर्वाधिक भाग्यशाली कन्या का गौरव प्राप्त हो रहा था, वही राजीमती बेचारी हतभागिनी हो गई। बारात का लौट जाना युवती के जीवन की दुर्भाग्यतम घटना है। राजीमती का जीवन कठिनतम परीक्षा की घड़ी बन गया। एक ओर घर में रहकर दिन-रात रोना-धोना, घुटन, सिसकी और व्यथा सहित जीवन व्यतीत करना, वहीं दूसरी ओर संयम, त्याग और आत्मकल्याण का मार्ग स्वीकृत करना। इस प्रकार विचार करके राजीमती ने दृढ़ निश्चय किया और सारा शृङ्गार उतार कर चल पड़ी उसी पथ पर जिस पर अभी-अभी नेमिकुमार गए थे।

राजीमती का जीवन हमारे वर्तमान जीवन के लिए विशेष प्रेरणादायक है। आज स्त्री की शिक्षा के क्षेत्र में पहले की अपेक्षा अधिक प्रगति हुई है, परन्तु इस बहिर्मुखी-ज्ञान से जीवन में इन्द्रियों की भोगों के प्रति विशेष आकर्षण और पारिवारिक जीवन में ईर्ष्या, द्वेष, कलह, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि काषायिक वृत्तियों से उत्पन्न तनाव अधिक बढ़ा है। मन अधिक चञ्चल और अशान्त बना है। लौकिक स्तर पर फैशन-परस्ती एवं दिखावे की ही भाँति और धार्मिक आडम्बरों में भी विशेष वृद्धि हुई है। इसका मुख्य कारण कष्ट-सहिष्णुता, परदु:ख-कातरता, साहस, उदारता, साधना एवं समर्पण जैसे गुणों का अभाव देखा जा रहा है।

राजीमती-चरित्र द्वारा संसार की स्त्रियों को यह भी शिक्षा मिलती है कि संकुचित और अपवित्र प्रेम की अपेक्षा विशाल और पवित्र प्रेम को प्रमुखता देना चाहिए। पति से केवल सांसारिक भोग भोगने के लिए ही प्रेम मत करो, किन्तु पति के उचित कार्य का अनुकरण करने के

लिए प्रेम करो, फिर चाहे ऐसा करने में तुम्हें सांसारिक भोग-विलास को तिलाञ्जलि ही क्यों न देनी पड़े।

दूसरी ओर राजीमती का चरित्र इसके लिए भी मार्ग-दर्शक है कि कोई परपुरुष किसी स्त्री का सतीत्व हरण करना चाहे, तो उस समय स्त्री का क्या कर्तव्य है? राजीमती ने रथनेमि को दो बार उपदेश देकर शील की रक्षा की थी। इन दोनों प्रसङ्गों में अन्तिम बार तो एकान्त का विषम अवसर था जहाँ पुरुष से स्त्री के लिए अपने शील की रक्षा करना अत्यन्त कठिन था। लेकिन उस समय भी राजीमती ने शील-रक्षा की और अपना साहस नहीं त्यागा।

रथनेमि-राजीमती का प्रसङ्ग भारतीय नारी चरित्र के उस उदात्त रूप का निदर्शन करा रहा है, जो स्वयं को भी सम्भालती है और बिना किसी आक्रोश के अपने ऊपर विकारीभाव करने वाले को भी सम्भालती है। नारी उच्चकोटि की शिक्षिका और उपदेशिका रही है। उपदेशों में हृदय की मधुरिमा के साथ मार्मिकता भी छिपी रहती है। यहाँ राजीमती ने रथनेमि को जैसे प्रतिबोधित किया है, वैसा ही वर्तमान में प्रत्येक स्त्री करने लगे, तो समाज में व्याप्त भयावह समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। इससे यह भी स्पष्ट है कि 'अबला' कही जाने वाली नारी में यदि शील, संयम और शक्ति के सञ्चार का विकास हो जाये, तो मानसिक पवित्रता निश्चित ही उदित हो सकेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. इय जय-पयड-कण्हमुणि-सीस-जयसिंहसूरिणा।
धम्मोवएसमाला-विवरणमिह विमल-गुण-कलियं।।
- धर्मोपदेशमाला की प्रशस्ति, गाथा, 31
2. प्राकृत साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 430
3. तेणावि सयलतेलोयललामभूया वरिया उग्गसेण-धूया सच्चभामासहोयरा अच्चंतरूव-जोव्वणोहसियसुरसुंदरी रायमती णाम कण्णया।।
-चउप्पनमहापुरिसचरियं, पृष्ठ 192
4. सिरि-उग्गसेणह निवह, धारिणीए देवीए कुच्छिहिं।
अवयरिऊण धूयत्तणिण, जायउ पवर-दिणम्मि।
ता सुय-जम्मम्मि व निविण किइ वद्धावणयम्मि।।
-नेमिनाहचरिउ, हरिभद्रसूरि, कडवक, 2922-2923
5. एत्थ-अंतरि सच्चहामाए विन्नत्तउ हरिपुरउ नाह अत्थि मह लहुय भइणिय। राईमइ नाम निय-रूप-विजिय-तइलोय-तरुणिय।। -नेमिनाहचरिउ, कडवक, 3000
6. .....निवउग्गसेनणस्स। देवीएँ धारिणीए धूआ वररूवकलड्ढरब्भूआ।
कयसयलहिअयहरिसा संपायवियगुणगणक्करिसा।
तो पुत्ताओ वि अहिआ वड्ढइ सा ताण मंदिरे बाला।
पंचहिं धाईहिं जुआ पिऊहिं राइमइकयनामा।।...
-भव-भावना स्वोपज्ञवृत्ति, पृष्ठ, 195-268, श्री ऋषभदेव केशरीमलजी जैन, श्वेताम्बरसंस्था, जामनगर, वि.सं.1992 / प्राकृत साहित्य का इतिहास, पृष्ठ, 437 पर उद्धृत।
7. पवणुद्धत धय मालाउल णिएवि मणोहर वारवइ।
का विहि कुमारू घरू एसइ, थिय पसाहणे राइमइ।।
-रिट्ठणेमिचरिउ, सन्धि 96/9/9
हरि दक्खवइ देव तुहारी, दीसइ उह राइमइ भडारी।
-रिट्ठणेमिचरिउ, सन्धि 96/12/8
8. राइमइए सहुं तियहुं पगासइ, पव्वइयइं चालीस सहासइं।।
-रिट्ठणेमिचरिउ, सन्धि 99/19/8
9. तणुलायण्णवण्णसंपण्णी जयमइदेविउयरि उप्पण्णो।
मग्गिउ उग्गसेणु सुवियक्खण रायमइ त्ति पुत्ति सुहलक्खण।
-महापुराण, सन्धि 88/22/12-13
10. पत्थिव माहवेण महुरावइघरु गंपिणु सराहहो।
-महापुराण, सन्धि 88/23/1
11. पंचरत्नमयं रम्यं समानयदनुत्तरम्।
विवाहमण्डपं तस्य मध्यस्थे जगतीतले।।
नवमुक्ताफलालोलरंगवल्लीविराजिनि।
मंगलामोदि पुष्पोपहारासारविलासिनी।।
विस्तृताभिनवानर्घ्यवस्त्रे सौवर्णपट्टके।
वध्वा सह समापार्द्रतण्डुलारोपणं वरः।।
-उत्तरपुराण, 71/149-151
12. पतिनिदेशजुषो हरियोषितो मुषितमानवमानसवृत्तयः।
सह विजुरधीश्वरनेमिना तरुलतारमणीयवनेषु ताः।।
-हरिवंशपुराण, 55 सर्ग, श्लोक 44
13. विटपकैरपि सालतमालजैर्व्यजनकैरिव काश्चिदवीजयन्।
विदधुरस्य परास्त्ववतंसकश्रियमशोकतरोर्नवपल्लवैः।।

विरचितां कुसुमैर्विविधै: स्रजं निजपरिष्वजनस्पृहया परा।
शिरसि मालयति स्म गले परा कुरवकान्यपरा शिरसेऽकिरत्।।
-हरिवंशपुराण, 55 सर्ग, श्लोक 47-48

14. हरिवधूनिवहैरुपरोधत: प्रकृतिरागपरागपराङ्गमुख:।
शिशिरवारिणि तत्र जलास्पदे जलविहारमसेवत तीर्थकृत्।।
-हरिवंशपुराण, 55 सर्ग, श्लोक 51

15. कृतपरिष्वजन: स्वजनै: स तं समभिपूज्य युवानमगाद्गृहम्।
स्वयुवतिं प्रति दीपितमन्मथं समवबुध्य हरिर्मुमुदेऽधिकम्।।
- हरिवंशपुराण, 55 सर्ग, श्लोक 71

16. पवणुद्धत धय मालाउल णिएवि मणोहर वारवइ।
का विहि कुमारू घरू एसइ, थिय पसाहणे राइमइ।।
-रिट्ठणेमिचरिउ, सन्धि 96/9/9

17. तस्योत्तंसीकृतशतदले तोयबिन्दुन् वमन्ती, वभ्रासाते विरुतनिरतालोलरोलम्बचुम्ब्ये।। हा! त्रैलोक्यप्रभुनयनयो: स्पर्धनादेनसां नौ, वृत्ते पात्रं प्ररुदित इतोवानुतप्ते सशब्दम्।।
-जैनमेघदूतम्, आचार्य मेरुतुंग, तृतीय सर्ग/ 1-2

18. ओमित्युक्त्याऽप्यखिलतनुमन्मोदनं तद्विधातुं किं कौसीद्यं विदुर इव तव तद्वर्तिनोऽन्येऽप्यवोचन्।।
-जैनमेघदूतम्, आचार्य मेरुतुंग, तृतीय सर्ग/ 20

19. दु:खादास्यं दरविकसिताम्भोजयन्नाबभाषे माधुर्याध:कृत-मधुसुधं सम्मतं वो विधास्ये।।
-जैनमेघदूतम्, आचार्य मेरुतुंग, तृतीय सर्ग/21

20. वज्जरिसहसंघयणो समचउरंसो झसोयरो। तस्स राईमइं कन्नं भज्जं जायइ केसवो।।
- उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 22, गाथा 6

21. अह सा रायवरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी।
सव्वलक्खणसंपन्ना विज्जुसोयामणिप्पभा।।
-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 22, गाथा 7

22. अहाह जणओ तीसे वासुदेवं महिड्ढियं।
इच्छागच्छऊ कुमारो जा से कन्नं दलामिहं।।
-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 22, गाथा 8

23. सविधियाचित भोजसुताकरग्रहणहेतुविबोधितबान्धव:।
नरपतीन् सकलान् सकलत्रकानकृत सन्निहितान् कृतगौरव:।।
-हरिवंशपुराण, 55 सर्ग, श्लोक 72

24. उग्रसेननरेन्द्रस्य जयावत्याश्च देहजाम्।
राजीमतीं यायचे स नेमिपाणिग्रहेच्छया।।
-पाण्डवपुराण, 22सर्ग, श्लोक 41

25. क्रमेणैव तप: कुर्वन्नागमन्मधुरापुरीम्।
तत्र मासोपवासी सन्नातपं योगमाचरन्।।
अथान्येद्युर्विलोक्यैनमुग्रसेनमहीपति:।
-उत्तरपुराणम्, पर्व, 70.331-332

26. उत्तरपुराण, 71/149-151

27. ...कंचणपंकयकेसरवण्णहि, अंगुत्थलउ छुट्ठु करिकण्हहि।
-महापुराण, सन्धि 88/22-23

28. अज्ज रयणीय पभासियं सच्चभामाए देवस्स उग्गसेण-नरिन्द-धूया अच्चुद्भूयरूवाराईमईजुग्गा नेमिकुमारस्स। तओ देवेण तद्दंसणत्थं पेसिओ वियक्खणापमुहो लोगो।
- राजीमती प्रबोध, तृतीय अंक

29. दुग्धाम्भोधिं त्रिदशतटिनीत्यादिभि: सामवाक्यै: श्रीनेम्यर्थं झगिति च स मद्वीजिनं मां ययाचे।।
-जैनमेघदूतम्, आचार्य मेरुतुंग, तृतीय सर्ग/24-28

30. मत्तं च गन्धहत्थिं वासुदेवस्स जेट्ठगं आरूढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणि जहा।।
-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 22, गाथा 17

31. अह ऊसिएण छत्तेण चामराहि य सोहिए।
दसारचक्केण य सो सव्वओ परिवारिओ।।
-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 22, गाथा 17

32. आरुहरोहारिष्टनेमि: स्यन्दनं श्वेतवाजिनम्।
-त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, 8/9, श्लोक 149

33. त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, 8/9, पृष्ठ 187

34. पृथुरथं चतुरश्वयुतं तदा ध्वजपताकिन मर्करथप्रथम्।
समाधिरुह्य सनेमियुवान्वितो नृपसुतैश्चलितो वनभूमिकाम्।।
मुदितभोजसुतानगराङ्गनातृषितनेत्रनिपीतवपुर्जल:।
विपुलराजपथेन स तैरगात् सकृपयेव मनोहरदर्शन:।।
- हरिवंशपुराण, 55 सर्ग, श्लोक 81-82

35. अग्रेऽभूवन् करिहरिरथारुढवृष्णिप्रवीरा,
नानायानाधिगतगतयो वीरपत्न्यश्च।
उत्कोशासिप्रहरणभृत: पत्तय: पार्श्वदेशे,
प्रत्यावृत्ते: प्रकृतिविरतस्यास्य भीत्येव मार्गात्।।
-जैनमेघदूतम्, आचार्य मेरुतुंग, तृतीय सर्ग/34

36. पौरैर्गौराननरुचिभरैर्हूतिकर्मान्तरेणैतव्यं,
नैवाप्यधिकरुचिकैरित्युपादिश्यतेव।।
-जैनमेघदूतम्, आचार्य मेरूतुंग, तृतीय सर्ग, श्लोक 35

37. अह सो तत्थ निज्जन्तो, दिस्स पाणे भयद्दुए।
वाडेहिं पंजरेहिं च सन्निरुद्धे सुदुक्खिए।।
-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 22, गाथा 14

38. कस्स अट्ठा इमे पाणा एए सव्वे सुहेसिणो।
वाडेहिं पंजरेहिं च सन्निरुद्धा य अच्छेहिं।।
–उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 22, गाथा 16 एवं उत्तराध्ययन सूत्र, सुखबोधा टीका, पत्र 279
39. उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 22, गाथा 17
40. उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 22, गाथा 19
41. सो कुंडलाण जुयलं सुत्तगं च महायसो।
आभरणाणि य सव्वाणि सारहिस्स पणामए।।
–उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 22, गाथा 20
42. ततो नेमिर्दयावीरो बभाषे निजसारथिम्।
यत्रैते प्राणिनः सन्ति स्यन्दनं नय तत्र मे।।
–त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, 8/9, श्लोक 175
43. शिवा समुद्रविजयः कृष्णो रामोऽपरेऽपि हि।
विहाय स्वस्वयानानि नेमिनः पुरतोऽभवन्।
–त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, 8/9, श्लोक 181
44. पत्तो तमुदेसं जत्थ निरुद्ध सस-पसव-संवराइणो चिट्ठंति।
–चउप्पनमहापुरिसचरियं, पृष्ठ 192
45. त्ति भणिऊण सारहि मोयाविओ पसुगणो।
–चउप्पनमहापुरिसचरियं, पृष्ठ 193
46. निर्वेदकारणं किंचिन्निरीक्ष्यैष विरंस्यति।
भोगेभ्य इति संचित्य तदुपायविधित्सया।।
व्याधाधिषैर्धृतानीतं नानामृगकदम्बकम्।
विधायैकत्र संकीर्णां वृत्तिं तत्परितो व्यधात्।।
अशिक्षयच्च तद्रक्षाध्यक्षान्यदि समीक्षितुम्।
दिशो नेमीश्वरोऽभ्येति भवद्भिः सोऽभिधीयताम्।।
त्वद्विवाहे व्ययीकर्तुं चक्रिणैष मृगोत्करः।
समानीत इति व्यक्तं महापापोपलेपकः।।
–उत्तरपुराण, 71 सर्ग, श्लोक 154-157
47. किमर्थमिदमेकत्र निरुद्धं तृणभुक्कुलम्।
इत्यन्वयुङ्क्त तद्रक्षानियुक्ताननुकम्पया।।
–उत्तरपुराण, 71 सर्ग, श्लोक 160 एवं 161
48. देवैतद्वासुदेवेन त्वद्विवाहमहोत्सवे।
व्ययीकर्तुमिहानीतमित्यभाषन्त तेऽपि तम्।।
–उत्तरपुराण, 71 सर्ग, श्लोक 163 एवं हरिवंशपुराण, 55 सर्ग, श्लोक 88
49. लघु विमुच्य मृगान् मृगबांधवो नृतसुतैः प्रविवेश पुरं प्रभुः।
सपदि तत्र नृपासनभूषणं नुनुवुरेत्य पुरेव सुरेश्वराः।।
–हरिवंशपुराण, 55 सर्ग, श्लोक 104
50. कारुण्यौकश्चरिषु विधृणो बन्धुतायां सुतृष्णक्,
मुक्तौ मूर्त्तिद्विषि कुलकनीस्वीकृतौ वीततृष्णः....।।
–जैनमेघदूतम्, आचार्य मेरुतुंग, तृतीय सर्ग, श्लोक 47
51. नर्तेऽर्तीनां नियतमवरावावरीमां तपस्यां,
यस्योदर्कः सततसुखकृत्यकृत्यमर्ध्यं सतां तत्।
दामत्कर्मप्रसितभविनो मोचयिष्ये चरीन् वा,
नेमिः प्रत्यादिशदिति हरिं भूरि निर्बन्धयन्तम्।।
–जैनमेघदूतम्, आचार्य मेरुतुंग, तृतीयसर्ग, श्लोक 48
52. भट्टारक रत्नकीर्ति एवं कुमुदचंद्र : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व, कस्तूरचंद कासलीवाल, जयपुर, पृष्ठ 224
53. भूषण मार करे घणूं चंदा, वही, पृष्ठ 224
54. शुभचन्द्र की रचनाएँ एवं कुमुदचन्द्र-आवो री सहेली जइए यादव धणी।
–द्रष्टव्य, भट्टारक रत्नकीर्ति एवं कुमुदचन्द्र : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व, कस्तूरचन्द कासलीवाल, जयपुर।
55. उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 22, गाथा 28-32
56. मोयाविऊण पसुणो पहू नियत्तो तओ य पियरेहिं।
हरिरामेहि य भणिओ न मन्नए कहवि वीवाहं।।
पत्तो सगिहं ..।। –कण्हचरियं, गाथा 729-730
57. अवमण्णिऊण गरुयाणुरायणिब्भरं रायमइं,
...पत्तो य ..रेवयमुज्जाणं ।
–चउप्पनमहापुरिसचरियं, पृष्ठ 193
58. यथैषां बन्धनान्मोक्षः कृतस्तद्ववत्तमात्मनः।
कर्तुं दीक्षामुपादास्ये सौख्याद्वैतनिबन्धनम्।।
–त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, 8.9.184
59. इत्थं कृतप्रतिज्ञा सा प्रतिषिध्य सखीजनम्।
कालं निनाय ध्यायन्ती नेमिमेवोग्रसेनजा।।
–त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित 8.9.235
60. जिगमिषु तपसे जिनमादृता हरिपुरःसरभोजयदूत्तमाः।
अनुनयैर्न निरोद्धुमलं तदा प्रबलसिंहमिवोद्धृतपंजरम् ।।
–कण्हचरियं, गाथा 729-730
61. राजीमती प्रबोध, पाँचवाँ अंक
62. नेमिर्जगत्त्रयोत्कृष्टः कोऽन्यस्तत्सदृशो वरः।
सदृशो वास्तु किं तेन, कन्यादानं सकृत् खलु।।
–त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, पर्व, 8, सर्ग 9, श्लोक 231

–जैनदर्शन विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर, त्रिवेणी नगर, जयपुर-302017 (राज.)

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 45
ISSN 2249-2011

तत्त्व-बोध

श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति एवं जीव

डॉ. ओ. पी. चपलोत

जैनदर्शन के अनुसार जीव में आहार आदि का परिणमन करने की विशेष शक्ति को पर्याप्ति कहा गया है। पर्याप्ति छह हैं-आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन पर्याप्ति। जीव की यह विशेष शक्ति है जिससे वह लोक में फैले हुए औदारिक अथवा वैक्रिय पुद्गल ग्रहण करके उक्त छह पर्याप्तियों में परिणत करता है। इन पर्याप्तियों में श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति से जीव श्वासोच्छ्वास योग्य सूक्ष्म पुद्गलों को ग्रहण कर उन्हें श्वास और उच्छ्वास रूप में परिणमन करता है। यदि जीव स्वयोग्य पर्याप्ति को पूर्ण कर लेता है तो वह पर्याप्त कहलाता है और स्वयोग्य पर्याप्ति को पूर्ण नहीं कर पाता है वह अपर्याप्त कहलाता है।

संसार के समस्त प्राणी श्वासोच्छ्वास लेते हैं और छोड़ते हैं। सभी जीवों में श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया शरीर धारण के साथ होती है। देवगति में यह प्रक्रिया लम्बी अवधि में सम्पन्न होती है। श्वास लेने और छोड़ने के तीन उपकरण हैं-

1. नाक से श्वास लेना।
2. मुँह से श्वास लेना और
3. रोम से श्वास लेना।

त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय जीव उक्त तीनों से श्वास लेते हैं। बेइन्द्रिय मुँह तथा रोम से श्वास लेते हैं। एकेन्द्रिय जीव मात्र रोम से श्वास लेते हैं।

त्रस और अन्य जीवों का श्वासोच्छ्वास

श्वास लेना और छोड़ना दोनों मिलकर श्वासोच्छ्वास बनता है। जिनकी तीन प्रक्रियाएँ हैं। पूरक (लेना) कुम्भक (रोककर रखना) और रेचक (छोड़ना) प्रक्रिया कहलाती है। साँस छोड़ने के बाद पुन: न लेने तक का काल रिक्तक कहलाता है।

देवताओं में अनुत्तरविमानवासी देवों के श्वास लेने और छोड़ने का काल अन्तर्मुहूर्त्त है, किन्तु कुम्भक और रिक्तक का काल 33-33 पक्ष है। मनुष्य और तिर्यञ्चों का काल भिन्न-भिन्न है। जहाँ पूरक और रेचक अधिक हैं वहाँ वेदना भी अधिक होती है तथा जहाँ कुम्भक और रिक्तक का काल अधिक है वहाँ साता अधिक होती है।

काल द्रव्य को श्वासोच्छ्वास द्वारा नापा गया है। सात प्राण का एक स्तोक, सात स्तोक का एक लव, 77 लव का एक मुहूर्त्त होता है। एक मुहूर्त्त में 3773 श्वासोच्छ्वास होते हैं। एक बार श्वास लेने और छोड़ने को एक प्राण श्वासोच्छ्वास कहा गया है।

स्थावर और अन्य जीवों का श्वासोच्छ्वास

जीवों के श्वासोच्छ्वास के विषय में भगवतीसूत्र शतक 2 के उद्देशक 1 में विस्तृत वर्णन है जो मननीय है। गौतम स्वामी ने प्रश्न किया है कि हे भगवन्! पृथ्वी कायादि स्थावर जीवों का चैतन्य, आगम प्रमाण से सिद्ध है, किन्तु उनमें श्वासोच्छ्वास होता है या नहीं? क्योंकि जैसे-मनुष्य, पशु आदि का श्वासोच्छ्वास प्रत्यक्ष ज्ञात होता है उस तरह से पृथ्वीकायिक आदि स्थावर जीवों का श्वासोच्छ्वास प्रत्यक्ष ज्ञात नहीं होता। प्रश्न स्वाभाविक है, क्योंकि पृथ्वीकायिक आदि स्थावर जीवों के दो भेद हैं-सूक्ष्म और बादर। सूक्ष्म जीव को तो छद्मस्थ के द्वारा देखा जाना भी सम्भव नहीं है, किन्तु उनका चैतन्य गुण तो आगम प्रमाण से सिद्ध है एवं यदि वे जीव हैं तो वे श्वासोच्छ्वास भी अवश्य लेते ही होंगे। इस प्रकार की शंका का एक और मुख्य कारण है कि मेंढ़क आदि कुछ जीव ऐसे हैं जिनका श्वास बहुत समय तक रुका हुआ दिखाई देता है एवं बहुत अन्तराल से उनके द्वारा श्वास लिया जाता है। अत: स्थावर जीवों के

श्वास लेने के विषय में शंका होना स्वाभाविक और सुसंगत है।

इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु महावीर ने फरमाया कि गौतम! पृथ्वीकायिक स्थावर जीव भी बाह्य और आभ्यन्तर श्वासोच्छ्वास लेते हैं और छोड़ते हैं। फिर शंका होती है कि वे जीव श्वासोच्छ्वास रूप में किन पुद्गलों को ग्रहण करते हैं तथा वे किस प्रकार के होते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में पन्नवणा सूत्र के अठाईसवें आहार पद में यह बतलाया गया है कि वे पुद्गल दो वर्ण वाले, तीन वर्ण वाले यावत् पाँच वर्ण वाले होते हैं। वे एक गुण वाले यावत् अनन्त गुण वाले होते हैं। इसके साथ ही प्रभु ने यह भी फरमाया कि यदि व्यवधान नहीं हो तो वे छहों दिशाओं से श्वासोच्छ्वास के पुद्गलों को ग्रहण करते रहते हैं और यदि व्यवधान हो तो, कदाचित् तीन दिशाओं से कदाचित् पाँच दिशाओं से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

वायुकाय का श्वासोच्छ्वास

इस विषय में गौतम स्वामी द्वारा व्यक्त शंका का समाधान करते हुए प्रभु महावीर ने फरमाया कि जो वायुकायिक जीव हैं वे रोममात्र से श्वास के ही पुद्गल ग्रहण करते हैं, वायुकाय के पुद्गल नहीं लेते, क्योंकि वायु वायु को रोम से नहीं खींच सकती है। वायुकाय से जिनकी अवगाहना छोटी है वे भी रोम से मात्र श्वास पुद्गल लेते हैं। वायुकाय जीव है इसलिए उसे भी श्वासोच्छ्वास की आवश्यकता रहती है। किन्तु जो वायु श्वासोच्छ्वास के रूप में ग्रहण होती है, वह निर्जीव है। ये निर्जीव पुद्गल औदारिक और वैक्रिय शरीर के पुद्गलों की अपेक्षा अनन्त गुणा प्रदेश वाले होने से सूक्ष्म हैं। इसलिए श्वासोच्छ्वास रूप वायु जड़ है, जो जीव के काम आने वाली मुख्य आठ वर्गणाओं में से एक महत्त्वपूर्ण वर्गणा है, जिसे विज्ञान प्राणवायु (प्राण ऑक्सीजन) कहता है।

इसी प्रकार अन्य स्थावर जीव भी श्वासोच्छ्वास के पुद्गल रूप ही श्वास के रूप में ग्रहण करते हैं।

क्या श्वासोच्छ्वास के पुद्गल जीव हैं?

श्वासोच्छ्वास के रूप में जीवों द्वारा जो वायुकाय के पुद्गल ग्रहण किये जाते हैं वे निर्जीव हैं अत: उन पुद्गलों को श्वासोच्छ्वास की आवश्यकता नहीं रहती है। ये पुद्गल अनन्त सूक्ष्म होते हैं। ये पुद्गल चैतन्य वायु के शरीर रूप नहीं हैं।

कबूतर एक मिनिट में 34 बार, चिड़िया 30 बार, बतख 22 बार, कुत्ता 28 बार, घोड़ा 26 बार, बकरी, 24 बार, बिल्ली तथा कच्छुआ 5 बार, सर्प 19 बार, हाथी 22 बार, मनुष्य 15 बार श्वासोच्छ्वास लेता है, इसलिए कच्छुए चार-चार सौ वर्ष के पाये जाते हैं।

नारकीय जीव निरन्तर श्वासोच्छ्वास लेते हैं। जो जीव अत्यन्त दु:खी हैं वे निरन्तर श्वास लेते हैं और छोड़ते हैं।

-377, के वन रोड़, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु प्रस्ताव आमन्त्रित

आगामी साधारण सभा में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर एवं संघीय संस्थाओं के अध्यक्ष का मनोनयन हेतु आप अपने प्रस्ताव बन्द लिफाफे में माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत (संयोजक-संघ संरक्षक मण्डल), मुणोत विला, वेस्ट कम्पाउण्ड फील्ड लेन, 63-के भूला भाई देसाई रोड़, मुम्बई-400026 (महाराष्ट्र) के पते पर भिजवाने का कष्ट करावें।

-धनपतसेठिया, महामन्त्री

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 47
ISSN 2249-2011

युवा-स्तम्भ

युवा पीढ़ी का आहार के प्रति रवैया

श्री त्रिलोकचन्द जैन

जीवन एक अन्तर्देशीय लिफाफे की तरह है, जो कि एक, दो और तीन मोड़ देने के बाद पोस्ट कर दिया जाता है। प्रथम मोड़ बचपन का, दूसरा मोड़ युवावस्था का और तीसरा मोड़ वृद्धावस्था का है। जीवन की इन तीन अवस्थाओं में युवावस्था एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है, क्योंकि युवावस्था में ही बचपन के सपनों को साकार किया जाता है तो वृद्धावस्था को सुखद बनाने की नींव भी इसी में रखी जाती है। लेकिन वर्तमान में युवापीढ़ी धनार्जन में विशेष व्यस्त रहती है, धनार्जन को मुख्यता देने के कारण उसकी जीवन शैली अव्यवस्थित हो गयी है। वह अपनी जीवन शैली में आचार, विचार, आहार और व्यवहार को सन्तुलित नहीं रख पाता है। परिणामस्वरूप युवा पीढ़ी के आचार में शिथिलता का प्रवेश हो गया है। विचार भी निरर्थक, अनर्थक और नकारात्मक अधिक होते जा रहे हैं। आहार का सात्त्विक रूप भी नज़र नहीं आ रहा है, व्यवहार भी परिवर्तित होकर एकाकी स्वार्थपरकता की ओर झुकता जा रहा है।

युवा पीढ़ी की अव्यस्थित जीवनशैली को आहार प्रमुख रूप से प्रभावित करता है, क्योंकि आहार का प्रभाव व्यक्ति के आचार, विचार और व्यवहार पर पड़ता ही है। कहा भी है-

जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन।

आहार का जीवनशैली पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह जानने से पूर्व आहार के विषय में जानना आवश्यक है। जैन शास्त्रों में आहार के मुख्य तीन भेद बताये हैं-1. ओज आहार, 2. रोम आहार और 3. कवल आहार।

(1) ओज आहार-जीव की उत्पत्ति के प्रथम समय में आहार पर्याप्ति के समय से शरीर पर्याप्ति की पूर्णता तक किया जाने वाला आहार ओज आहार कहलाता है।

(2) रोम आहार-स्थूल शरीर के रोम छिद्रों से प्रति समय होने वाला आहार रोम आहार कहलाता है।

(3) कवल आहार-मुख से ग्रहण किया जाने वाला आहार कवल आहार कहलाता है।

ओज आहार, रोम आहार प्रत्येक जीव के होता है, परन्तु कवल आहार त्रस जीवों को ही होता है। यहाँ प्रसङ्ग कवल आहार से है। कवल आहार जीव के जीवन-सञ्चालन में मुख्य भूमिका निभाता है। कवल आहार के भेद-प्रभेदों को भी अनेक स्थानों पर बताया गया है।

श्रीमद् भगवद् गीता में आहार के तीन भेद बताए हैं-

(1) सात्त्विक आहार-जिस आहार में पोषक तत्त्व तो हो, किन्तु मिर्च-मसाले, गरिष्ठता अति मात्रा में न हो उसे सात्त्विक आहार कहते हैं। इस आहार से चित्त में विकार उत्पन्न नहीं होते, अपितु पवित्र एवं सात्त्विक भावना उभरती रहती है। इसके अन्तर्गत धान्य, हरी सब्जियाँ, फल आदि का सेवन किया जाता है।

(2) राजसिक आहार-जिस आहार के सेवन से व्यक्ति की गतिशीलता एवं क्रियात्मकता की अभिवृद्धि होती है, उसे राजसिक आहार कहते हैं। यह आहार सीमित मात्रा में सेवन किया जाए तो जीवन-यात्रा के लिए आवश्यक बल प्रदान करता है, किन्तु यदि आवश्यकता से अधिक मात्रा में सेवन किया जाए, तो यह अनावश्यक उत्तेजनाओं एवं व्याधियों का कारण भी बनता है।

(3) तामसिक आहार-जो आहार तामसिक वृत्तियाँ, विकार उत्पन्न करे, क्षुब्धता एवं उन्माद को बढ़ाये वह तामसिक आहार है। यदि व्यक्ति तामसिक

आहार ग्रहण करता है, तो उसकी तामसिक वृत्तियाँ उभरने लगती हैं, वह पशुओं के समान व्यवहार करने लगता है। उसमें अज्ञान, प्रमाद, क्रूरता आदि अवगुणों की वृद्धि होने लगती है। तामसिक आहार के अन्तर्गत मांसाहार, मद्यपान, नशीले पदार्थों एवं कुव्यसन आदि का समावेश होता है।

जैन शास्त्रों में कवल आहार के चार भेद बताये हैं-1. अशन, 2. पान, 3. खादिम, 4. स्वादिम। अशन में अन्न, दाल, सब्जी, चावल, नमक, चीनी, घी आदि सभी खाद्य-पदार्थों एवं दूध, चाय, काफी, शीतलपेय आदि सभी पेय पदार्थों का समावेश हो जाता है। दूसरे आहार पान में केवल पानी (जल) को लिया जाता है। पानी अपने आप में एक आहार है। तीसरा आहार खादिम है, जिसमें सूखे मेवे का ग्रहण होता है। चौथे स्वादिम आहार में मुख को सुगन्धित करने वाले लोंग, सुपारी, इलायची, सोंफ आदि की गणना होती है। हमारा जीवन इन चारों प्रकार के आहारों से चलता है।

सरल भाषा में कहें तो व्यक्ति जो दिन भर में खाता-पीता है, उसे आहार कहते हैं। आहार जीवन के लिए अनिवार्य है, लेकिन महत्त्वपूर्ण है आहार का विवेक। क्योंकि आहार और स्वास्थ्य का गठबन्धन है। कहा है-

आहार में हो विवेक, तो स्वास्थ्य रहेगा सम्यक्।

युवा पीढ़ी का आहार के प्रति रवैया

वर्तमान की भोगवादी संस्कृति में जीने वाली युवापीढ़ी बहिर्मुखी होती जा रही है। आर्थिक समृद्धि के लिए भागदौड़ की जिन्दगी ने युवाओं की दिनचर्या को अव्यवस्थित कर दिया है। आहार के प्रति उसके रवैये को पूर्णतया परिवर्तित कर दिया है। अधिकांश युवावर्ग आहार की विसंगतियों के साथ जीवन जी रहा है। युवा वर्ग के आहार के प्रति रवैये को कुछ बिन्दुओं से समझने का प्रयास करते हैं-

(1) आहार के प्रति उदासीनता-आज युवा वर्ग आहार के प्रति सजग नहीं रहा है। युवा अपने व्यस्त जीवन में अर्थ को इतना महत्त्व देता है कि उसकी निम्नोक्त प्रकार से आहार के प्रति उदासीनता बढ़ती जाती है-(क) वह आहार करने का उचित तथा पर्याप्त समय नहीं निकाल पाता है तथा भूख के समय जो पेट भरने के लिए मिल जाए उसे ही ग्रहण कर लेता है। (ख) वह आहार की शुद्धि-अशुद्धि का ध्यान भी नहीं रख पाता है, आहार की शुद्धता की गवेषणा भी बराबर नहीं करता तथा वेज-नॉनवेज होटल में बिना विवेक के आहार ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार के रवैये के कारण युवा वर्ग अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहा है। क्योंकि अशुद्ध तथा अनुचित आहार स्वास्थ्य की प्रतिकूलता का प्रमुख कारण है। यह आहार के प्रति उसकी उदासीनता है।

(2) तामसिक आहार की ओर अधिक झुकाव-आज का युवा वर्ग तनावग्रस्त अधिक रहता है और उसका झुकाव तामसिक आहार के प्रति बढ़ता जा रहा है। उसे उन्माद में रहना ज्यादा अच्छा लगता है, क्योंकि जवानी में जोश का उबार तो रहता है, किन्तु वह मद में बेहोश भी रहता है।

जैनाचार्यों के द्वारा निषिद्ध मांसाहार अनेक प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोगों का जनक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) के बुलेटिन नं. 637 में 160 असाध्य संक्रामक रोगों की सूची प्रकाशित हुई है, जिनका प्रमुख कारण मांसाहार है। इनमें से प्रमुख रोग निम्नानुसार हैं-(1) हृदय रोग एवं उच्च रक्तचाप, (2) रक्त धमनियों का मोटापन, (3) मिर्गी, (4) आँतें सड़ना और आमाशय की कमजोरी, (5) आँतों का अल्सर एवं कैंसर, (6) विष प्रतिरोधक शक्ति का नाश (7) एक्ज़िमा, मुँहासे आदि त्वचा रोग, (8) गुर्दे की बीमारी, (9) सन्धिवात, गठिया एवं वायुरोग, (10) माइग्रेन, इंफेक्शन रोग इत्यादि। इस प्रकार शरीर के सम्यक् प्रबन्धन के लिए मांसाहार एवं अण्डाहार का सर्वथा त्याग करना आवश्यक कर्त्तव्य है।

मद्यपान और नशीले पदार्थों के सेवन से भी स्वास्थ्य की अत्यधिक हानि होती है। यह प्रमाद का हेतु

भी है। जैनाचार्यों ने एकान्त में भी किए गए मद्यपान को महादोष बताया है। आचार्य हरिभद्र ने मद्यपान करने वाले व्यक्ति में निम्न विसंगतियों का होना दर्शाया है- (1) शरीर की विद्रूपता (2) विविध शारीरिक रोग (3) स्नायुओं की शिथिलता (4) स्मृति लोप, (5) बुद्धि-भ्रष्टता, (6) अर्थ का नाश, (7) शक्ति ह्रास, (8) अन्तर्मानस में द्वेषोत्पत्ति, (9) वाणी में कठोरता, (10) परिवार से तिरस्कार। आधुनिक शरीर शास्त्रियों ने भी मद्यपान के अनेकानेक दुष्परिणाम बताए हैं जैसे- कुपोषण, एनीमिया, शारीरिक-दुर्बलता, डायरिया, डिप्रेशन आदि।

वर्तमान में कुव्यसनों के सेवन को लिविंग स्टैण्डर्ड समझा जा रहा है। युवा पीढ़ी विदेशी शराब के सेवन को, ब्राण्डेड सिगरेट के उपयोग को उच्च स्तरीय जीवन का अभिन्न अंग मानने लगी है। इस कारण कई युवकों को इन तामसिक एवं त्याज्य पदार्थों के सेवन में किसी प्रकार की ग्लानि महसूस नहीं होती है। अधिक समय तक इन वस्तुओं का उपयोग करने से वे इनके आदी हो जाते हैं, मानसिक प्रसन्नता को खो देते हैं और अवसाद को प्राप्त हो जाते हैं।

इस प्रकार के तामसिक आहार के सेवन से युवा जैनत्व के संस्कारों का हनन करते हुए भी हिचकिचा नहीं रहे हैं। यह आहार और जैनत्व दोनों के प्रति असंवेदनशीलता है। अहिंसा के अनुयायियों के लिए इस प्रकार का तामसिक आहार करना बड़ी विडम्बना है। इस प्रकार मादकता उत्पन्न करने वाले सभी तामसिक पदार्थों जैसे-शराब, बीयर, व्हिस्की, रम, चरस, भांग, अफीम, हेरोइन, ब्राउनशुगर इत्यादि तथा मांसाहार का त्याग करना अत्यावश्यक है।

(3) पश्चिमी आहार का बहुतायत सेवन- आज की फास्ट लाइफ में युवा पीढ़ी को फास्ट फूड ही पसन्द आ रहे हैं। फास्ट फूड, जंक फूड का सेवन उनकी जीवनशैली में बढ़ता जा रहा है। बर्गर, पिज्जा, केक, चिप्स, मेगी, कोल्ड ड्रिंक आदि का सेवन नित्यप्रति बढ़ता ही जा रहा है।

जंक फूड भोजन किसी भी तरह से शरीर के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। यह शरीर के सिस्टम के लिए कुपोषक और हानिकारक है। अधिकांश जंक फूड में संतृप्त वसा, चीनी, नमक और कोलेस्ट्रॉल का उच्च स्तर होता है जो स्वास्थ्य के लिए ज़हरीला होता है। कोलेस्ट्रॉल हृदय के लिए घातक है। जंक फूड में पाचन सम्बन्धी विकार होते हैं जिससे मोटापा बढ़ता है। अच्छे स्वाद और पकाने में आसान होने के कारण जंक फूड अधिक लोकप्रिय हो चुके हैं। बाजार में कई रेडीमेड जंक फूड उपलब्ध हैं। अपनी व्यस्तता के कारण अधिकांश लोग ऐसे रेडीमेड खाद्य पदार्थों पर निर्भर हैं। पूरी दुनिया में जंक फूड की खपत दिनों-दिन बढ़ रही है। सोडा, कैंडी और बेक्ड सामान के साथ जंक फूड का सेवन मुँह, मसूड़ों, जीभ और दाँतों को अत्यधिक नुकसानदायक है।

भारत में सैंकड़ों प्रकार के विदेशी चॉकलेट आ चुके हैं, जिनमें 'टीन' नामक तत्त्व का उपयोग किया जाता है। यह तत्त्व शरीर के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। मुम्बई के जसलोक हॉस्पिटल के एण्डोक्राइनोलॉजिस्ट डॉ. शौकत सादीकोर की मान्यता है कि मधुमेह पहले आनुवांशिक रूप में ही पाया जाता था, लेकिन अब यह नये-नये लोगों पर हमला बोल रहा है, खासतौर पर 25 वर्ष से कम उम्र के युवाओं पर असर देखा जा रहा है। यह सब बाजारू आहार एवं फास्ट फूड की देन है। अधिकतर पश्चिमी आहार तामसिक एवं अहितकर हैं। ऐसे तामसिक एवं अहितकर आहार को स्थानाङ्गसूत्र में रोग की उत्पत्ति का प्रमुख कारण माना है।

(4) विकृति-जनक आहार का सेवन-यह दिखने में सुन्दर और खाने में स्वादिष्ट होता है, इसलिए प्राय: अतिमात्रा में इसका सेवन हो जाया करता है। इसके अन्तर्गत सभी प्रकार के तेज मिर्च-मसालेदार, दूध, दही, घी, तेल, गुड़-शक्कर के पदार्थ आते हैं। विकृति-जनक आहार का समावेश तामसिक और

राजसिक दोनों में होता है। चूँकि राजसिक भोजन का अतिमात्रा में सेवन करने से काम-क्रोधादि चित्तवृत्तियाँ उत्तेजित होती हैं तथा हृदयरोग, मधुमेह, मोटापा आदि शारीरिक व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं, अत: जैनाचार्यों ने सीमित मात्रा में इस आहार का सेवन करने का निर्देश दिया है। जैन परम्परा में इसीलिए पाँच प्रकार के विगय अर्थात् विकृतिकारक पदार्थों का उल्लेख किया गया है, प्रत्येक युवा को विवेकपूर्वक इनका त्याग करना चाहिए।

(5) आहार का प्रमाण नियत न होना–हमारे जैन शास्त्रों में आहार कितना करना चाहिये, यह प्रमाण भी बताया गया है। पुरुष के लिए 32 कवल का आहार, स्त्री के लिए 28 कवल और नपुंसक के लिए 24 कवल प्रमाण आहार बताया है। लेकिन वर्तमान में युवा स्वाद युक्त आहार को अतिप्रमाण में और स्वाद रहित भोजन को अल्प प्रमाण में करता है। अप्रमाण में भोजन करने से अनेक बीमारियाँ शरीर को जकड़ लेती हैं। स्थानाङ्गसूत्र में अत्यधिक आहार को रोगोत्पत्ति का आदि कारण बताया है।

(6) आहार की अनियमितता–युवा वर्ग न तो उचित समय पर आहार करता है और न ही समय के अनुकूल आहार करता है। शरीर में गर्मी होते हुए भी गर्मी करने वाले पदार्थों का सेवन करता रहता है। इस प्रकार आहार की अनियमितता से अनेक रोग प्रवेश कर जाते हैं। आहार करने के पहले तथा बाद में लगभग 1 घण्टे तक पानी नहीं पीना चाहिये, क्योंकि यह पाचन के लिए आवश्यक नियम है। लेकिन आहार के प्रति अनियमितता के कारण हम ऐसे नियमों का पालन नहीं करते हैं और रोगों को आमन्त्रण देते रहते हैं।

(7) आहार करने का प्रतिकूल तरीका–खड़े-खड़े खाना, चलते-चलते खाना, जल्दी-जल्दी खाना, बिना चबाये खाना ये सभी आहार करने के प्रतिकूल तरीके हैं। आयुर्वेद में कहा है कि अगर भोजन को अच्छी तरह चबाया नहीं गया है तो उससे लाभ न होकर हानि होने लगती है। आज के जीवन में खड़े-खड़े, चलते-चलते खाने का अनुसरण बढ़ रहा है। जिससे आराम से बैठकर खाना खाने का श्रेष्ठ तरीका लुप्त होता जा रहा है। इस प्रकार के आहार के तरीकों में न तो विवेक देखा जाता है, न ही हमारी संस्कृति। मनुहार, आवभगत आदि संस्कार तो गौण ही हो रहे हैं।

(8) सम्यक् संयोजन के अभाव वाला आहार–आज केवल आहार क्षुधा पूर्ति और स्वाद के अनुसार हो रहा है। कौन से आहार के साथ कौन-सा संयोजन शरीर के लिए लाभकारी होगा, इस विषयक जानकारी एवं चिन्तन का अभाव है। विपरीत संयोजन वाली वस्तुओं के सेवन के कारण वे शरीर की हानि करने वाली बनती हैं। जैसे नमक, मिर्च वाली दाल (सांभर) के साथ दूध का सेवन विपरीत संयोजन है, लेकिन सुबह नाश्ते में इन दोनों का भरपूर सेवन किया जा रहा है।

(9) प्राकृतिक आहार के प्रति उदासीनता–जैनाचार्यों ने सदैव प्रकृति प्रदत्त फल-सब्जियों को ही खाद्य के रूप में स्वीकार किया है। उनके अनुसार, प्रकृति के प्रतिकूल आहार करना रोग का कारण बन सकता है। यही कारण है कि जैन-परम्परा में हरी पत्ती, भाजी, तिल्ली, सूखे मेवे आदि को शीत ऋतु में ही सेवनीय कहा गया है। चलितरस (जिसमें सड़न उत्पन्न हो रही हो) का वर्जन भी इसी अभिप्राय से है कि व्यक्ति ऋतु अनुसार अपनी आहार व्यवस्था कर ले, अन्यथा इनसे स्वास्थ्य की हानि भी हो सकती है और जीवोत्पत्ति के कारण से हिंसा भी। आयुर्वेद में कहा है कि ऋतुओं के अनुसार आहार करने से शरीर स्वस्थ रहता है।

(10) बाह्य परिवेश का प्रभाव–युवा पीढ़ी जिस वातावरण में रहती है उस वातावरण का प्रभाव उस पर पड़ना लाजिमी है। बाह्य परिवेश में उसे इन्हीं हानिकारक वस्तुओं की उपलब्धता अधिक रहती है अत: वह इन पदार्थों से ही क्षुधापूर्ति कर लेता है। सात्त्विक एवं सन्तुलित आहार की खोज उसका लक्ष्य नहीं होता है।

मित्रों के द्वारा जिस अशुद्ध आहार का उपयोग किया जा रहा है वह भी उसी को ग्रहण कर लेता है।

(11) रात्रि भोजन एवं जूठन छोड़ने की प्रवृत्ति–वर्तमान में युवाओं का झुकाव रात्रि भोजन की ओर बढ़ता जा रहा है। युवा पीढ़ी की दिनचर्या इस प्रकार की हो गयी है कि उसकी आहारचर्या में रात्रि भोजन अभिन्न अङ्ग बनता जा रहा है। ऑफिस वर्क की समय-सारणी तथा संस्कारों के प्रति उदासीनता के कारण अधिकांशतया युवा पीढ़ी रात्रि भोजन को स्वीकार करने में किञ्चित् भी संकोच नहीं करती है। जबकि रात्रि भोजन जैन आहारशैली के भी विपरीत है, क्योंकि वह अधिक हिंसा का कारण है। जैन मुनि की प्रतिज्ञाओं में रात्रि भोजन त्याग प्रमुख प्रतिज्ञा बतायी है जहाँ रात्रि में पानी की बूँद भी ग्रहण करने का निषेध ही नहीं, अपितु रखने का निषेध भी है। रात्रि भोजन स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक हानिकारक है, क्योंकि सूर्य की रोशनी के अभाव से पाचन तन्त्र कम सक्रिय रहता है, जिससे अनेक बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं।

भारतीय संस्कृति अन्न को देवता की उपमा देती है। लेकिन युवा पीढ़ी इस अन्न देवता के अपमान को अपना स्टैण्डर्ड मान रही है। उसे भोजन में जूठा छोड़ना स्टैण्डर्ड प्रतीत हो रहा है। आज की जीवनशैली जूठन छोड़ने में अपनी ऊँची शान मानने लगी है। जबकि यह हमारी संस्कृति पर कुठाराघात है। जिस देश की जनता लगभग 37 प्रतिशत गरीबी रेखा के नीचे है, जिनके आहार की व्यवस्था प्रतिदिन की भी निश्चित नहीं है वहाँ जूठन छोड़ना पाप ही समझा जा सकता है। जूठन छोड़ना केवल एक मानसिक विकृति है। जैन विचारधारा तो थाली धोकर पीने में आयम्बिल का फल मानती है। सभी धार्मिक मान्यताओं में जूठन छोड़ना अनुचित बताया गया है। जूठा नहीं छोड़ने की प्रकृति पर्यावरण संरक्षण एवं अहिंसा पालन के लिए भी अत्यधिक उपयोगी है।

(12) जमींकन्द का अत्यधिक प्रयोग–युवा वर्ग द्वारा साउथ इण्डियन, चायनीज आदि डिसेज का प्रयोग अत्यधिक किया जाने लगा है। इन डिसेज में जमींकन्द का प्रयोग किया ही जाता है। सूई की नोंक पर स्थित जितने प्रमाण जमींकन्द में अनन्तान्त जीव जैन शास्त्रों में बताये गये हैं। अत्यधिक हिंसात्मक होने से जैन विचारधारा जमींकन्द के प्रयोग का निषेध प्राचीनकाल से ही करती आ रही है। जमींकन्द तथा रात्रि भोजन का त्याग जैनी होने की विशिष्ट पहचान है। युवावर्ग को इस पहचान को बनाये रखना चाहिए।

अत: यह आवश्यक है कि आहार को संयम एवं इनसे जुड़े आचार-विचार को ध्यान में रखते हुए सन्तुलित किया जाए। फास्ट फूड की अपसंस्कृति से उत्पन्न दुष्प्रभावों से बचा जाय। सावधान स्वयं को होना होगा, यदि सावधान नहीं हुआ तो दुष्परिणाम भी स्वयं को ही भोगना होगा। जो अपने को साधना चाहता है वह पहले अपने आहार को साधे।

आदर्श आहार चर्या

आहार ग्रहण करने का आदर्श स्वरूप क्या होना चाहिए? जिससे कि इस युवा पीढ़ी का मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहे और वह परिवार, समाज और देश को अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कर सके। सन्तुलित आहार एवं आहार की आदर्श दिनचर्या प्रस्तुत करते हैं, जिससे कि युवा पीढ़ी अपने आहार के प्रति वर्तमान रवैये को परिवर्तित करके स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करे।

1. **आहार का उत्कृष्ट सात्त्विक रूप**–सात्त्विक आहार कैसा होना चाहिए? जिससे स्फूर्ति, उत्साह में उन्नति हो उत्कृष्ट ऐसे सात्त्विक आहार में निम्न विशेषताएँ आवश्यक हैं-**(क) पथ्यकारी**–उत्तराध्ययनसूत्र के अनुसार व्यक्ति को रस-लोलुपता को छोड़कर हमेशा पथ्यकारी आहार सेवन करना चाहिए। **(ख) सन्तुलित**–आहार में प्रोटीन आदि तत्त्वों की मात्रा सन्तुलित रूप से होनी चाहिए। **(ग) पौष्टिक**–शरीर को पुष्ट करने वाले पौषक तत्त्व से युक्त आहार करना चाहिए। तुच्छ

एवं असार आहार को कदापि ग्रहण नहीं करना चाहिए। कहा भी है-**भक्षणेन तेनापि किं येन तृप्ति र्न जायते** अर्थात् उन खाद्य पदार्थों को खाने से कोई लाभ नहीं जिनसे तृप्ति नहीं हो। **(घ) हितकारी**-आहार जीवन चलाने के लिए होता है न कि जीवन समाप्त करने के लिए। शराब, गुटखा, सिगरेट, भांग, अफीम आदि आहार के रूप जीवन का विनाश करने वाले हैं। इसलिये इनका सेवन नहीं करके, जीवन चलाने वाले हितकारी आहार का सेवन हो। **(ङ) अहिंसक**-अहिंसक आहार शारीरिक अनिष्टता से बचाता है तथा आध्यात्मिक प्रगति में भी सहायक होता है। पूर्वाचार्यों ने 22 अभक्ष्य पदार्थों का निषेध किया है, क्योंकि ये शरीर-स्वास्थ्य के लिए विशेष हानिकारक हैं।

2. **आहार करने का श्रेष्ठ समय**-अनुचित समय पर किया गया आहार उचित लाभ नहीं दे सकता है। उत्तराध्ययन सूत्र में बताया गया है कि आहार ग्रहण करने का मुख्य उद्देश्य क्षुधा पीड़ा को शान्त करना है। (क) भूख लगने पर ही आहार का सेवन करना चाहिए। (ख) नियत समय पर ही भोजन करना चाहिए। (ग) अजीर्ण होने पर भोजन नहीं करना चाहिए। (घ) मन शान्त हो तभी भोजन करना चाहिए। (ङ) नींद से उठकर तुरन्त नहीं खाना चाहिए। (च) शरीर में हल्कापन महसूस हो, तब खाना चाहिए। (छ) मल-मूत्र का वेग रोककर कभी नहीं खाना चाहिए।

उत्तराध्ययनसूत्र में मुनि के सन्दर्भ में स्पष्ट कहा गया है कि मुनि दिन के तीसरे प्रहर में आहार ग्रहण करे। आयुर्वेद ग्रन्थों में स्पष्ट कहा गया है कि मध्याह्न काल (लगभग 12 से 2 बजे तक) पित्तवृद्धि का समय है और इसमें भोजन किया जाए, तो भोजन शीघ्र व अधिक अंश में पचता है, परिणामत: शरीर अधिक पुष्ट होता है। रात्रि भोजन के निषेध को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना गया है। रात्रिभोजन न केवल धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से, अपितु विज्ञान एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी त्याज्य है।

3. **आहार करने का स्थान**-जैनाचार्यों की दृष्टि में उन्हीं स्थानों पर आहार करना चाहिए, जहाँ आहार-शुद्धि का विशेष ध्यान रखा जाता हो। सागारधर्मामृत में स्पष्ट कहा गया है कि योग्य गृहस्थ को उद्यान में भोजन नहीं करना चाहिए। होटल, रेस्त्रां एवं ढाबा, सिनेमाघर एवं अन्य सार्वजनिक स्थान पर भोजन इसीलिए नहीं करना चाहिए, क्योंकि वहाँ शुद्धि-अशुद्धि, पौष्टिकता-अपौष्टिकता, सात्त्विकता-तामसिकता, अहिंसा-हिंसा आदि का विवेक न तो रखा जाता है और न ही रखने का उद्देश्य होता है। क्लेश-कलह करते-करते भोजन परोसा जाता है, चिन्ता एवं तनाव के साथ आहार किया जाता है, टी.वी. देखते-देखते आहार किया जाता है, तो ऐसा घर में किया गया आहार भी अनुपयुक्त ही है। इस स्थिति में घर का बना आहार भी मानसिक एवं शारीरिक विसंगतियों का कारण बन सकता है।

4. **कितना आहार किया जाए**-शरीर प्रबन्धन के लिए आहार की मात्रा का विवेक होना भी अत्यावश्यक है। आज चिकित्सालयों में प्रवेश पाने वाले लगभग 87% रोगियों के रोग का मूल कारण अजीर्ण से सम्बन्धित होता है। जैनाचार्यों के अनुसार स्वस्थ व्यक्ति का निश्चित आहार प्रमाण बताया गया है। मूलआराधना में कवल का परिमाण 1,000 चावल के दानों जितना बताया है। उत्तराध्ययनसूत्र में कहा गया है कि व्यक्ति को ठूँस-ठूँसकर आहार नहीं करना चाहिए। ओघ निर्युक्ति में तो यहाँ तक कहा गया है कि अल्पाहारी अर्थात् सीमित मात्रा में आहार करने वाले को किसी चिकित्सक की आवश्यकता ही नहीं होती। जैन दर्शन में भूख से कम खाना ऊनोदरी तप माना जाता है। इससे अनेक लाभ दिखाई देते हैं, जैसे-आलस्य में कमी, स्वास्थ्य की सुरक्षा, बुद्धि का

विकास, आत्मोन्नति की पात्रता।

5. **आहार करने का तरीका**–जैनदर्शन में श्रमण एवं श्रावक दोनों के लिए एक व्यवस्थित आहार–विधि बताई गई है। स्वच्छ आसन पर स्थिर चित्त से बैठकर आहार करना। न अधिक धीरे और न अधिक जल्दी आहार करना। अतिशय रसलोलुपता के साथ भोजन नहीं करना। प्रत्येक कवल को बत्तीस बार चबा–चबा कर खाना, जिससे आँतों पर दबाव न आए। भोजन करने के ठीक बाद शरीर का मर्दन, मलमूत्र का त्याग, भारवहन, नहाना आदि कार्य नहीं करना। भोजन के पूर्व पानी नहीं पीना, अन्यथा शरीर कृश होता है।

आहार जीवन के लिए आवश्यक है, इसमें सन्देह नहीं। किन्तु उसका अनावश्यक उपभोग आहार का दुरुपयोग है। उसका दुष्परिणाम एक ओर शरीर को रोगादि के रूप में भोगना पड़ता है तो दूसरी ओर कुछ लोग आहार–प्राप्ति से वञ्चित रहते हैं। आवश्यकता से अधिक आहार चित्त की विकृति को द्योतित करता है। शरीर एवं चित्त का घनिष्ठ सम्बन्ध है। चित्त में आया हुआ विकार ही मनुष्य को भोगों में प्रवृत्त करता है। साधु–साध्वियों के लिए तो मात्र संयम–यात्रा हेतु आहार कल्पता है–'**जवणट्ठाए भुंजिज्जा, न रसट्ठाए।**' स्वाद के लिए भोजन न करे, अपितु संयम–यात्रा के लिए भोजन करे। वे धन्य हैं जो जिह्वा–लोलुपता पर विजय प्राप्त करते हैं। वे न केवल जिह्वा पर, अपितु अपने मन पर भी विजय पाते हैं।

अत: स्पष्ट है–1. आहार में शाकाहार ही सर्वोत्तम आहार है। यह पर्यावरण संरक्षण का प्राण है। 2. शाकाहार में भी तामसिक विकृतिजन्य आहार का त्याग अपेक्षित है। 3. सात्त्विक आहार ग्रहण में शुद्धि–अशुद्धि का विवेक भी जरूरी है। 4. शुद्ध आहार के साथ समय के अनुसार दिन में आहार करना श्रेष्ठ है। दिन में ग्रहण किये गये आहार में भी उचित प्रमाण में ही (न तो अधिक और न ही अल्प) ग्रहण करना चाहिए। 5. इसके साथ ही यह विवेक भी होना चाहिए कि किस पदार्थ के साथ कौन–सा पदार्थ ग्रहण किया जावे। 6. पदार्थ ग्रहण करने का तरीका भी श्रेष्ठ होना चाहिए।

युवाओं को इन बिन्दुओं की तरफ ध्यान देकर आहार के प्रति अपना रवैया परिवर्तित करना चाहिए। मर्यादित आहार शैली सद्गुणों के उत्कर्ष का कारण है तथा जैनत्व की शान है।

प्रयुक्त सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची–

1. प्रज्ञापनासूत्र–युवाचार्य श्री मधुकरमुनि जी, सम्पादक ज्ञानमुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर (राजस्थान), तृतीय संस्करण 2002
2. उत्तराध्ययनसूत्र–युवाचार्य श्री मधुकरमुनि जी, सम्पादक राजेन्द्रमुनि शास्त्री, श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर (राजस्थान), तृतीय संस्करण 2000
3. दशवैकालिकसूत्र–आचार्य हस्तीमल, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापूबाजार, जयपुर, नवम संस्करण 2013
4. प्रवचनसारोद्धार–साध्वी श्री हेमप्रभाजी, सम्पादक महोपाध्याय विनयसागर, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर तथा श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर, प्रथम संस्करण 1999
5. सागारधर्मामृतम्–महापण्डित आशाधर, सम्पादक डॉ. प्रमिला जैन, चुण्डीवाल कृषि फार्म हाउस, अजमेर रोड़, जयपुर, चतुर्थ संस्करण 2007
6. रोग तथा स्वास्थ्य के सन्दर्भ में शाकाहारी भोजन की भूमिका–डॉ. ओ. पी. कपूर, अनुवादक–डॉ. के.पी. द्विवेदी, पशु क्रूरता निवारण समिति, तख्तेशाही रोड़, जयपुर, प्रथम संस्करण 1997
7. दिव्य सन्देश–आहार विशेषांक–दिव्य सन्देश कार्यालय, 30 महावीर कॉलोनी, अजमेर।
8. चिन्तन के आयाम भाग–2– डॉ. धर्मचन्द जैन, सम्पादक, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर, प्रथम संस्करण 2018
9. युवा संवारें यौवन–श्री पदमचन्दजी गाँधी, सम्पादक, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर, प्रथम संस्करण 2008
10. हम और हमारा आहार–कुलवन्तसिंह कोछड़, अनुवादक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया।
11. पोषण–आहार एवं स्वास्थ्य–डॉ. वाई. एस. भार्गव, लेखक, अंकुर प्रकाशन, बीकानेर।

–शोध छात्र, 37/67, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर–302020 (राज.) 9694430826

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 54
ISSN 2249-2011

आगम-वाक्

जिनशासनसूत्र

श्री हेमन्त लोढ़ा

जं संल्लीणा जीवा तरंति संसार-सायर-मणंतं।
तं सव्व-जीव-सरणं णंदउ जिण-सासणं सुइरं।।1।।
लीन होकर पार करे, सागर जगत् विशाल।
शरण मिले सब जीव को, जिनशासन चिरकाल।।

May the teachings of Jina which enable all souls to cross over the endless ocean of mundane existence and which afford protection to all living beings, flourish for ever.

जिण-वयण-मोसह-मिणं विसय-सुह-विरेयणं अमिदभूयं।
जर-मरण-वाहि-हरणं, खयकरणं सव्वदुक्खाणं।।2।।
विषयशुद्धि जिनवचन करे, औषध सुधा समान।
जन्म-मरण से मुक्ति मिले, सब दुःख हरता मान।।

The preaching of Jina cures the problem of transmigration and destroys all sorrows permanently. The teachings of Jina are nectar-like medicine for relief from all miseries.

अरहंतभासियत्थं, गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सदणाणमहोदहिं सिरसा।।3।।
भाषित है अरहंत अर्थ, ग्रन्थ ले गणधर ज्ञान।
भक्त शीश करता नमन, सागर है श्रुतज्ञान।।

I bow down my head with devotion to the vast ocean of scriptural knowledge preached by the Arhats and properly composed in the form of scriptures by the Ganadharas (group leaders of ascetic order).

तस्स मुहुग्गद-वयणं, पुव्वावर-दोस-विरहियं सुद्धं।
आगम-मिदि परिकहियं, तेण दु कहिया हवंति तच्चत्था।।4।।
मुख से वचनामृत झरे, दोषरहित सुविचार।
आगम इनको जानिये, सत्य तथ्य का सार।।

That which has come from the mouth of the Arhats is pure and completely free from contradiction is called the agama or the Scripture and what is recorded in the Scriptures is truth.

जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयणं जे करंति भावेण।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्त संसारी।।5।।
जिनवचनों को पालते, ग्रहण करें जो सार।
स्वच्छ निर्मल बन तरते, भवसागर से पार।।

Those who are fully devoted to the preachings of the Arhats and practise them with sincerity shall attain purity and freedom from miseries and shortly get liberated from the cycle of birth and death.

जय वीयराय! जयगुरु! होउ मम तुह पभावओ भयवं!
भवणिव्वेओ मग्गाणुसारि या इट्ठफलसिद्धी।।6।।
जगद् गुरु, वीतराग हे, मैं मोहित भगवान।
विरक्त हो पथ मोक्ष मिले, इष्टफलित सह ज्ञान।।

Oh the Conqueror of all attachments : Oh, the teacher of universe : Oh the blessed one : through your grace may I develop detachment to the world, continue to follow the path of liberation.

ससमय-परसमविऊ, गंभीरो दित्तिमं सिवो सोमो।
गुणसयकलिओ जुत्तो, पवयणसारं परिकहेउं।।7।।
स्वसमय ज्ञाता रहे, शिव, सोम गुण भण्डार।
दीप्तिमान निर्ग्रन्थ को, प्रवचन का अधिकार।।

He alone is entitled to propagate the essence of the teaching of the possession-less saints (Nirgranthas), who is well-versed in pure souls and inpure-souls; who is deep, brilliant benevolent and modest and has hundreds of other virtues.

-(गाथाओं का हिन्दी दोहों में रूपान्तरण एवं अंग्रेजी अनुवाद श्री हेमन्त लोढ़ा ने सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'समणसुत्तं' में किया है।)

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 55
ISSN 2249-2011

जीवन-व्यवहार

व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (6)

श्री पी. शिखरमल सुराणा

20. जो मन को नियन्त्रित नहीं करते, उनके लिए वह शत्रु के समान कार्य करता है। हमारे जीवन में अच्छाई और बुराई, सकारात्मकता तथा नकारात्मकता... हमारी अपनी सोच से ही उत्पन्न होती है ....जो हमारे जीवन को पूर्ण रूप से प्रभावित करती है। हमारी सोच, हमारे विचार तथा हमारे संस्कार हमारी इच्छाओं के द्वारा एवं मन में चल रही उथल-पुथल से ही ....निर्देशित और सञ्चालित होते हैं। ऐसे में यदि हमारा अपने मन पर नियन्त्रण नहीं रहता...तो फिर निश्चित जानिए....स्वयं हमारा मन ही ...एक शत्रु समान व्यवहार करते हुए ...हमारे जीवन को सम्पूर्ण रूप से अनियन्त्रित और अव्यवस्थित कर देगा। अतः अपने मन एवं विचारों पर नियन्त्रण करना सीखिए.....इसके लिए निरन्तर प्रयास तथा साधना अत्यन्त आवश्यक है।
21. सुन्दरता और सरलता की तलाश में हम चाहे सारी दुनिया घूम लें, लेकिन अगर वो स्वयं हमारे ही अन्दर नहीं है ....तो फिर सारी सृष्टि में कहीं भी नहीं होगी। सुन्दरता को देखने एवं पहचानने के लिए पहले अपने मन, सोच और विचार को सरल तथा सुन्दर बनाना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने हृदय के मैल और कटुता से मुक्ति प्राप्त करें। अपने मन की नकारात्मकता को खरोंच-खरोंच कर साफ करें। एक बार जहाँ हमारा हृदय स्वयं ही साफ हो गया, सकारात्मक हो गया, तो निश्चित मानिए.. संसार में उपलब्ध सम्पूर्ण सुन्दरता एवं सरलता हम को स्पष्ट रूप से दिखने लगेगी हृदय को प्रफुल्लित करेगी। हमें अपने मन से नकारात्मकता, नफरत और घृणा का चश्मा हटाना होगा.. सारा संसार खुद ही सुन्दर दिखने लगेगा।
22. वृक्ष कभी इस बात पर व्यथित नहीं होता कि उसने कितने फूल खो दिए। वह सदैव नए फूलों के सृजन में व्यस्त रहता है। जीवन में क्या कुछ खो गया, इस पीड़ा को भूलकर, हम क्या नया प्राप्त कर सकते हैं.. इसी में हमारे जीवन की सार्थकता है। जो बीत गया, सो बीत गया। वक्त के चक्र को वापिस नहीं घुमाया जा सकता। बीते समय की अच्छी और बुरी घटनाओं से सिर्फ शिक्षा तथा अनुभव ही लिया जा सकता है....जिसका सदुपयोग भविष्य के लिए उत्कृष्ट कार्य योजना और सुदृढ़ रणनीति तथा रूपरेखा बनाने में किया जाना चाहिये। यही उसकी सार्थकता एवं उपलब्धि होगी। धीरज तथा प्रेम से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।
23. जीवन में सही फैसले लेने में विश्वास कीजिये। ऐसा न हो कि नादान फैसले लेकर आप फिर उन्हें जीवन भर सही साबित करने का असफल प्रयत्न करते रहें। ग़लत फ़ैसले प्रायः तभी होते हैं...जब बिना किसी संकल्प के ही बहुत ज़्यादा विकल्प प्राप्त हों। सही, सन्तुलित एवं सटीक फ़ैसला लेने के लिए मात्र एक दृढ़ संकल्प की ही आवश्यकता होती है। अपना विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित कीजिये....उसे प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय करिये। फिर उसके लिए ईमानदारी से एकाग्रचित्त होकर ...अपना शत-प्रतिशत देते हुए प्रयास कीजिये।
24. जब किसी व्यक्ति द्वारा अपने लक्ष्य को इतनी गहराई से चाहा जाता है कि....वह उसके लिए अपना सब कुछ दाव पर लगाने के लिए तैयार होता है....तो फिर उसका जीतना सुनिश्चित है। सीधी-सी बात है, हम जो भी लक्ष्य निर्धारित करें....फिर उसको हासिल करने हेतु अपनी सम्पूर्ण शक्ति एवं सामर्थ्य के साथ पूरी ईमानदारी से प्रयत्न करें।

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 56
ISSN 2249-2011

तत्त्व-चर्चा

आओ मिलकर कर्मों को समझें (13)

(मन:पर्याय ज्ञान का स्वरूप-2)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– मन:पर्याय ज्ञानी कितने भव में मोक्ष जा सकता है?

समाधान–यदि विपुलमति मन:पर्यायज्ञानी है तो वह उसी भव में नियमा मोक्ष में जाता है। यदि ऋजुमति मन:पर्यायज्ञानी है तथा आराधक भी है तो वह इसी भव में भी मोक्ष जा सकता है, अन्यथा अधिकतम 15 भवों में तो वह अवश्य ही मोक्ष में जाता है। यदि ऋजुमति मन:पर्यायज्ञानी विराधक बन जाये तो देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल तक भी संसार में रह सकता है। ऐसा होने पर इसके अनन्त जन्म-मरण भी हो जाते हैं। उसके बाद तो वह मोक्ष में चला जाता है।

जिज्ञासा– मन:पर्याय ज्ञान से नीचे गिरे हुए साधक किन-किन गतियों में मिल सकते हैं?

समाधान–प्रज्ञापनासूत्र के 36वें समुद्घात पद से स्पष्ट हो जाता है कि 4 ज्ञान तथा 14 पूर्वों के धारक भी नीचे गिरकर विराधक हो जाते हैं। 4 ज्ञान में मन:पर्यायज्ञानी भी शामिल हैं। वे निगोद में अनन्त और नारकी, तिर्यञ्च, सम्मूर्च्छिम मनुष्य तथा देवगति में असंख्यात सदैव मिल जाते हैं। गर्भज मनुष्यों में संख्यात मिल जाते हैं।

जो जीव शुक्लपक्षी बनने के बाद सम्यक्त्वी बन गये, साधु बन गये, 4 ज्ञान, 14 पूर्वों के धारक बन गये, किन्तु उनका देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन संसार परिभ्रमण शेष होने से वे मोक्ष में नहीं जा सकते। विराधक बन जाते हैं तथा नरक, निगोद आदि में चले जाते हैं। वहाँ अनन्त जन्म-मरण करके बचे हुए संसार काल को पूर्ण करते हैं। उसके बाद वे आराधक बनकर मोक्ष में जाते हैं।

जिज्ञासा– मन:पर्याय ज्ञान का द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा से स्वरूप कैसा होता है?

समाधान– **(1) द्रव्य से**–मन:पर्याय ज्ञानी मनोवर्गणा के द्रव्य मन के रूप में परिणत अनन्त प्रदेशी स्कन्धों की पर्यायों को प्रत्यक्ष रूप से जानता है। **(2) क्षेत्र से**–तिरछे में अढ़ाई द्वीप के अन्दर रहे हुए सन्नी जीवों के ऊँचे में ज्योतिषी विमान के देवों के तथा भद्रशाल वन में रहने वाले सन्नी जीवों के तथा नीचे में पुष्कलावती विजय के सन्नी जीवों के मन की पर्यायों को मन:पर्यायज्ञानी प्रत्यक्ष जानते हैं।

(3) काल से–मन:पर्यायज्ञानी वर्तमान को ही नहीं, अपितु भूतकाल में पल्योपम के असंख्यातवें भाग पर्यन्त तथा इतना ही भविष्यत् काल को अर्थात् मन की जिन पर्यायों को हुए पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग काल हो गया है और भविष्यकाल में जो पर्यायें मन की होंगी, उनको प्रत्यक्ष जान सकता है।

(4) भाव से–चारों गति में तो सन्नी जीव असंख्यात होते हैं, किन्तु मन:पर्यायज्ञानी सीमित क्षेत्र में रहे हुए सन्नी जीवों के मन की पर्यायों को ही जान पाता है। सीमित क्षेत्र में संख्यात ही सन्नी जीव हो सकते हैं, असंख्यात नहीं हो सकते, अत: वह संख्यात सन्नी जीवों के मन की पर्यायों को ही प्रत्यक्ष जान पाता है।

जिज्ञासा– मन:पर्याय ज्ञान का दर्शन क्यों नहीं माना जाता?

समाधान–मन:पर्याय ज्ञान से द्रव्य मन की विशिष्ट पर्यायों-आकृतियों को विशेष रूप से ही जाना जाता है, सामान्य रूप से नहीं जाना जाता, इस कारण से मन:पर्यायज्ञान का दर्शन नहीं माना जाता है। क्योंकि दर्शन तो सामान्य पर्याय को ही ग्रहण कर पाता है।

मन:पर्यायज्ञान अपने विशिष्ट क्षयोपशम के कारण से साकार रूप में अर्थात् ज्ञान रूप में ही उत्पन्न होता है।

दूसरा समाधान प्रज्ञापना पद 30 में यह भी दिया गया है कि मन:पर्यायज्ञान पश्यत्तापूर्वक होता है। पश्यत्ता का तात्पर्य है-दीर्घकालिक या त्रिकाल विषयक अवबोध। चूँकि मन:पर्यायज्ञान पल्योपम के असंख्यातवें भाग काल प्रमाण अतीत-अनागत काल को जानता है, अत: यह त्रिकाल विषयक है।

जिज्ञासा- अवधिज्ञान से भी रूपी पदार्थों को जाना जाता है तथा मन:पर्यायज्ञान से भी रूपी पदार्थ (मनोद्रव्य की आकृतियाँ) जानते हैं तो फिर दोनों में क्या अन्तर है?

समाधान-यद्यपि यह बात सही है कि अवधि ज्ञान तथा मन:पर्यायज्ञान दोनों का विषय रूपी पदार्थों को जानना है, तथापि निम्नाङ्कित आधार पर दोनों ज्ञानों में अन्तर समझ सकते हैं-

अवधिज्ञान

1. विशुद्धि-अवधिज्ञान से अपेक्षाकृत कम विशुद्धि से जाना जाता है।

2. स्वामी-अवधिज्ञान के स्वामी चारों गतियों के जीव हो सकते हैं।

3. क्षेत्र-अवधिज्ञान का क्षेत्र समस्त लोक के (तथा अलोक में भी जानने की क्षमता) रूपी पदार्थ है, उनको जाना जा सकता है।

मन:पर्यायज्ञान

1. विशुद्धि-अवधिज्ञान की अपेक्षा मन:पर्याय ज्ञान में अधिक विशुद्धि से जाना जाता है।

2. स्वामी-मन:पर्याय ज्ञान ऋद्धिमंत अप्रमत्त अनगारों को ही प्राप्त होता है।

3. क्षेत्र-मन:पर्याय ज्ञान से सीमित क्षेत्रों में रहे सन्नी पञ्चेन्द्रिय जीवों के मन की पर्यायों को ही जाना जा सकता है।

यद्यपि अवधिज्ञानी भी मन की पर्यायों को सीधे आत्मा से जान लेते हैं, किन्तु उन पर्यायों से क्या भाव निकलते हैं। ये पयार्य किस विषय से सम्बन्धित हैं? जिन विषयों से सम्बन्धित पर्यायें हैं, उन विषयों, वस्तुओं, पदार्थों की क्या-क्या विशेषताएँ हैं? इन सब बातों की विशद एवं स्पष्ट जानकारी अवधिज्ञान से नहीं हो पाती, उन सबको मन:पर्यायज्ञान से जाना जाता है।

जिज्ञासा- मन:पर्याय ज्ञान कितने भवों में प्राप्त हो सकता है?

समाधान-मन:पर्याय ज्ञान ऋद्धि प्राप्त अप्रमत्त साधु-साध्वियों को ही होता है। भगवतीसूत्र शतक 25 उद्देशक 6-7 में वर्णन है कि छट्ठे-सातवें गुणस्थानवर्ती साधुपना अधिकतम 8 भवों में ही आता है। अत: मन:पर्याय ज्ञान भी अधिकतम आठ भवों में प्राप्त हो सकता है। आठ भवों में प्राप्त होने वाला मन:पर्यायज्ञान ऋजुमति होता है, क्योंकि विपुलमति वाला तो उसी भव में मोक्ष में चला जाता है।

जिज्ञासा- क्या मन:पर्यायज्ञानी मारणान्तिक समुद्घात करते हैं?

समाधान-मन:पर्याय ज्ञानी मारणान्तिक समुद्घात नहीं करते हैं। प्रज्ञापनासूत्र के 5वें पद में उल्लेख है कि एक मन:पर्यायज्ञानी की दूसरे मन:पर्याय ज्ञानी से तुलना करें तो उनकी अवगाहना में त्रिस्थानपतित ही अन्तर होता है। दूसरे शब्दों में उनकी अवगाहना में संख्यात गुणा से अधिक अन्तर नहीं होता।

यदि मन:पर्यायज्ञानी मारणान्तिक समुद्घात कर सकते होते तो उनकी अवगाहना असंख्यात योजन की हो जाती तथा अन्तर भी असंख्यात गुणा तक हो जाता, किन्तु असंख्यात योजन की अवगाहना आगमकारों ने नहीं मानी, इससे स्पष्ट हो जाता है कि वे मारणान्तिक समुद्घात नहीं करते हैं।

यहाँ ज्ञातव्य है कि मन:पर्यायज्ञानी साधु-साध्वियों की अवगाहना जघन्य दो हाथ से लेकर उत्कृष्ट 500 धनुष तक की हो सकती है। इस अवगाहना में आपस में तुलना करें तो संख्यात गुणा तक अर्थात् त्रिस्थानपतित का ही अन्तर हो पाता है।

जिज्ञासा– मन:पर्यायज्ञान के साथ कितने ज्ञान रह सकते हैं?

समाधान– मन:पर्यायज्ञान के साथ कम से कम दो ज्ञान मति और श्रुतज्ञान तो साथ में रहते ही हैं, किन्तु किन्हीं-किन्हीं साधकों में अवधिज्ञान भी साथ में हो सकता है। अर्थात् अवधिज्ञान साथ में रह भी सकता है और नहीं भी रहता। अवधिज्ञान की भजना है, किन्तु मति, श्रुतज्ञान की नियमा है।

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

जिनवाणी पर अभिमत

(1) जिनवाणी का स्वरूप ऐसा व्यापक है कि दस तारीख होते ही हर माह इसकी प्रतीक्षा रहती है। सभी श्रेणियों के पाठकों के लिए विविध प्रकार की श्रेष्ठ सामग्री इसमें पढ़ने को मिलती है। सन्तों के प्रवचन भी सरल, सटीक और विद्वत्तापूर्ण होते हैं और उनका सम्पादन भी बहुत अच्छा किया जाता है। मई-जून 2021 के अङ्क में मधुरव्याख्यानी कविरत्न श्री गौतममुनिजी म.सा. का प्रासङ्गिक उद्बोधन 'असंखयं जीवियं मा पमायए' बहुत ही भावभरा है। यह आहत को असीम राहत देने वाला और सबको सद्राह दिखाने वाला है। श्रद्धेय मुनिश्री का यह कथन बहुत उपयोगी है-''किसी की सेवा और सहयोग नहीं करने से भले ही कोई दण्ड नहीं मिले, मगर मानव का सामाजिक मूल्य जरूर खत्म हो जाता है।''

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. की 'पुण्य की उपादेयता' विषयक लेख शृङ्खला इस कथन को तात्त्विक आधार प्रदान करती है। उक्त अंक में भी उनका प्रवचन 'जीव पर कर्म का प्रभाव' उन पण्डितों के लिए मार्गदर्शक है, जो एक तरफा बात करते हैं और दोहरा जीवन जीते हैं। पुण्य को बुरा बताते हैं और पुण्य की लालसा रखते हैं। शरीर से मोह नहीं रखने का उपदेश वातानुकूलित हॉल में बैठकर देते हैं। सेवा का निषेध करते हैं और दूसरों का सहयोग चाहते हैं। सारी सुविधाएँ भोगते हुए खुद को बड़े दार्शनिक अन्दाज़ में 'अलिप्त' बताते हैं। मजे से आधुनिक वैज्ञानिक साधन अपनाते हैं और विज्ञान को कोसते हैं। उनकी बात से असहमत को 'मिथ्यात्वी' का ख़िताब दे देते हैं। पुण्य, सेवा, दान, व्रताचरण आदि को खराब कहने वाले ऐसे पण्डितों को श्रद्धेय मुनिश्री के तत्त्व-चिन्तन पर गौर करना चाहिये।

-श्री सुरेशचन्द्र, डॉ. दिलीप धींग
बम्बोरा-313706, उदयपुर (राज.)

(2) मैं जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। इसमें सभी लेख ज्ञानवर्धक, रुचिकर तथा अनुकरणीय होते हैं। जिनवाणी का जून 2021 का अङ्क बहुत अच्छा लगा। 'कोरोना का प्रभाव' शीर्षक से सम्पादकीय लेख समसामायिक एवं ज्ञानवर्धक है।

प्रवचन 'स्वयं को करनी होगी तप-साधना' परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.ने बहुत ही सूक्ष्म दृष्टि से तप की साधना और तप का विश्लेषण किया है, जिससे हर साधक को तप साधना के प्रति रुझान हो सकता है।

'आचार्यश्री हस्ती की इतिहास दृष्टि' लेख श्री ज्ञानेन्द्र बाफणा का अतीत की घटनाओं का आकलन प्रभावी है। इस लेख में उन्होंने बहुत ही ज्ञानवर्धक बात कही जो हृदय को पवित्र करने वाली है। आचार्य भगवन्त गुरु हस्ती के लिए तो मुँह से बरबस ये ही शब्द निकलते हैं-

''पाप विनाशक सत्य उपासक,
सर्व गुणों के धारी हैं।
नर श्रेष्ठ हुए जिस पुण्य गोद से,
धन्य धन्य महतारी हैं।''

-श्री महावीर प्रसाद जैन
मु.पो. कुण्डेरा, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 59
ISSN 2249-2011

English-section

Let Us Call Our Soul

Sh. Jitendra Chaurdia 'Prekshak'

In this present age of scientific technology and materialistic prosperity, the world seems to be too small. Increasing means of transportation and communication have made the world contracted and small. Now a days, modern man communicates with his family members, relatives and friends who are miles away from him as if they are close to him. We too had and are having conversations with our kith and kin a lot of times through telephone and mobile phone. How ridiculous condition is this of present human being that he takes interest and feels joy in connecting other distant persons through telephone etc. ! He also feels happy and is prepared to know the physical and mental well-being and worldly progress of others. He does miss his distant friends and relatives, but he never recalls his own soul with whom he has been living from time immemorial. Neither he takes interest in talking to him-self, nor he feels joy in having conversation with him-self (his soul). They, whom we consider to be our nearest and indifferent, are actually distant and different from us. On the contrary, the one (our soul), whom we think to be distant and different due to our ignorance, is exactly right within us- our nearest and indifferent. Why have we been committing this blunder for a very long time.? Is this fascination not the climax of our spiritual decline.? One who always remembers his distant persons and if he forgets his nearest inmate-his soul, then having formed in the rare and precious existence of a human-being what terrible evil other than this can be to him.? We do memorize and use other persons telephone numbers as per our need. But there are very few persons who know their own soul's telephone number. Come on.! Let's know that very telephone number, of our soul and use it time to time to engage ourselves engrossed in self-conversation.

Although, to talk to our soul and to elevate the spiritual level of an individual- the sadhak, there have been mentioned lots of numbers in the scriptures of Jainism. To connect to our soul there is an easiest and convenient number which can be dialed from home or forest, town or village, rush or lonely etc. places effortlessly. That very number is being disclosed here so that we too can hear the voice of our soul and talk to it silently. The process of dialing the contact number of our soul is thus-

In the beginning dial 5, means five characteristics of practical *Samyaktva* (*Shama, Sanvega, Nirveda, Anukampa* and *Astha*) must be practiced as the ideals of our lives. Then press 5 again, means impose a restriction on the free movement of five senses viz. sense of hearing, sight, smell, taste and touch. The aim of avoiding the bad habits of these five must be followed. Later, press 4, which means the venom of four *Kashayas*- namely anger, pride, deceit and greed must be destroyed, lessened or restrained. Dial 3 afterwards, meaning three main activity parts of our body namely- thoughts, words and actions must be kept still. Convert the bad activities of these three in to good. Then dial 18, means discard eighteen sins for a certain period of time for instance up to the duration of one, two or more *Samayiks*. Therefore, now

we have the telephone number of our soul as 554318. But here this fact to be kept in mind that before dialing the above mentioned contact number of our soul, don't forget to add 2 in its beginning. It means that two types of inauspicious meditations viz. *Aartha* and *Raudra* to be avoided and two types of auspicious meditations namely-*Dharma* and *Shukla* to be entertained. If we forget to add two (*Dharma* and *Shukla* concentrations) or to suppress two (*Aartha* and *Raudra* concentrations) before connecting our soul, then it is certain that these two will not let the contact to be done. Therefore due to addition of two (2) before previous contact number, it has become now 2554318.

If we dial the same contact no. following the instructions mentioned above, then through the telephone of *Samayika* or equanimity we can certainly hear the voice of our soul and talk to it silently. Following the conversation we can let ourselves know about religious health-status, renunciation of sins, removal of vices, and incurring of merits (*Punya*) etc. spiritual progress of our soul. The main features of this telephone number of soul are following–

1. This is harmless and devoid of sins.
2. Through this telephone soul can be come in to contact at anytime and from any where in the world.
3. This is a local no. across the world.
4. The users of this telephone don't have to pay any monthly rental or bill.
5. There is no restriction on less or much use of it.

One thing is here specially to be kept in to mind that religious activities like *Samayika* etc. which are too effective to yield a soul the bliss of heaven and salvation (*Moksha*) after rendering it light from the burden of *Karmas* or destroying them completely, so are these activities not capable of having made a soul get rid of worldly sufferings and uneasiness ? of course they can ! but what we need to have is true faith and belief, hard toil and valour! Then all source of happiness, bliss and peace will automatically bestow up on us.

The one and only purpose of above explanation is that each and every follower of the path of salvation must use a certain part of time daily for doing *Samayika*. And taking the support of *Samayika* he/she should contemplate over him/her self through self contemplation or a thorough introspection. Thus we can find out our sinful deeds, demerits and weaknesses and also get rid of them through regular practice. In addition to, incurring merits and entertaining auspicious thoughts, the dormant powers of our soul will raise and these powers will fight our inner enemies.

Following the fight, we will lead our inner enemies to defeat. Thus after destroying them completely, we will be the true aspirants for salvation - The *Moksha*. That's what my auspicious wish.. .!

- No. C-16/1, Krishna-Kunj, Haled Road, Bhilwara-311001 (Rajasthan)

दुःख मिटाना चाहते हो तो जिन चीजों से दुःख होता है, उनके प्रति आसक्ति को ढीली कर दो। यह समझो कि यह चीज मेरी नहीं है। जो चीज आपकी होगी वह आपसे कभी अलग नहीं होगी। जो चीज आपसे अलग होने वाली है, वह आपकी नहीं है।

-आचार्यश्री हस्ती

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 61
ISSN 2249-2011

रिपोर्ट

आचार्य हस्ती-स्मृति व्याख्यान माला के अन्तर्गत तीन वेबिनार का आयोजन

डॉ. धर्मचन्द जैन

11 अप्रेल, 2021 को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा 11वीं वेबिनार **'बिन्दु से सिन्धु की ओर'** विषय पर आयोजित की गई। जिसमें 150 दिवसीय तपस्विनी श्राविकारत्न **बिन्दुजी मेहता** (सुपुत्री श्रीमती बीनाजी मेहता, कार्याध्यक्ष अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल एवं श्रावकरत्न श्री भागचन्दजी मेहता) के साथ संवाद हुआ। बिन्दुजी मेहता ने जिस निष्काम भाव से तपस्या का शुभारम्भ किया वह गुरुकृपा से निरन्तर आगे बढ़ता गया। इस वेबिनार में बिन्दुजी की माता श्राविकारत्न **श्रीमती बीनाजी मेहता** से और गुरुभक्त मास्टर डुगुजी मेहता से वेबिनार के संयोजक **श्री रितुलजी पटवा** ने अनेक प्रश्न पूछकर रोचक संवाद उपस्थित किया। जिसमें बिन्दुजी की गुरुभक्ति, दृढ़ इच्छा शक्ति, गुरुकृपा, माता-पिता का सकारात्मक एवं मनोबल बढ़ाने वाला व्यवहार आदि का प्रकटीकरण हुआ। संवाद अत्यन्त प्रेरणाप्रद एवं जीवन्त चित्रण उपस्थित करने वाला था। बीनाजी मेहता के भावों को प्रकट करने वाला एक आलेख जिनवाणी के अप्रेल अङ्क में प्रकाशित भी हुआ है। सच में यह तपस्या एक आश्चर्य से कम नहीं रही। किस प्रकार धीरे-धीरे पूज्य आचार्यप्रवर अथवा श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से तपस्या के प्रत्याख्यान बढ़ते गए और बीच में कोई विघ्न भी आया तो वह भी गुरुभक्ति एवं दृढ़ इच्छा शक्ति के समक्ष नदारद हो गया।

डॉ. धर्मचन्दजी ने कहा कि यह तपस्या निष्काम भाव से की गई सहज तपस्या थी। जिसका शुभारम्भ दीर्घ तपस्या के संकल्प से नहीं हुआ, किन्तु शरीर की आसक्ति का त्याग करते हुए बिन्दुजी इस तपस्या में सहज रूप से आगे बढ़ती चली गई। प्रारम्भ में मण्डल के अध्यक्ष श्री सी.एम. बच्छावत ने सबका स्वागत किया और धन्यवाद ज्ञापन मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री विनयचन्दजी डागा ने सुन्दर प्रभावशाली रीति से किया।

9 मई, 2021 को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा आयोजित आचार्य हस्ती व्याख्यान माला वेबिनार-12 का प्रातः 11 बजे **'भावभरी हो साधना'** विषय पर किया गया, जिसके प्रमुख वक्ता अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर के रजिस्ट्रार श्रावकरत्न श्री धर्मचन्दजी जैन थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में शुभ एवं अशुभ भावों की विवेचना करते हुए उनका वर्गीकरण भी किया। उन्होंने कहा कि साधना के दो पक्ष हैं-द्रव्य और भाव। द्रव्य से भाव पुष्ट होता है तथा भाव से द्रव्य साधना सुरक्षित रहती है। अप्रशस्त भावों को छोड़कर प्रशस्त भावों को अपनाने से साधना का उद्देश्य सफल होता है। अप्रशस्त भावों की गणना करते हुए उन्होंने राग, ईर्ष्या, क्रूरता, संक्लेश, अज्ञान, विकार, मिथात्व, कषाय, वैर, असंयम, पाप आदि को अप्रशस्त या अशुभ भाव कहा तथा समभाव, वैराग्य, वीतरागता, विरति, क्षमा, संयम, पुण्य, मैत्री, दया आदि को शुभ भाव कहा। उन्होंने औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक औदयिक एवं पारिणामिक इन पाँच भावों का भी स्वरूप प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा कि भावयुक्त साधना तभी सफल हो सकती है जब हम आसक्ति को एवं स्वयं के दोषों को कम करें, आरम्भ परिग्रह पर नियन्त्रण करें, स्वयं के दोषों की निन्दा एवं गर्हा करें। क्षमाशीलता एवं निःस्पृहता को अपनाएँ। प्रशस्त भावों से ही साधना में तेजस्विता आती है।

इस वेबिनार में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के

कार्याध्यक्ष विनयशील **श्री विनयचन्दजी डागा** ने भी प्रमुख वक्ता के रूप में **भाव भरी हो साधना** विषय पर सुन्दर विचार अभिव्यक्त किए। उन्होंने कहा कि भावों की शुद्धि के लिए विवेक का जागृत होना आवश्यक है तथा विवेक की जागृति के लिए भावों की शुद्धि सहायक है। अशुद्ध एवं अशुभ भावों से जीव का पतन होता है तथा शुद्ध और शुभ भावों से जीव आत्मिक प्रगति करता है। भावों से की गई साधना अनन्त गुणा फल प्रदान करती है। द्रव्य साधना भी आवश्यक है तो भाव साधना अति आवश्यक है। उन्होंने प्रसन्नचन्द्र राजर्षि, संगम ग्वाला और जीरण सेठ के उदाहरण देकर भावों की महत्ता का सुन्दर प्रतिपादन किया। सारा भावों का खेल है। भावों से ही कर्मबन्ध होते हैं और भाव से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है अत: साधना शुद्ध भावों से की जानी चाहिए।

जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने विषय का उपसंहार करते हुए कहा कि भावों का प्रभाव मन, शरीर एवं वाणी पर भी पड़ता है। जो हमारी आत्मा में होता है, वह सब भाव है-'आत्मनि भवति इति भाव:।' द्रव्य साधना की परिपूर्णता भाव साधना से ही सम्भव है। उन्होंने अन्त में दोनों वक्ताओं का मण्डल की ओर से धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि दोनों वक्ताओं ने विषय का सुन्दर एवं मार्मिक प्रतिपादन किया है तथा वेबिनार का संयोजन मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री रितुलजी पटवा ने दक्षता एवं रोचकता के साथ किया है। इन सबका धन्यवाद एवं विशेषत: इस वेबिनार से जुड़े सभी श्रोताओं का धन्यवाद।

30 मई, 2021 को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्यपद के ज्येष्ठ कृष्णा 5 को 30 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में एक वेबिनार का आयोजन किया गया जिसमें अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया प्रमुख अतिथि रहे तथा शासन समिति के सदस्य श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर और श्रावकरत्न श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा, ब्यावर ने मुख्य वक्ता के रूप में भावपूर्ण अभिव्यक्ति की। संयोग से इस आयोजन के दिन भी ज्येष्ठ कृष्णा पञ्चमी थी।

2 जून, 1991 को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का चादर समारोह आयोजित हुआ था तथा उन्हें 22 अप्रेल, 1991 को आचार्य के रूप में घोषणा की गई थी। 30 वर्षों में उन्होंने संघ को एक नई ऊँचाई दी है। मुख्यअतिथि न्यायाधिपति श्री टाटिया साहब ने पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के विभिन्न अभियानों में व्यसनमुक्ति, ज्ञानार्जन के लिए स्वाध्याय, रात्रि भोजन-त्याग, धर्मस्थानक में सामायिक की चर्चा की। उन्होंने युवक परिषद् के गठन एवं श्राविका मण्डल की स्थापना, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड एवं संस्कार केन्द्र की स्थापना आदि के सम्बन्ध में कहा कि इन सबका प्रारम्भ आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के संघनायकत्व में हुआ है। गुणी-अभिनन्दन कार्यक्रमों में भी विस्तार मिला है जिसमें विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान, आचार्य हस्ती स्मृति सम्मान सम्मिलित हैं।

प्रमुख वक्ता श्री नौरतनमलजी मेहता ने अपने वक्तव्य में कहा है कि गुरु हमें ज्ञान देते हैं, उनके आचार-विचार एवं व्यवहार से अनमोल सूत्र प्राप्त होते हैं। पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. गुरु की कसौटी पर खरे उतरे हैं। आप आठ सम्पदाओं से युक्त हैं। आचार्यश्री सबके प्रति प्रीति एवं मैत्री का भाव रखते हैं। पूज्य आचार्यप्रवर विगत कुछ समय से आत्म-साधना में आत्मरमणता में तल्लीन रहते हैं। अधिकतर समय ध्यान में व्यतीत करते हैं। ज्ञानी ध्यानी संयमी साधक के दर्शन वन्दन से भक्तों को साधना का बल प्राप्त होता है। आप सामूहिक भोज में रात्रि भोजन न करने का आह्वान करते हैं। रात्रि भोजन-त्याग पर आपका विशेष बल है। आप ब्रह्म मुहूर्त्त में शय्या त्याग करने के साथ शास्त्र का परायण करते हैं। सूर्योदय होने पर अरिहन्त भगवान को 12 बार वन्दन करते हैं। प्रत्येक सोमवार वदी 10 एवं

प्रतिदिन की मौन साधना आपकी निरन्तर चल रही है। आपके जीवन में शान्ति एवं आनन्द के परमाणु विद्यमान हैं। आपने अपने गुरु से तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया। आपमें सिद्धान्त प्रियता एवं समाचारी पालन की दृढ़ता है। आप प्रवचन प्रभाकर के रूप में जाने जाते हैं। आपने भारत के अनेक प्रान्तों के ग्राम/नगरों में हजारों किलोमीटर की यात्रा में प्रचार कर लोगों को धर्मनिष्ठा से जोड़ा। (श्री नौरतनमलजी मेहता के विचारों का प्रकाशन अलग से जिनवाणी में प्रकाशित किया गया है।)

द्वितीय प्रमुख वक्ता श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा, ब्यावर ने अपने विचार सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर के 30 वर्षों के चातुर्मासों एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस वेबिनार में जो विचार व्यक्त किये उनमें पूज्य आचार्यप्रवर की गौरवगरिमा को बढ़ाने वाले घटना प्रसङ्गों का भी कथन किया। उनके द्वारा प्रस्तुत विचारों को भी जिनवाणी के आगामी अङ्क में प्रकाशित करने की योजना है।

इस वेबिनार में श्री रितुलजी पटवा एवं डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने वक्ताओं से संवाद शैली में प्रश्न किए एवं वक्ताओं ने समीचीन उत्तर देकर इसे रोचक स्वरूप प्रदान किया। इस संगोष्ठी में मण्डल के मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रमोद भावना

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

गुणीजनों को देख उर में प्रसन्नता भर जाना
गुणों को देख गुणानुराग हो जाना है प्रमोद भावना
गुणियों के गुणगान से, गुणों की करें आस्वादना
गुण ग्रहण करनी से अवगुणों को है त्यागना

प्रमोद भाव से ही होता है गुणों का विशदीभवन
भाव प्रवणता तीव्र वेग से क्षय होता हर बन्धन
पर गुण प्रमोद से समतामय हो जाती है मति
देदीप्यमान होता निर्मल मन प्रसन्नता से अति

सद्गुण, गुण अनुराग से रहे सदा अनुरक्त
गुण प्रशंसा के वचनों से, कभी न हों विभक्त
गुणों के उज्ज्वल प्रकाश से उल्लास भाव हो जागृत
गुणानुमोदन से दूर हों मात्सर्य कर्म जो थे आत्मावृत्त

गुणों को गुण रूप में देखने से ही गुणानुराग बढ़ता है
भावानुवृत्ति करने से प्रमुदित प्रवाह बहता है
सद्गुण पान करने को सदा खुले रहें मन के द्वार
आत्मिक आनन्द सुधा से भीगते रहे उर के उद्गार

भाव से बन्धन भाव से मुक्ति, कह गए ज्ञानी ध्यानी
भावित प्रज्ञा से अनुभूत कर हमको है अपनानी
गुणियों के गुण प्रकाश कर,
करें गुणी सम्मान, सत्कार

स्थापित करें संघ समाज में गुण आराधन व्यवहार
आराधना से प्रमुदित होकर बढ़े समर्पण भाव
प्रमोद भावना के अनुसरण से बढ़ते रहे गुणों का चाव
धरा पे सब धरा रह जाएगा वैभव का अम्बार

वीतरागता प्रति प्रमोद बिन, हो नहीं सकता भव पार
धन्य भाग, फैला रहे गुणी मुदित धर्म गंगा की धार
प्रमुदित चित्त से कर रहे जन-जन का उपकार
'प्रमोद भावना' की अनुप्रेक्षा कर ले रे भवी प्राणी!
दिखला रही मुक्ति पथ हमको 'मुदित' जिनवाणी।

-1101 वुड साइड, जी साउथ गोखले रोड़, प्रभादेवी, मुम्बई-400025 (महाराष्ट्र)

सत्साहित्य प्रकाशन एवं जिनवाणी प्रचार-प्रसार हेतु
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को करमुक्त होकर अर्थसहयोग प्रदान करें।

ISSN 2249-2011

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

श्री गौत्तमचन्द जैन

प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर-(संकलित) **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, सुबोध बॉयज सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 (राज.) 2. जोधपुर-0291-2624891, 3. अहमदाबाद 9429303088, 4. बेंगलोर-9844148943, 5. जोधपुर-9461026279, 6. जलगाँव-9422591423, **प्रथम संस्करण**-2021, **पृष्ठ**-72 + 8 = 80, **मूल्य**-40 रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक बालकों के लिए संस्कार प्रदात्री पुस्तक है। इस पुस्तक में नन्हे-नन्हे बालक-बालिकाओं और किशोरों में सत्संस्कारों का बीजारोपण करने के लिए 60 प्रार्थना, भजन और गीतों का संकलन प्रस्तुत किया गया है। सभी चयनित भजन, गीत और प्रार्थना बालकों में प्रेम, सहिष्णुता, सत्य, संयम, विनय, शाकाहार, भक्ति, अनुशासन, साहस और सेवा आदि सद्गुणों का वपन एवं विकास करने वाली हैं। प्रार्थनाओं और भजनों को स्मरण करके प्रात:काल और सायंकाल गाकर पाठ किया जा सकता है। प्रात:काल प्रार्थना को लय के साथ गाने से यह दिनभर हमारे मस्तिष्क में गूँजती रहती है, जिससे नकारात्मक विचारों को हमारे मस्तिष्क में प्रवेश करने का अवसर ही नहीं मिलता है। प्रस्तुत पुस्तक आध्यात्मिक संस्कार-केन्द्रों और पाठशालाओं के लिए भी उपयोगी है। सभी श्रावक-श्राविकाओं को प्रस्तुत पुस्तक की प्रार्थनाएँ स्वयं कण्ठस्थ कर प्रात: एवं सायं गानी चाहिए और अपने बच्चों को भी प्रार्थनाएँ बोलने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए जिससे स्वत: ही उनमें धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों का निर्माण हो सके।

श्री विनयचन्द चौबीसी-रचनाकार :: भक्त कविश्रेष्ठ श्री विनयचन्दजी कुम्भट। मार्गदर्शन-**आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.**। विवेचन-लेखन-श्री सम्पतराजजी चौधरी। **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-पूर्व पुस्तकानुसार। **प्रथम संस्करण**-2021, **पृष्ठ**-240+16+6+2 = 264, **मूल्य**-75 रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक 'विनयचन्द चौबीसी' में पूज्य जैनाचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. की परम्परा के आचार्यप्रवर श्री हमीरमलजी म.सा. के उपदेशों को हृदय में धारण कर भक्तप्रवर एवं कविश्रेष्ठ श्री विनयचन्दजी कुम्भट के द्वारा रचित चतुर्विंशति स्तवनों का संग्रह प्रस्तुत किया गया है। श्री विनयचन्दजी कुम्भट प्रज्ञाचक्षु श्रावकरत्न थे और उन्होंने 24 तीर्थङ्करों की स्तुति की रचना की है, जो 'विनयचन्द चौबीसी' के नाम से प्रसिद्ध है। स्थानकवासी श्वेताम्बर जैन परम्परा में इस विनयचन्द चौबीसी का विशिष्ट स्थान है। इन चौबीसियों को श्रावक-श्राविका ही नहीं अपितु साधु-साध्वी भी अपने प्रवचनों के प्रारम्भ में लय के साथ गान करते हैं। लय के साथ गान करने पर सभी भक्तजन श्रद्धा से अभिभूत होकर भाव-विभोर हो जाते हैं।

इस पुस्तक के प्रारम्भ में विवेचनकार ने 'श्री विनयचन्द चौबीसी का उद्भव-एक शब्द चित्र' प्रस्तुत किया है जो अत्यन्त भावपूर्ण, सारगर्भित और समर्पण की पराकाष्ठा को प्रदर्शित करता है। लेखक ने प्रस्तावना में भक्ति का महत्त्व, जैनधर्म में स्तोत्र/स्तुति साहित्य, श्री विनयचन्द चौबीसी के स्तुतिकार का परिचय मूलपाठ एवं परिचर्चा का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। चौबीस तीर्थङ्करों की स्तुति (चौबीसी) के प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में लेखक ने प्रत्येक तीर्थङ्कर की स्तुति का संक्षिप्त परिचय दिया है, जिससे पाठक को स्तुति एवं तीर्थङ्कर के सम्बन्ध में प्रारम्भिक जानकारी प्राप्त हो जाती है। तत्पश्चात् चौबीसी का मूलपाठ मोटे अक्षरों में दिया गया है और साथ में चौबीसी की तर्ज या राग का नामोल्लेख भी किया गया है जिससे पाठक सम्बन्धित राग में चौबीसी का गान करके वास्तविक आनन्द को प्राप्त कर सके। लेखक ने स्तुति के मूल पाठ के अनन्तर स्तुति में प्रयुक्त कतिपय शब्दों के अर्थ भी बताये हैं। इससे पाठक को स्तुति के अर्थ को समझने में

सुगमता रहती है।

इसके पश्चात् लेखक ने स्तुति के एक-एक पद्य का अन्वयार्थ किया है और फिर विस्तार से भावार्थ प्रस्तुत किया है। इसको पढ़कर पाठक श्रद्धा से आप्लावित होकर भाव-विभोर हो जाता है और उसे सच्चे आनन्द की अनुभूति होती है। वह तीर्थङ्कर भगवान से प्रार्थना करता है कि उसमें भी वे सभी गुण प्रकट हों जो भगवान में है। उसमें भी वह शक्ति और सामर्थ्य प्रकट हो जो भगवान में है। भावार्थ के साथ ही चौबीसी (स्तुति) में वर्णित तीर्थङ्कर का परिचय भी दिया गया है और उनके कतिपय पूर्वभवों का वर्णन भी किया गया है जिसको पढ़ने से पाठक को तीर्थङ्करों के जीवन चरित की जानकारी एवं प्रेरणा मिलती है।

सभी स्तुतियाँ (चौबीसी) भक्ति प्रधान हैं, परन्तु कई चौबीसियाँ कथा प्रधान, ज्ञानगर्भित, भक्ति पूर्ण समर्पण, प्रीतिप्रधान, प्रशस्त ध्यान प्रधान, आत्मा के 8 गुण और तत्त्वप्रधान, मुक्ति की कामना, आत्मस्वरूप की मीमांसा और मनुष्य जन्म की दुर्लभता आदि विषयों का भी समावेश किये हुए हैं।

अन्त में 24वें तीर्थङ्कर भगवान महावीर की स्तुति (चौबीसी) प्रस्तुत की गई है जो दर्शन प्रधान स्तुति है। इसमें संसार को पार करने के लिए चार समाधि स्थान बताये हैं-श्रुत समाधि, विनय समाधि, आचार समाधि और तप समाधि। आत्मा अविनाशी है और शरीर नाशवान है। जड़ और चेतन का भेद बताते हुए आत्मा के शुद्ध स्वरूप को प्राप्त करने के लिए शरीर से अनासक्त रहने की प्रेरणा दी गई है। स्तुति के भावार्थ के पश्चात् भगवान महावीर के जीवन चरित्र का विस्तार से रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रेरणादायी वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक 'श्री विनयचन्द चौबीसी' सभी श्रावक-श्राविकाओं और साधु-साध्वियों के लिए भी पठनीय हैं और चौबीसियाँ स्मरणीय तथा लयमय हैं। भक्तिरस में आकण्ठ नियज्जित होकर सच्ची शान्ति की अनुभूति की जा सकती है।

विचार दर्पण-लेखक-गौतम पारख। **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-रांका फेमिली फाउण्डेशन, अध्यात्म एवं संस्कृति तथा स्वास्थ्य व शिक्षा सेवार्थ, मुम्बई (महाराष्ट्र), **तृतीय संस्करण**-2021, **पृष्ठ**-314

प्रस्तुत पुस्तक 'विचार दर्पण' लेखक की तृतीय रचना है। इससे पूर्व लेखक की दो रचनाएँ 'विचार प्रवाह' और 'विचार मन्थन' प्रकाशित हो चुकी हैं। दोनों रचनाएँ काफी लोकप्रिय रही हैं। प्रस्तुत पुस्तक 'विचार दर्पण' में लेखक ने अनुभव किया है कि विचारों की मलिनता ही जीवन का दुर्भाग्य है। दर्पण में अपना चेहरा देखकर खुश होना बड़ी भूल है। दर्पण में अपने विचारों की तरङ्गों को देखकर, समझकर, उनमें परिमार्जन करना, विकृतियों से बाहर निकलना, कलुषता से ऊपर उठना ही फ़र्ज की पुकार, मानवता का शृङ्गार एवं सज्जनता का पाथेय है।

जब-जब मन अटके-भटके, मलिनता, क्रूरता, वासना, छल-कपट से अनुरञ्जित होने लगे तो विचारों के दर्पण के समक्ष खड़े होकर स्वयं को निहारें। विचारों की गन्दगी की दुर्गन्ध से जब हम परिचित होने लगेंगे तो धिक्कार भाव का सृजन विचारों में होने लगेगा। विचारों के दलदल से निकलने वाली दुर्गन्ध को ही कुमकुम के पगलिये बनाने और कमल खिलाने का पुरुषार्थ हम करने लगेंगे तो जीवन धन्य हो जायेगा। इस दृष्टि से पुस्तक का नाम 'विचार दर्पण' भी सार्थक सिद्ध होता है।

प्रस्तुत पुस्तक 'विचार दर्पण' में लेखक ने 73 लेख विभिन्न शीर्षकों से प्रस्तुत किये हैं। लेखक ने प्रस्तुत लेखों को जीवन के उदाहरणों, घटनाओं, प्रसङ्गों और कथाओं का उल्लेख करके सरल, सहज, स्पष्ट एवं रोचक बना दिया है।

लेख के प्रारम्भ में ही लेख के सार को 'कोष्ठक' में प्रस्तुत कर दिया गया है। साथ ही लेख में लेखक ने अपना विषय सम्बन्धी चिन्तन प्रस्तुत करके तत्सम्बन्धी घटना कथा और स्वयं का अनुभव प्रस्तुत किया है जो पाठक के लिए अतीव रुचिकर एवं प्रिय होता है। लेखक ने प्रत्येक अध्याय के अन्त में स्वयं के लिए प्रभु से

प्रार्थना की है जो अप्रत्यक्ष रूप से सभी के लिए है और पाठक को भाव-विभोर कर देती है। सभी लेख इतने रुचिकर एवं प्रभावशाली हैं कि उनको निरन्तर पढ़ने की इच्छा पाठक की रहती है। पुस्तक में जैनधर्म के साथ-साथ अन्य धर्मों से सम्बन्धित घटनाओं, प्रसङ्गों एवं कथाओं का भी समावेश किया गया है।

पुस्तक के अन्त में आचार्यश्री नानेश की चिन्तनमणियाँ सभी साधकों के लिए उपयोगी हैं। अन्त में शाश्वत सत्य, आत्मशुद्धि और मेरी भावना के शीर्षक से प्रार्थनाएँ प्रस्तुत की हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 'विचार दर्पण' लेखक की श्रेष्ठ कोटि की रचना है जो पाठक का सर्वांगीण विकास करने में सहायक सिद्ध होगी।

समणसुत्तं (श्रमणसूत्रं) जैनदर्शन सार (Essence of Jainism)-लेखक (दोहा लेखक)-हेमन्त लोढ़ा 9325536999 **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-सृजन बिंब प्रकाशन, 301, सनशाइन-2, के.टी. नगर, काटोल रोड़, नागपुर-440013 (महाराष्ट्र) मो. 8208529489 (रीमा), 9373271400 (अविनाश) ईमेल-srijanbimb.2017@gmail.com ISBN : 978-81-941621-4-8, **प्रथम संस्करण**-2019, **पृष्ठ**-405 + 11 = 416, **मूल्य**-300 रुपये।

'समणसुत्तं' नामक ग्रन्थ की रचना आचार्य विनोबाजी की प्रेरणा से सन् 1975 में हुई है। इस ग्रन्थ का प्रारम्भिक संकलन श्री जिनेन्द्र वर्णीजी ने किया है। भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव के अवसर पर दिल्ली में इस ग्रन्थ की सर्वमान्यता के लिए संगीति का आयोजन हुआ। अधिवेशन में चारों आम्नायों के मुनिगण बैठकों में उपस्थित हुए। आचार्यश्री तुलसीजी, आचार्यश्री धर्मसागरजी, आचार्यश्री विजयसमुद्रसूरीजी एवं आचार्यश्री देशभूषणजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम एक संकलन 'जैन धर्म सागर' नाम से प्रकाशित किया गया।

प्रस्तुत ग्रन्थ में चार खण्ड, 44 प्रकरण और 756 गाथाएँ हैं। गाथाओं का चयन प्राचीन मूल ग्रन्थों से किया गया है। यह सूत्र आगमवत् स्वत: प्रमाण है। इसका प्रथम खण्ड ज्योतिर्मुख, द्वितीय खण्ड-मोक्षमार्ग, तृतीय खण्ड-तत्त्वदर्शन और चतुर्थ खण्ड-स्याद्वाद के नाम से निबद्ध है। इन चारों खण्डों में जैनधर्म के सर्वांगीण सारभूत संक्षिप्त परिचय का समावेश हो गया है। यह एक सर्वसम्मत प्रतिनिधि ग्रन्थ है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में श्री हेमन्त लोढ़ा ने सर्वप्रथम दोहा छन्द में हिन्दी अनुवाद किया है। इसके पश्चात् मूल प्राकृत की गाथा तत्पश्चात् संस्कृत-छाया, हिन्दी अनुवाद किया गया है और अन्त में अंग्रेजी भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। इस तरह से यह ग्रन्थ हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत, अंग्रेजी सभी भाषाओं के जानकार लोगों के लिए उपयोगी और ज्ञानवर्द्धक सिद्ध हुआ है।

प्रस्तुत ग्रन्थ समणसुत्तं के प्रथम ज्योतिर्मुख खण्ड में मंगलसूत्र, जिनशासनसूत्र, संघसूत्र और कर्म, मिथ्यात्व, धर्म, संयम, अहिंसा, अप्रमाद एवं आत्मा से सम्बन्धित विषयों के सूत्र दिये गये हैं। इसी प्रकार से द्वितीय मोक्षमार्ग (खण्ड) में रत्नत्रय के सूत्रों के साथ में साधना सूत्र, द्विविध धर्मसूत्र, आवश्यकसूत्र, तपसूत्र और ध्यानसूत्र के साथ संलेखनासूत्र आदि विषयों का विवेचन किया गया है। तृतीय खण्ड तत्त्वदर्शन में तत्त्वसूत्रों के साथ में द्रव्य तथा सृष्टिसूत्रों का वर्णन किया गया है। ग्रन्थ के चतुर्थ खण्ड स्याद्वाद में अनेकान्त, प्रमाणनय, स्याद्वाद एवं सप्तभङ्गी के साथ समन्वय एवं निक्षेपसूत्रों का वर्णन करते हुए समापन एवं वीरस्तवन के सूत्र प्रस्तुत किये गये हैं।

वास्तव में प्रस्तुत ग्रन्थ 'समणसुत्तं' जैनदर्शन का सार है और लेखक श्री हेमन्तजी लोढ़ा ने हिन्दी में दोहा छन्द में मूल के आशय को प्रभावी रूप से प्रकट करने वाला अनुवाद करके इसे सभी हिन्दी भाषी और हिन्दी प्रेमियों के लिए अत्युपयोगी, ज्ञानवर्धक और आध्यात्मिक शिक्षाप्रद बना दिया है। कतिपय दोहे तो

कण्ठस्थ करने योग्य हैं ताकि उनसे सदैव प्रेरणा मिलती रहे। अनुवाद का नमूना इस अंक में प्रकाशित है। लेखक का प्रयास सराहनीय है।

इतिहास पुरुष आचार्य हस्ती-लेखक-डॉ. दिलीप धींग। **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-आचार्य हस्ती फाउण्डेशन, महामन्त्री-श्री श्रीपालचन्दजी जैन (देशलहरा) मकान नं. 32-127/198, प्लॉट नं. 198, स्ट्रीट नं. 8, श्री सत्यसांई एनक्लेव, एम.डी.एफ. रोड़, बोवेनपल्ली, सिकन्दराबाद-500 009 (तेलंगाना) मो. 9391100974, **प्रथम संस्करण**-2021, **पृष्ठ**-112, **मूल्य**-50 रुपये।

आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष के अवसर पर डॉ. दिलीप धींग ने 'इतिहास पुरुष आचार्य हस्ती' पुस्तक की रचना कर आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है। पुस्तक की रचना लेखक ने 'नमो पुरिसवरगंध हत्थीणं' ग्रन्थ को आधार बनाकर तथा व्यक्तिगत जानकारी और संस्मरणों के आधार पर की है।

वास्तव में तो आचार्यश्री हस्ती का जीवन एवं व्यक्तित्व और कृतित्व इतना विशाल था कि उसको एक लघुकाय पुस्तक में लिपिबद्ध करना सम्भव नहीं है। उनका विराट् व्यक्तित्व था। उन्होंने 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास' जैसे विशालकाय ग्रन्थ की चार भागों में रचना की और वे स्वयं भी अपने त्याग और करुणा तथा लोकोपकारी कार्यों एवं निरतिचार संयमी जीवन से इतिहास पुरुष बन गये। उन्होंने 13 दिवसीय तप-संथारा करके अपने मरण को भी महोत्सव बनाकर इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया।

इस पुस्तक में लेखक ने आचार्यश्री हस्ती के जीवन चरित को तीन विभागों में विभक्त किया है। प्रथम विभाग में 'निबन्ध और व्याख्यान' में नौ लेख प्रस्तुत किये हैं, जिनमें आचार्यश्री हस्ती के जीवन की कतिपय विशेषताओं का वर्णन प्रस्तुत किया है। जैसे कि एकता और समता के वे प्रोत्साहक थे। शाकाहार एवं प्राणिरक्षा के सम्बन्ध में उनका विशेष योगदान रहा। जैनधर्म के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने स्वाध्यायी के रूप में प्रबुद्ध वर्ग को तैयार किया। युवापीढ़ी को वे प्रेरणा प्रदान करते और नारी जगत् को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देते थे। आचार्यश्री हस्ती आध्यात्मिक चेतना तथा ज्ञान और मैत्री के पर्याय थे। इसके साथ ही लेखक ने एक लेख में आचार्यश्री हस्ती की कतिपय प्रमुख विशेषताओं का भी उल्लेख किया है।

पुस्तक के द्वितीय विभाग में लेखक ने आचार्यश्री हस्ती के जीवन से सम्बन्धित संस्मरण एवं प्रसङ्गों का वर्णन किया है। यथा-आचार्य हस्ती का विद्वत्प्रेम, असली रत्न, पवित्र आँसू, अन्तिम शरण आदि। इस विभाग में लेखक ने कतिपय प्रमुख श्रावकों के जीवन से सम्बन्धित आचार्यश्री हस्ती के संस्मरणों का भी उल्लेख किया है जो कि शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायी है और आचार्यश्री के प्रति श्रद्धा के भाव जगाने वाले हैं।

तृतीय विभाग 'काव्य एवं अन्य' में कविता और गीत आदि प्रस्तुत किये गये हैं। 'आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला' कविता वास्तव में कमाल की है और आचार्यश्री हस्ती आरती भी प्रतिदिन प्रार्थना के रूप में गाये जाने योग्य है। अन्त में लेखक ने 'मनीषियों की दृष्टि में आचार्यश्री हस्ती' शीर्षक के अन्तर्गत अनेक आचार्यों और विद्वानों के मत/विचार संकलित कर प्रस्तुत किये हैं, जो आचार्यश्री के गुणों पर प्रकाश डालते हैं। पुस्तक के अन्त में आचार्य हस्ती फाउण्डेशन का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महारानी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

जब कभी तुम्हारा मन साधना से चला जाय, भोग की वस्तुओं में लग जाय, परिवारजनों, पुत्र आदि में चला जाय, अर्थ पर मन चला जाय तो सबसे पहले यह सोचो कि जिनको मैं अपना समझ रहा हूँ, वे मेरे नहीं हैं, और मैं भी उनका नहीं हूँ। **-आचार्यश्री हस्ती**

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 68
ISSN 2249-2011

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम संवत् 2078, ईस्वी सन् 2021)

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा विक्रम सम्वत् 2078 सन् 2021 हेतु साधु-मर्यादा के समस्त आगारों के साथ घोषित चातुर्मासों का विवरण। -सम्पादक

1. पीपाड़सिटी, जोधपुर (राज.)

- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.
- महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.
- श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.
- श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.
- श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
- श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. ठाणा 6

चातुर्मास-स्थल-श्रीमती शरद चन्द्रिका मोफतराज मुणोत स्वाध्याय भवन, राता उपासरा के पास, काला भाटा, पीपाड़ सिटी-342601, जिला-जोधपुर

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री श्रेणिकजी कटारिया, अध्यक्ष, काबरों की पोल, पो. पीपाड़ सिटी-342601, जिला-जोधपुर (राज.), मोबाइलः 94616-46400, ईमेलः s.katariya33@gmail.com
2. श्री नमन मेहता, मंत्री, मोबाइलः 94141-16766
3. श्री सुमतिचन्दजी मेहता, मोबाइलः 94144-62729
4. श्री अक्षयजी जैन, मोबाइलः 83870-15058
5. श्री अखिलजी लुणावत, मोबाइलः 80001-36342

आवागमन के साधन- पीपाड़ शहर जोधपुर, मेड़तासिटी, अजमेर, जयपुर, बिलाड़ा, पाली, ब्यावर जैसे समीपवर्ती क्षेत्रों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। जोधपुर से पीपाड़ शहर के लिए हर आधे घण्टे में रोडवेज व प्राइवेट बसें उपलब्ध रहती हैं। चातुर्मास स्थल बस स्टेण्ड से 1.5 किमी. और पीपाड़ रोड़ रेलवे स्टेशन से 8 किमी. की दूरी पर स्थित है।

2. मानसरोवर, जयपुर (राज.)

- मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्रीगौतममुनिजी म.सा.
- श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.
- श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल-श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, उपासना स्थल, महावीर भवन, बड़ा बाजार, किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.), ईमेलः Mahaveerbhawanmjr@gmail.com

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री ज्ञानचन्दजी जैन (दुनीवाल), अध्यक्ष, म.न. 38/113-114, कल्याण विला, किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.), मोबाइलः 99281-61514
2. श्री धर्मचन्दजी जैन (पाटोली), मन्त्री, मोबाइलः 94600-68556
3. श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन, मोबाइलः 98293-00138
4. श्री राजेन्द्र कुमारजी जैन 'राजा', मोबाइलः 94142-24209

आवागमन के साधन-महावीर भवन स्थानक, मानसरोवर जयपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन से 9 किमी., दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन से 5 किमी., गाँधीनगर रेलवे स्टेशन से 6 किमी तथा सिन्धी कैम्प बस स्टेण्ड से 10 किमी. एवं दुर्गापुरा बस स्टेण्ड से 6 किलोमीटर दूर है।

3. पुष्कर रोड़, अजमेर (राज.)

- व्याख्यानी सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा.
- श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन, अरिहन्त कॉलोनी, महावीर कॉलोनी के पास, पुष्कर रोड, अजमेर-305001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री विवेकजी महनोत, अध्यक्ष, फोन नं. 0145-2420571 मो. 98291-54156
2. श्री चन्द्रप्रकाशजी कटारिया, मन्त्री, 53, नवग्रह कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर-305002 (राज.), फोन नं. 0145-2621819, 94142-81050
3. श्री चन्द्रप्रकाश जी कोठारी-फोन नं. 0145-2426702, 98290-70092
4. श्री रिखबचन्द जी माण्डोत-94140-07508

आवागमन के साधन-अजमेर भारत के प्रमुख शहरों से रेल एवं बस सेवा से जुड़ा हुआ है। पुष्कर रोड़ स्थानक मुख्य रेलवे स्टेशन से तथा बस स्टेण्ड से 2.5 किमी. की दूरी पर स्थित है।

4. गोटन, जिला-नागौर (राज.)

卐 तत्त्वचिन्तक श्रद्धेयश्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

卐 तपस्वी श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ स्वाध्याय भवन, जैन कॉलोनी, गोटन-342902, जिला-नागौर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री हंसराजजी चौपड़ा, अध्यक्ष-हस्ती जनरल स्टोर, एस.बी.आई.बैंक के सामने, मैन रोड़, गोटन-342902, जिला-नागौर (राज.), मोबाइलः 82786-81473, 94602-85067, ईमेलः pradeepchopra40@gmail.com
2. श्री कुन्दनजी ओस्तवाल, मन्त्री, मो. 94141-18701
3. श्री ओमप्रकाशजी ओस्तवाल-94685-48048, 88900-78538
4. श्री अभयकुमारजी लोढ़ा-94145-47087

आवागमन के साधन-गोटन देश के प्रमुख शहरों से रेल द्वारा जुड़ा हुआ है। स्थानक से रेलवे स्टेशन 300 मीटर तथा बस स्टेण्ड से 500 मीटर की दूरी पर स्थित है।

5. नेहरु पार्क, जोधपुर (राज.)

卐 व्याख्यानी श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोनः 0291-2636763, 2624891

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुभाषजी गुन्देचा-अध्यक्ष, 676-ए, दसवीं 'सी' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.), मोबाइलः 93147-00972
2. श्री नवरतनमलजी गिड़िया-मन्त्री, फोन 0291-2546838, 94141-00759
3. श्री प्रकाशजी चौपड़ा, मोबाइलः 93147-09071
4. श्री नरेन्द्रजी बाफना, मोबाइलः 94141-44789

आवागमन के साधन- नेहरु पार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन जोधपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 1.5 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से 4 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

6. महारानी फार्म, जयपुर (राज.) सकारण

卐 साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवर जी म.सा.

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलता जी म.सा.

卐 महासती श्री पुष्पलता जी म.सा.

卐 व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा.

卐 महासती श्री मंजुलताजी म.सा.

卐 महासती श्री निरंजना जी म.सा.

卐 महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री चैतन्यप्रभा जी म.सा.
卐 महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री मैत्रीप्रभा जी म.सा.
卐 महासती श्री सुदर्शना जी म.सा.
卐 महासती श्री प्रियदर्शना जी म.सा.
卐 नवदीक्षिता महासती श्री दक्षिता जी म.सा.

ठाणा 13

चातुर्मास-स्थल-श्री उत्तम स्वाध्याय भवन, 250 बी, आचार्य हस्ती चौक, गायत्री नगर-बी, सीडलिंग स्कूल के पीछे, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर-302018 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रमोदजी महनोत, अध्यक्ष-98290-52094
2. श्री सुरेशजी कोठारी, मन्त्री-93145-01627
3. श्री केवलचन्दजी जैन सर्राफ, सह-संयोजक, 126 बी, गायत्री नगर-बी, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.), मो. 90798-13532, 94140-42498
4. श्री सुधीरजी जैन, सचिव, मो. 94136-78334
5. श्री गौतमचन्दजी जैन-डी.एस.ओ., मोबाइलः-94142-57482

आवागमन के साधन-चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 8 किमी., दुर्गापुरा स्टेशन से पौन किमी., बस स्टेण्ड (सिन्धी कैम्प) से लगभग 8 किमी., दुर्गापुरा बस स्टेण्ड से 1.5 किलोमीटर एवं हवाई अड्डे से 4 किमी. दूरी पर स्थित है। नज़दीक रेलवे स्टेशन दुर्गापुरा एवं गाँधीनगर है।

7. पुष्कर रोड़, अजमेर(राज.)

卐 विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा.
卐 व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री रक्षिताजी म.सा.
卐 महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री प्रभावतीजी म.सा.
卐 महासती श्री पूनमजी म.सा. ठाणा 8

चातुर्मास-स्थल- प्राज्ञ भवन, अरिहन्त कॉलोनी, महावीर कॉलोनी के पास, पुष्कर रोड, अजमेर-305001

सम्पर्क-सूत्र- चातुर्मास क्रम संख्या 3 के अनुसार

आवागमन के साधन-चातुर्मास स्थल मुख्य रेलवे स्टेशन से तथा बस स्टेण्ड से 2.5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

8. सूरत (गुजरात)

卐 विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.
卐 महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री शारदाजी म.सा.
卐 महासती श्री लीलाकँवरजी म.सा.
卐 महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन, 25, एम.जे. पार्क, आचार्य हस्ती मार्ग, डी.आर.बी. कॉलेज के पास, न्यू सिटी लाइट, सूरत-395017 (गुजरात), मो 99822-32555 (जीत देवड़ा), ईमेलः- sjrhtsurat@gmail.com

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुनीलकुमारजी नाहर, महानिर्देशक, सिदार्थ फैब टैक्सटाईल प्रा. लि., ए-614, इण्डिया टेक्सटाइल मार्केट, रिंग रोड़, सूरत-395002 (गुजरात), फोन : 0261-2331546, मो. 98251-25718
2. श्री महावीरचन्दजी बाफना-अध्यक्ष, मो. 90164-03553
3. श्री सुनीलजी गाँधी, महामन्त्री, मो. 99740-85013
4. श्री सुशीलकुमारजी गोलेछा, मन्त्री, 93271-52168

आवागमन के साधन-चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 9 किलोमीटर एवं बस स्टेण्ड से 9 किलोमीटर, हवाई अड्डे से 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

9. पाटण, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा.
卐 महासती श्री कौशल्यावतीजी म.सा.
卐 महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन प्रथम, पो. पाटन-311302, तहसील-बदनोर, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री ज्ञानचन्दजी नाहर सुपुत्र श्री सोहनलालजी नाहर, अध्यक्ष, मु.पो. पाटन-311302, तहसील- बदनोर, जिला-भीलवाड़ा (राज.), 96641-62411, 94603-54521
2. श्री सम्पतराजजी जैन, मन्त्री, मो. 96806-07517
3. श्री पवनकुमारजी बड़ौला, मो. 94685-05565
4. श्री विनोदकुमारजी पालडेचा (जैन), मोबाइलः 97997-10657

आवागमन के साधन- पाटण चातुर्मास स्थल से बस स्टेण्ड आधा किमी. की दूरी पर स्थित है। नजदीकी रेलवे स्टेशन ब्यावर-35, अजमेर-85, भीलवाड़ा-85 किमी. की दूरी पर है।

10. भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.)

- **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा.**
- **महासती श्री विमलावतीजी म.सा.**
- **महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.**
- **महासती श्री परागप्रभाजी म.सा.**
- **महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.**
- **महासती श्री रिद्धिप्रभाजी म.सा.**
- **महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा.** **ठाणा 7**

चातुर्मास-स्थल- नया स्थानक, सदर बाजार रोड़, पो. भोपालगढ़-342603, जिला-जोधपुर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धर्मचन्दजी कांकरिया, अध्यक्ष, पुराना स्थानक के पास, पो. भोपालगढ़-342603, जिला-जोधपुर (राज.) मोबाइल : 96360-36360
2. श्री अजीतराजजी मेहता, उपाध्यक्ष, मोबाइलः 94145-64545
3. श्री नेमीचन्दजी कर्णावट, मन्त्री, मो. 90572-22597
4. श्री महेन्द्रजी पींचा, मोबाइलः 70736-12248

आवागमन के साधन- क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ जोधपुर जिलान्तर्गत स्थित है। चातुर्मास स्थल बस स्टेण्ड से 1 किमी. की दूरी पर स्थित है। नजदीकी रेलवे स्टेशन गोटन एवं जोधपुर है।

11. घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

- **व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.**
- **महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.**
- **महासती श्री शशिकलाजी म.सा.**
- **महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.**
- **महासती श्री उषाजी म.सा.**
- **महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा.**
- **महासती श्री कान्ताजी म.सा.** **ठाणा 7**

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, वर्धमान अस्पताल के पास, घोडों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुभाषजी गुन्देचा-अध्यक्ष, 676-ए, दसवीं 'सी' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.), मोबाइलः 93147-00972
2. श्री नवरतनमलजी गिड़िया-मन्त्री, फोन 0291-2546838, 94141-00759
3. श्री नरेन्द्रजी बुबकिया, मोबाइलः 85600-76263, 94600-50002
4. श्री दिनेशकुमारजी गाँधी, मोबाइलः 94600-09394, 96643-02139

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 1 एवं बस स्टेण्ड से लगभग 3 किमी. की दूरी पर स्थित है।

12. श्री कालाहस्ती (आन्ध्रप्रदेश)

- **व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.**
- **महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.**
- **महासती श्री देवांगनाजी म.सा.**
- **महासती श्री अंजनाजी म.सा.**
- **महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा.**
- **महासती श्री हेमप्रभाजी म.सा.** **ठाणा 6**

चातुर्मास-स्थल-Shri Vardhman Sthankwasi Jain Shravak Sangh, 3-758, M.G. Street, Srikalahasti- 517644, Dist. Chitoor (A.P.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. Sh. Rekhraj Ji Bagmar- President, 3-866, Nagari Street, Po. Srikalahasti- 517644, Dist. Chitoor (A.P.), Mo. 94404-25503
2. Sh. Rakesh Kumar Ji Lodha, Secretary, Mobile : 80080-88813, 70138-58500, Email: brjainsi@gmail.com
3. Sh. Devraj Ji Chajjer, M. 90329-42137
4. Sh. Sunil Kumar Ji Bagmar, Mobile : 94410-62958

आवागमन के साधन-चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 2 किमी. एवं बस स्टेण्ड से आधा किमी. की दूरी पर स्थित है। नजदीकी हवाई अड्डा तिरुपति 27 किमी. की दूरी पर है।

13. शक्ति नगर, जोधपुर (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.
卐 महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा.
卐 महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री सरोजश्रीजी म.सा.
卐 महासती श्री अरिहाश्रीजी म.सा.
卐 महासती श्री महिमाश्रीजी म.सा.
卐 महासती श्री कल्पयशाजी म.सा.
卐 महासती श्री स्तुतिश्रीजी म.सा. ठाणा 10

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर छट्ठी गली, जोधपुर-342006 (राज.), 0291-2550148 (अतिथिगृह)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुभाषजी गुन्देचा-अध्यक्ष, 676-ए, दसवीं 'सी' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.), मोबाइलः 93147-00972
2. श्री नवरतनमलजी गिड़िया-मन्त्री, फोन 0291-2546838, 94141-00759
3. श्री अशोकजी मेहता, मोबाइलः 94144-75904
4. श्री अमरचन्दजी चौधरी, मोबाइलः 94141-30024

आवागमन के साधन- शक्ति नगर छट्ठी गली स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन जोधपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 5 किमी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से 3 किमी. की दूरी पर स्थित है।

14. अमरावती (महा.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.
卐 महासती श्री भावनाजी म.सा.
卐 महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा.
卐 महासती श्री गरिमाश्री जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- स्थानक भवन, बडनेरा रोड़, समर्थ हाई स्कूल के सामने, अमरावती-444601 (महा.), मोबाइल : 90286-33535

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री महेन्द्रजी गाँधी, अध्यक्ष, मो. 75075-45998
2. श्री सुरेशचन्दजी मुणोत, मन्त्री- राजापेठ, अमरावती-444601 (महा.), मोबाइलः 94207-13266, ईमेलः- sureshanandmunot27@gmail.com
3. श्री अमृतजी मुथा-94221-57974
4. श्री पन्नालालजी ओस्तवाल-90286-33535

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल बस स्टेण्ड से 2 किमी. की दूरी पर स्थित है। नजदीकी रेलवे स्टेशन बडनेरा 8 किमी. की दूरी पर स्थित है।

15. सेलम (तमिलनाडु)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.
卐 महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री दीपिकाश्री जी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल-Sri Vardhman Sthankvasi Jain Sangh, No. 177, Mahavir Bhawan, Shankar Nagar, Salem-637007 (T.N.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. Sh. Goutamchand Ji Chopara, President, 40/B-3, Avr Jaiyam Apartment,

Chemokrishnapuram, Shankar Nagar, Salem-636007 (T.N.), M. 94432-65304.
2. Sh. Mahendra Kumar Ji Babel, Mobile: 99798-44357, 94432-44357, Email: babelmahendra@yahoo.com
3. Sh. Mahender Kumar Ji Ranka, Mobile: 88071-55443

आवागमन के साधन- सेलम देश के लगभग सभी राज्यों से रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 4 किमी. एवं बस स्टेण्ड से 1.5 किमी. पर स्थित है।

16. देई, जिला-बूंदी (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री कोमलश्री जी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री उत्तम सामायिक स्वाध्याय भवन, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नसियाँ कॉलोनी, ग्राम-देई-323802, जिला-बूंदी (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री नन्दकिशोरजी जैन-अध्यक्ष, मो. 63671-41767
2. श्री ताराचन्दजी जैन-मन्त्री, द्वारा- आदित्य टेक्सटाइल, बस स्टेण्ड, ग्राम-देई-323802, जिला-बूंदी (राज.), मोबाइलः 97846-74407
3. श्री नरेन्द्रकुमारजी जिन्दल, मो. 94149-63429
4. श्री रामपालजी गोयल 'अध्यापक', मोबाइलः 97996-96642

आवागमन के साधन- बूंदी जिलान्तर्गत देई ग्राम स्थित है। चातुर्मास स्थल बस स्टेण्ड से आधा किमी. की दूरी पर स्थित है। नजदीक रेलवे स्टेशन इन्द्रगढ़ है।

17. विल्लुपुरम् (तमिलनाडु)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री सुभद्राजी म.सा.
卐 महासती श्री तितिक्षाश्रीजी म.सा.
卐 महासती श्री वर्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल-श्री महावीर भवन, अमरावती विनायधर कोईल स्ट्रीट, विल्लुपुरम्-605602 (तमिलनाडु)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री रिखबचन्दजी बम्ब-अध्यक्ष, 272, कामराज स्ट्रीट, पो. विल्लुपुरम्-605602(तमिलनाडु), मो. 98946-34340
2. श्री ज्ञानचन्दजी बोहरा-उपाध्यक्ष, मोबाइल : 94433-21358
3. श्री महावीरचन्दजी ओस्तवाल-मन्त्री , मोबाइल : 97158-09527
4. श्री वी. रिखबचन्दजी कांकरिया-सहमन्त्री, मोबाइल : 99527-40805

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल विल्लुपुरम् रेलवे स्टेशन से 2.5 किमी एवं बस स्टेण्ड से 2 किमी की दूरी पर स्थित है।

18. पाली-मारवाड़ (राज.)

卐 सेवाभावी व्याख्यात्री महासती श्री विमलेश प्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री निमिषाजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन, जूनी धान मण्डी, जूनी कचहरी पुलिस चौकी के सामने, सुराणा मार्केट, पाली-मारवाड़-306401 (राज.), फोनः 02932-250021

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री कांतिलालजी लुंकड़, अध्यक्ष, मो. 94141-22757
2. श्री रजनीश जी कर्णावट, मंत्री, 807-8, मनोरथ बिल्डिंग, सुमेरपुर रोड़, पाली-306401 (राज.), फोनः 02932-220745, 94141-20745, Email: rajneeshkarnawat@gmail.com
3. श्री छगनलालजी लोढ़ा-मोबाइलः 94141-21519
4. श्री सुशीलकुमारजी हिगड़, मो. 94141-21371

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 2.5 किमी. एवं बस स्टेण्ड से 2 किमी. की दूरी पर स्थित है।

19. मैसूर (कर्नाटक)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.
卐 महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा.
卐 महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा.
卐 महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा.
卐 महासती श्री आराधनाश्रीजी म.सा. ठाणा 6

चातुर्मास-स्थल-Sri Sthankvasi Jain Sangh, 2889, 3rd Cross, Mahaveer Nagar, Halladkari, Mysore-570001 (Karnataka), Phone: 0821-2525233, (Dharmichandji-93797-37374)

सम्पर्क-सूत्र-

1. Sh. K. Tejraj Jain, President, Phone : 0821-2525834, 4269514, 99005-97999
2. Sh. Subhash Chand Ji Dhoka (Jain), Secretary, Sunil Jewelers, 905/171, S. J. Hostel main Road, Vidyaranyapuram, Mysore-570008 (Karnataka), 0821-2525697, 4256492, Mo. 94485-39647, Email: subhashjain94485@gmail.com
3. Sh. Subhash Chand Ji Darda (Jain), Phone : 0821-2525522, 4263227, 94480-78339
4. Sh. Budhmal Ji Bagmar (Jain), Phone:0821-2446407, 98451-26407

आवागमन के साधन-मैसूर कर्नाटक का प्रसिद्ध शहर है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 1.5 किमी एवं बस स्टेण्ड से आधा किमी. पर स्थित है। बैगलोर से 140 किमी. पर मैसूर है।

20. गोटन, जिला-नागौर (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री ज्योतिप्रभा जी म.सा.
卐 महासती श्री विदेहा जी म.सा.
卐 महासती श्री विरक्ताश्री जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- नाहर आराधना भवन, जैन मंदिर, जैन कॉलोनी, गोटन-342902, जिला-नागौर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र- चातुर्मास क्रम संख्या 4 के अनुसार

आवागमन के साधन- रेलवे स्टेशन से चातुर्मास स्थल तथा बस स्टेण्ड 500 मीटर की दूरी पर स्थित है।

21. पीपाड़ सिटी, जिला-जोधपुर (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभा जी म.सा.
卐 महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री खुशबूश्रीजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल-श्री जयमल जैन महिला स्वाध्याय भवन, काला भाटा के पास, पीपाड़ सिटी-342603, जिला-जोधपुर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र- चातुर्मास क्रम संख्या 1 के अनुसार

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल बस स्टेण्ड से 1.5 किलोमीटर है।

22. लाल भवन, जयपुर (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा.
卐 महासती श्री भविताश्रीजी म.सा.
卐 महासती श्री मधुश्रीजी म.सा.
卐 महासती श्री प्रणतिश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल-श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003 (राज.), फोनः 0141-2312414, 4037271

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, अध्यक्ष, मोबाइलः 99826-22707
2. श्री विमलचन्दजी डागा, मन्त्री, मो. 98290-11558
3. श्री सुरेशचन्द कोठारी, संयुक्त मन्त्री, 18, अचरोल हाउस, सिविल लाइन्स, जयपुर-302006 (राज.) मोबाइलः 93145-01627

महासतीवृन्द के ठहरने का स्थान- महावीर भवन, बारह गणगौर का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.), फोनः 0141-2565953

आवागमन के साधन-चातुर्मास स्थल से रेलवे स्टेशन की दूरी 5 किमी., बस स्टेण्ड से दूरी 4 किमी. एवं हवाई अड्डे से दूरी 13 किमी. है।

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 75
ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

पीपाड़ में पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में अनेक सन्तों एवं महासती मण्डल के संगम से ज्ञानार्जन और तत्त्व चर्चा का रहा सुन्दर वातावरण

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग एवं व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा-10 पीपाड़ के श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत भवन में विराजित हैं।

जब से परमाराध्य पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि चारित्रात्माओं का पीपाड़ की पावनधरा पर पदार्पण हुआ है तब से ही पीपाड़ श्रीसंघ में उत्साह, उमङ्ग, भक्ति-भावना, सेवा उत्तरोत्तर वृद्धिंगत होने से धर्म गङ्गा प्रवाहित हो रही है।

व्याख्यात्री महासती श्री दर्शनलताजी म.सा. आदि ठाणा-3 बासनी, डांगियावास, रिया सेठों की आदि को फरसते हुए 11 फरवरी को पीपाड़ पर्दापण कर गुरुचरण सन्निधि में 27 फरवरी तक विराजे। पुनः 15 मार्च को सायंकाल गोपालशाला एवं 16 मार्च पीपाड़ पदार्पण हुआ तथा 24 मार्च को जोधपुर की ओर विहार किया। व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-3, व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-7 अर्थात् तीनों महासती मण्डलों का समागम एवं पूज्य आचार्य भगवन्त आदि सन्त-मुनिराजों के दर्शन-वन्दन, सान्निध्य का लाभ मिला।

व्याख्यात्री महासती सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-7 का 23 फरवरी को पीपाड़ पदार्पण हुआ। गणेश चौक नागौर में 8 मई को पर्दापण कर 8 जून तक नागौर में धर्मप्रभावना की 9 जून को आस-पास के गाँवों को फरसते हुए गोटन होते हुए पीपाड़ पर्दापण। व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-3 का 5 मार्च को पीपाड़ पर्दापण हुआ तथा 22 मार्च को आस-पास के क्षेत्रों में विचरण एवं धर्म प्रभावना करते हुए पाटण जिला भीलवाड़ा चातुर्मास स्थल की ओर बढ़ रहे हैं।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. गुरुचरण सन्निधि में विराजित हैं। प्रश्नोत्तर शैली से जिज्ञासा समाधान विशद विवेचन के साथ सरल सुबोध तरीके से समझाते हैं। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 पीपाड़ से विहार कर सिन्धीपुरा, कुड़ी जैन स्थानक, अरटिया, भोपालगढ़ आदि क्षेत्र फरसते हुए पीपाड़ पधारे तथा 1 मार्च को विहार कर नागौर की ओर विचरण विहार किया एवं मध्यवर्ती क्षेत्रों में धर्मप्रभावना करके पुनः पीपाड़ पर्दापण किया।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 का 27 मार्च को पीपाड़ पदार्पण हुआ। तब से अब तक पीपाड़ विराजित है और विशेषावश्यक भाष्य की टीका, अपनी परम्परा में भाग-1, कम्मपयडी, 47 शक्तियाँ, आत्मसिद्धि, पंचसंग्रह भाग-2, भाग-7, पन्नवणा सूत्र एवं कर्मग्रन्थ भाग-5 के थोकड़े आदि पर तत्त्वचिन्तन परक शिक्षण कराया।

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणजी म.सा. आदि ठाणा-2 का 14 अप्रेल को पीपाड़ पदार्पण हुआ। 24 मई को श्रद्धेय श्री नन्दीषेणजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री

आशीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 गुरु आज्ञा अनुसरण में गन्तव्य अजमेर के लिए पीपाड़ से विहार कर ग्रामानुग्राम विचरणरत हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 का पीपाड़ में 26 मई को व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4 से मिलन/समागम हुआ। 28 मई को अजमेर की ओर विहार किया। व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4 का 26 मई को पीपाड़ पर्दापण। 20 जून को जोधपुर को फरसते हुए पाली चातुर्मास स्थल की ओर विचरणरत है। व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 का 6 जून को पीपाड़ पर्दापण हुआ तथा 25 जून को पीपाड़ से भोपालगढ़ फरसने हेतु विहार हुआ।

व्याख्यात्री महासती श्री शिक्षाश्री म.सा. आदि ठाणा का 31 मई को पीपाड़ पर्दापण। व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4 से मिलन/समागम हुआ तथा 2 जून को गोटन की विहार हुआ जहाँ व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा अर्थात् तीनों संघाड़ों का मिलन/समागम हुआ। पुन: 11 जून को पीपाड़ पर्दापण हुआ और 23 जून को बाकलिया होते हुए जोधपुर की ओर विहार किया।

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा-6 का 14 जून को पीपाड़ पर्दापण और 24 जून को विहार कर जोधपुर की ओर विचरणरत है।

जयगच्छीय श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 भी लगभग डेढ़-दो माह से पीपाड़ विराजित थे। परमाराध्य पूज्य आचार्यश्री के दर्शनार्थ पधारे। सन्त-समागम सौहार्दपूर्ण रहा। श्रमण संघीया श्रद्धेया श्री कौशल्याजी म.सा. की सुशिष्या श्रद्धेया श्री ऊर्जाजी म.सा. कापरड़ा से दर्शनार्थ पीपाड़ पधारे एवं पूज्य आचार्यश्री सहित सभी सन्त-मुनियों के दर्शन-वन्दन कर श्रद्धासिक्त भावाभिव्यक्ति की।

कोरोना गाइडलाइन के अनुसार सभी सामूहिक धार्मिक गतिविधियाँ प्रवचन आदि नहीं हो रहे हैं। सीमित संख्या में ही प्रात:कालीन प्रार्थना के उपरान्त दर्शन-वन्दन, मांगलिक श्रवण के अनन्तर सन्त-सतीवृन्द की साधना-आराधना की नियमित गतिविधियाँ ही होती है। इसी क्रम में स्थानाङ्गसूत्र की वाचनी चल रही है।

सन्त-सतीवृन्द एवं ज्ञानार्थियों के अद्भुत समागम से यहाँ ज्ञानार्जन एवं तत्त्वचर्चा का मनोरम वातावरण रहा। कोरोना के कारण विनितियाँ भी पत्र द्वारा प्रेषित करने का निर्देश रहा। संघ के पदाधिकारियों सहित अनेक क्षेत्रों से कुछ-कुछ आवागमन बना रहा एवं गुरुचरण सन्निधि का लाभ लिया गया।

पीपाड़ श्रीसंघ के श्रावकसंघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, बालिका मण्डल सभी सर्वतोभावेन सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य, श्रद्धाभक्ति-भावना, धर्मध्यान, तप-त्याग में अनवरत सहभागिता एवं धर्मोल्लासपूर्वक गतिशील हैं।

-गिरराज जैन

जयपुर-परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3, सवाईमाधोपुर का चातुर्मास सम्पन्न कर अनेक गाँवों को फरसते हुए 15 मई को प्रतापनगर स्थानक सुखे-समाधे पधारे। यहाँ से 17 मई को महारानी फार्म स्थानक पर विराजित साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. के दर्शनार्थ पधारे। दोनों ही गुरु हस्ती द्वारा दीक्षित हैं, अत: काफी देर तक पुरानी यादें संस्मरण का आदान-प्रदान हुआ। तत्पश्चात् श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. महारानी फार्म स्थित श्री गौत्तमचन्दजी जैन (पूर्व डी.एस.ओ.) के निवास पर पधारे, यहीं पर उनका प्रवास रहा। प्रात: एवं दोपहर के समय में सतीमण्डल ने पठन-पाठन का लाभ लिया।

20 मई को प्रात: स्मरणीय जन-जन की आस्था के केन्द्र 1008 पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी

म.सा. की 30वीं पुण्यतिथि महारानी फार्म स्थानक के पास स्थित लोढ़ा कॉम्पलेक्स में मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी आदि ठाणा एवं महासतियों के सान्निध्य में मनाई गई। कोरोना के चलते केवल महासती दिव्यप्रभाजी और श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के ही प्रवचन हुए। महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा. ने गुरुदेव के जीवन के विभिन्न आयामों पर उदाहरण सहित विस्तृत प्रकाश डाला। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने अपनी दीक्षा से लगाकर अब तक गुरु का सान्निध्य रहा तब तक के अपने ऊपर रहे उपकारों, समय-समय पर दी गई शिक्षा का वर्णन सुनाया, गुरु ने सभी सन्त-सतियों को हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा एवं अवसर प्रदान किया। पूज्य गुरुदेव के 61वर्ष के आचार्यकाल में घटित कई संस्मरणों का विवेचन किया। वे सदैव मन-वचन-काया से शुद्ध योगी रहे। आपने कहा कि-''गुरु बनाये बिना मोक्ष नहीं मिल सकता।''

30 मई को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 31वाँ चादर-दिवस, महावीर नगर स्थानक में मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। अपने प्रवचन में श्री गौतममुनिजी म.सा. ने आचार्य भगवन्त के व्यवहार में सरलता, संयम पालन, अनुशासन में कठोरता एवं सन्त-सतियों के ज्ञान में वृद्धि के लिए प्रयत्नशीलता आदि विभिन्न गुणों पर उदाहरण सहित प्रकाश डाला। कोरोनाकाल के चलते कार्यक्रम संक्षिप्त ही रखा गया। वहाँ से श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा गुलाबी नगर के उपनगरों में धर्मप्रभावना हेतु विचरण करते हुए मालवीय नगर, सिद्धान्तशाला-बजाजनगर, प्राज्ञ भवन-बापूनगर, सेठीकॉलोनी, एम.डी. रोड़, तिलक नगर, जवाहरनगर, आदर्शनगर, लालभवन आदि स्थानों पर पधारे। अभी यहाँ प्रवचन एवं धर्माराधना चल रही है।

साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा, महारानी फार्म स्थित, उत्तम स्वाध्याय भवन में सुखे-समाधे विराज रहे हैं। स्वास्थ्य कारणों से आपका आगामी चातुर्मास इसी स्थल पर खोला गया है।

-सुरेशचन्द कोठारी, मन्त्री

जोधपुर-परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 4 जोधपुर के उपनगरों में धर्मप्रभावना करते हुए विचरण कर रहे हैं। मुनि मण्डल नेहरूपार्क स्थानक में शेखेकाल विराज कर साधना-आराधना करने के लक्ष्य के साथ घोड़ों का चौक सामायिक-स्वाध्याय भवन पधारे और कुछ दिन शेखेकाल वहीं विराज कर बहुत सुन्दर धर्म प्रभावना की। तत्पश्चात् सामायिक-स्वाध्याय भवन पावटा पधारे। वहाँ कुछ दिन विराज कर जालम विलास रांका स्वाध्याय भवन में पधारे, श्रावक-श्राविकाओं को साधना-आराधना का सन्देश देते हुए श्रद्धेय मुनि मण्डल सामायिक-स्वाध्याय भवन शक्तिनगर गली नं. 6 में पधारे। वहाँ भी शेखेकाल विराज कर आप निरन्तर धर्मप्रभावना कर रहे हैं। दोपहर में वाचनी एवं प्रात:काल कर्म सिद्धान्त के विषय पर धर्म-चर्चा के साथ साधना-आराधना करके मानव जीवन को सफल बनाने की पावन प्रेरणा निरन्तर कर रहे हैं। शक्तिनगर में नवपद ओली आराधना के दौरान अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने आराधना की।

महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा नेहरू पार्क सरदारपुरा क्षेत्र को फरसते हुए सामायिक-स्वाध्याय भवन पावटा पधारकर सुख-साता पूर्वक विराजमान हैं। नियमित साधना-आराधना के साथ ज्ञान-ध्यान सीखने का लाभ श्रावक-श्राविकाएँ समय-समय पर ले रहे हैं।

महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 भी जोधपुर की पावन धरा पर उपनगरों को फरसते हुए शक्तिनगर पधारे। वहाँ गली नं. 9 में सुख-साता पूर्वक विराजते हुए श्रद्धेय मुनिमण्डल की सेवा में निरन्तर धर्मचर्चा की गई, महासती मण्डल ज्ञान-ध्यान और साधना-आराधना के पावन लक्ष्य के साथ शक्तिनगर में कुछ दिन विराजे

और फिर पूज्य आचार्य भगवन्त की सेवा में पधारने हेतु पीपाड़ की ओर विहार किया।

महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 जोधपुर पधारे हैं। कुछ दिन सन्त-भगवन्त की सेवा में विराजकर पाली की ओर विहार सम्भावित है। जोधपुर के श्रावक-श्राविका एवं युवा समय-समय पर विहार सेवा एवं आतिथ्य सत्कार का लाभ निरन्तर ले रहे हैं। *-नवरतन गिडिया, सचिव*

आवश्यकसूत्र की लिखित परीक्षा 15 अगस्त, 2021 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा **आवश्यक सूत्र की लिखित परीक्षा को 15 अगस्त-2021, रविवार को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे आयोजित कराने का निर्णय लिया गया है।**

सभी से निवेदन है कि अपने क्षेत्र के सभी परीक्षार्थियों को परीक्षा की सूचना शीघ्र कराने की कृपा करावें। जिन भाई-बहिनों ने अभी तक परीक्षा के लिए फार्म नहीं भरे हैं, उनसे भी सम्पर्क कर परीक्षा में भाग लेने हेतु पुरजोर प्रेरणा करने की कृपा करावें।

आवश्यक सूत्र की परीक्षा से सम्बन्धित नियमावली इस प्रकार है-

1. परीक्षा में आवेदन करने की अन्तिम दिनांक 20 जुलाई, 2021 है।
2. यह फार्म ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों तरह से उपलब्ध हैं। ऑनलाइन फार्म रत्नसंघ एप्प एवं लिंक (मोबाईल से लिंक मँगवाने पर) के माध्यम से भरे जा सकेंगे। जिन्होंने पूर्व में फार्म भर दिया है, उन्हें वापस भरकर भिजवाने की आवश्यकता नहीं है।
3. परीक्षा का समय 3.00 घण्टे रहेगा, जिसमें दो तरह के प्रश्न पत्र होंगे। प्रथम Objective Type के प्रश्न-पत्र का समय आधा घण्टा रहेगा, जिसमें श्रावक सामायिक-प्रतिक्रमण सूत्र (सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित) पुस्तक में से 30 अंकों के प्रश्न पूछे जायेंगे। इन सभी प्रश्नों के उत्तर बिना पुस्तक देखे कण्ठस्थ ज्ञान के आधार पर देना होगा। आधा घण्टे बाद प्रथम प्रश्न-पत्र वापस ले लिया जायेगा। श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र पुस्तक का मूल्य 10/- रखा गया है।
4. द्वितीय Subjective Type के प्रश्न पत्र का समय 2 घण्टे 30 मिनिट रहेगा, जिसमें आवश्यक सूत्र आगम की पुस्तक साथ में लेकर प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़कर लिखे जा सकेंगे। द्वितीय प्रश्न-पत्र 70 अंकों का रहेगा।
5. परीक्षा हेतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित आगम 'आवश्यकसूत्र' ही मान्य होगी। इस पुस्तक में से कहीं से भी प्रश्न दिए जा सकते हैं। परीक्षार्थियों के लिए आवश्यकसूत्र पुस्तक का अर्द्धमूल्य 50/-रखा गया है। जो परीक्षार्थी इस परीक्षा में भाग लेने हेतु फार्म भरकर देंगे, उन्हें ही पुस्तक दी जायेगी। डाक द्वारा पुस्तक मँगवाने पर उसका व्यय अलग से देय होगा।
6. जहाँ कम से कम 10 परीक्षार्थी होंगे वहाँ परीक्षा का केन्द्र रखा जायेगा।
7. आवश्यक सूत्र की परीक्षा में बैठने वाले सभी परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा।

आवश्यकसूत्र की पुस्तकें प्राप्त करने हेतु देश के विभिन्न स्थानों में निम्नाङ्कित महानुभावों से सम्पर्क किया जा सकता है-(1) शान्तिलालजी गुन्देचा, हैदराबाद-9247199931 (2) प्रसन्नजी बागमार, बैंगलोर-9880665551 (3) दिलखुशजी जैन, मुम्बई-9930732407 (4) आशीषजी जैन, दिल्ली-9811110381 (5) किरणजी जैन, पंजाब-9463118600 (6) ज्ञानचन्दजी भण्डारी, कर्नाटक-9019555670 (7) महेन्द्रजी कटारिया, नागपुर-9850345615 (8) रेशमाजी लुंकड़, बालोतरा-9649318421 (9) सुरेखाजी भटेवरा, पुणे-9405875108 (10) मधुबालाजी ओस्तवाल, नाशिक-9422510571 (11) कन्हैयालाल जी जैन, भीलवाड़ा-

8764409328 (12) सुमनजी जैन, हरियाणा-8950182548 (13) सुनीलजी नाहर, सूरत-9825125718 (14) आशाजी मेहता, अहमदाबाद-7228865547 (15) विनोदजी जैन, चेन्नई-9444734394 (16) सुरेशजी हिंगड़, चेन्नई-9444852330 (17) मनोजजी जैन, जलगाँव-9156898108 (18) महावीर प्रसादजी जैन, पल्लीवाल क्षेत्र-8949816129 (19) आनन्दजी जैन, पोरवाल क्षेत्र-8104104285 (20) रिंकूजी जैन, मध्यप्रदेश-9685073123 (21) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर-0141-2575997 (22) प्रधान कार्यालय, जोधपुर-7610953735 *-सुभाषचन्द नाहर-सचिव, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.), फोन 0291-2630490*

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर द्वारा ऑनलाइन धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन

प्रात: स्मरणीय, आगम मर्मज्ञ पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की प्रेरणा से श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर द्वारा विगत 27 वर्षों से निरन्तर नैतिक एवं धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण करने हेतु शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है। परन्तु इस बार कोराना महामारी होने के कारण 01 जून से 15 जून, 2021 तक 15 दिवसीय शिविर का ऑनलाइन आयोजन किया गया। शिविर में लगभग 850 बालक-बालिकाओं का रजिस्ट्रेशन हुआ, जिनमें से लगभग 650 बालक-बालिकाओं ने नियमित रूप से शिविर में भाग लिया। शिविर में बच्चों के धार्मिक ज्ञान के आधार पर विभिन्न कक्षाएँ बनायी गई और उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार कक्षाओं में प्रवेश दिया गया तथा सामायिकसूत्र, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल आदि का अध्ययन कराया गया।

लगभग 31 अध्यापकों ने पूर्ण निष्ठा एवं आत्मीयता से अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान की। शिविर के दौरान भगवान महावीर स्वामी की दीक्षा से लेकर निर्वाण तक के किसी भी एक प्रसङ्ग पर पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 200 शिविरार्थियों द्वारा पोस्टर बनाये गये। शिविर के सञ्चालन में श्री तरुणजी छाजेड़, श्री अमितजी मुणोत, सुनीलजी कोठारी, गजेन्द्रजी पोरवाल, लगभग 32 अध्यापकगण, परिषद् के सदस्यों एवं परामर्शदाताओं का पूर्ण सहयोग रहा। *-प्रकाश लोढ़ा, शाखा सचिव*

संक्षिप्त समाचार

जोधपुर-कोरोना काल में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुंदेचा के नेतृत्व में संघ द्वारा कोविड-19 से पीड़ित जोधपुर के समस्त अस्पतालों में भर्ती मरीजों एवं होम क्वारेन्टाइन मरीजों और उनके परिजनों के लिए लगभग 45 दिन तक नि:शुल्क भोजन की लगभग 5,600 थाली की व्यवस्था की गई। लगभग 9,000 टिफिन और 4,800 खिचड़ी के पैकेट की व्यवस्था श्री महावीर युवा संघ, जोधपुर तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के संयुक्त तत्त्ववाधान में अतिथि भवन-शक्तिनगर से की गई, जिसके दैरान अस्पताल में भर्ती मरीजों तक नि:शुल्क एवं शुद्ध सात्त्विक भोजन पहुँचाने की सुन्दर व्यवस्था शक्तिनगर अतिथि भवन से संयोजक श्री अशोकजी मेहता एवं युवा अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा के साथ सभी कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से की गई। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा कोविड-19 से पीड़ित होम क्वारेन्टाइन मरीजों के उपयोगार्थ ऑक्सीजन कॉन्सेण्ट्रेटर मशीनें सीमित अवधि तक उपयोग हेतु नि:शुल्क उपलब्ध करवायी गयी। *-नवरतन गिड़िया, सचिव*

चेन्नई-अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने कहा कि तमिल भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य और संस्कृति के विकास में जैनों का ऐतिहासिक और अविस्मरणीय योगदान है। जैन मुनियों, साध्वियों और विद्वानों ने गहन अध्ययन, परिश्रम, प्रज्ञा और प्रतिभा से उच्च कोटि के कालजयी तमिल साहित्य की रचना की। जैन मनीषियों द्वारा रचित साहित्य आज भी तमिल भाषा के मुख्य मानक ग्रन्थों के रूप में

सर्वपठित और समादृत हैं। जैन साहित्य अकादमी, मुम्बई द्वारा 25 जून, शुक्रवार को आयोजित ई-व्याख्यान में मुख्यवक्ता डॉ. धींग ने कहा कि सर्वप्राचीन तमिल लक्षण ग्रन्थ 'तोलकाप्पियम्', विख्यात नीतिग्रन्थ 'तिरुक्कुरल', महाकाव्य 'शिलप्पदिकारम्' और 'जीवक चिन्तामणि', चार लघु महाकाव्य, व्याकरण 'नन्नूल' आदि अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ जैन मनीषियों ने रचे, जो आज भी तमिल समाज और भारतीय संस्कृति को प्रकाशमान बनाए हुए हैं। डॉ. धींग ने कहा कि ईस्वी पूर्व तीसरी सदी से पहले भी तमिल प्रदेश में जैनधर्म विद्यमान था। तमिल प्रदेश में जैनों ने अपने उदात्त विचार, प्रामाणिक-व्यवहार, व्यापक-लोकोपकार और सेवाओं से राजा और प्रजा, सबके मन में स्थान बनाया। जैनधर्म को राज्याश्रय भी प्राप्त हुआ। तमिल का शिलालेखीय साहित्य इसका प्रमाण है। जैनों के उत्कर्ष काल में काँची नगरी का जीवन्त वर्णन चीनी यात्री ह्वेनसाँग के यात्रा-विवरण से भी प्राप्त होता है।

-डॉ. सेज्जल शाह (संयोजक)

बैंगलोर-जैन फाउण्डेशन द्वारा आयोजित ब्राह्मी लिपि प्रशिक्षण के त्रिदिवसीय कार्यक्रम में ब्राह्मी लिपि विशेषज्ञा विदुषी डॉ. मुन्नीजी जैन,वाराणसी के द्वारा प्राचीन ब्राह्मी लिपि का 18 से 20 जून, 2021 तक ऑनलाइन कार्यशाला में प्रशिक्षण दिया गया। *-डॉ. इन्दु जैन*

बधाई

जोधपुर (यू.एस.ए.)-श्री रोशनजी सुपुत्र श्री विकासजी सुपौत्र डॉ. रक्षकमलजी लोढ़ा यू.एस.ए. निवासी ने बर्केली

यूनिवर्सिटी कैलिफोर्निया से कम्प्यूटर साइन्स एवं मोलेक्यूलर सेल बायोलॉजी (एम.बी.बी.एस.) की डबल उपाधि प्राप्त की है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री रोशनजी को इस अध्ययन हेतु बर्केली यूनिवर्सिटी की तरफ से छात्रवृत्ति प्रदान की गई। आपका चयन विश्व के सर्वश्रेष्ठ मेडिकल कॉलेजों में शुमार क्लीवलैण्ड मेडिकल कॉलेज में एम.एस. एवं एम.डी. के अध्ययन और शोध कार्यों हेतु हुआ है, जिसमें कॉलेज की तरफ से आपको अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी।

जोधपुर (यू.एस.ए.)-श्री प्रणवजी सुपुत्र श्री विकासजी सुपौत्र डॉ. रक्षकमलजी लोढ़ा यू.एस.ए. निवासी ने SAP

कम्पनी कैलिफोर्निया में कार्यरत रहते हुए एम.एस. (एम.-टेक) की उपाधि कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से प्राप्त की है। आपकी प्रतिभा से प्रभावित होकर SAP कम्पनी ने आपको इस अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति प्रदान की है। आपके दादाजी डॉ. रक्षकमलजी लोढ़ा 50 वर्षों से मानव स्वास्थ्य और नि:स्वार्थ चिकित्सा सेवा के लिए समर्पित हैं और वर्तमान में जोधपुर में रहते हुए सन्त-सती वर्ग को अहिंसात्मक चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करते हैं।

श्रद्धाञ्जलि

तिरुवन्नामलै (तमिलनाडु)-भूधरवंशीय, जयमल ब्रज-मधुकर समुदाय के वयोवृद्ध सरलमना महासती श्री कंचनकँवरजी म.सा. का 25 जून, 2021 को लगभग 80 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आपका दीक्षा पर्याय 65 वर्ष रहा। आपने ज्योतिषाचार्य उपाध्याय श्री कस्तूरचन्दजी म.सा. के मुखारविन्द से दीक्षा ब्यावर (राजस्थान) में ग्रहण कर श्रमण संघ के प्रथम युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा. एवं राजगुरुमाता महान् अध्यात्मयोगिनी कश्मीर प्रचारिका परम विदुषी महासती श्री उमरावकँवरजी म.सा. 'अर्चना' का शिष्यत्व स्वीकार किया। आप पिछले दो-तीन वर्षों से दक्षिण भारत में अपनी सहवर्ती महासतीवृन्द के साथ विचरणशील थी। *-गौतमचन्द ओस्तवाल*

हैदराबाद-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शान्ताबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री प्यारेलालजी बोहरा (पीपाड़) सुपुत्री श्री

धर्मीचन्दजी मेहता का 88 वर्ष की वय में 22 मई, 2021 को संथारा सहित समाधिमरण हो गया। आचार्यप्रवर श्री

हस्तीमलजी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. पर अटूट श्रद्धा रखने वाली सुश्राविका ने अपने जीवन काल में नियमित सामायिक, धोवन पानी, चौविहार, पौरसी, स्वाध्याय आदि व्रत, पच्चक्खान की आराधना की। अपने जीवनकाल में 11, 8, 5, 3, 2 उपवास की अनेक तपस्याएँ, ओली तप, दिन में 10 से 11 सामायिक, प्रतिक्रमण और लगभग 25 वर्ष से धोवन पानी, रात्रि चौविहार, प्रतिदिन पौरसी अनेक जप-तप किए और हाल ही में 20 स्थानक ओली चल रही थी। आप तीन सुपुत्र श्री सुरेशजी, डॉ. निर्मलजी, अरुणजी एवं दो सुपुत्रियाँ श्रीमती मधुबाईजी, श्रीमती किरणबाईजी सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री गजेन्द्रजी सुपुत्र श्री कनकराजजी कुम्भट का 06 जून, 2021 को स्वर्गवास हो गया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा तथा महासती मण्डल के जोधपुर चातुर्मासों में आप सहित परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के महामन्दिर चातुर्मास में तन-मन-धन से एवं समर्पित भाव से अपूर्व धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। आप स्पष्ट वक्ता एवं जुझारू व्यक्ति थे। प्रबन्धन की कला में आप माहिर थे। संघ के प्रति एकनिष्ठ, सेवाभावना के कारण आपके पूज्य पिताश्री कनकराजजी कुम्भट श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्षीय पद की महनीय सेवाओं का निर्वहन के पश्चात् परामर्शदाता पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। आपके भ्राता आदरणीय श्री महेन्द्रजी कुम्भट संघ के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष पद का दायित्व तथा गजेन्द्रनिधि ट्रस्टी के रूप में महत्त्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जयपुर-धर्मनिष्ठ अनन्य गुरुभक्त सुश्रावक श्री राजेन्द्र प्रसादजी सुपुत्र स्व. श्री हरकचन्दजी जैन बोहरा (जरखोदा

वाले) का 6 जून, 2021 को देहावसान हो गया। वाणी की मधुरता एवं व्यवहार की सरलता के कारण आप सभी के प्रिय रहे। राजस्थान सरकार के सिंचाई विभाग से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् आपने अर्जित धन का उपयोग प्राय: संघसेवा एवं स्वधर्मी वात्सल्य में किया। आप नियमित रूप से पाँच सामायिक, नवकारसी तप किया करते थे। अपने जीवन में एकाशन, उपवास, आयम्बिल, बेला, तेला, चौला, पचोला एवं अठाई तप की तपस्या की और ध्यान-मौन शिविरों में भाग लिया। विगत 15 वर्षों से सायंकालीन 1 घण्टा नवकार महामन्त्र जाप, माला, शान्तिजाप एवं प्रार्थना का क्रम परिवार में चल रहा है। भोजन समभाव के साथ मौन से करते थे। मोह और क्रोध विजय का गुण आपकी विशेषता रही। प्रतिकूल परिस्थिति में मौन कर लेते थे। त्यागी, चारित्र आत्माओं के आपके आवास पर पधारने से परिवार ने अनेक बार शय्यातर लाभ भी लिया। मार्च 2020 में तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा का मधुर मिलन आपके निवास पर हुआ। आपके आजीवन रात्रि भोजन एवं जमींकन्द त्याग, 14 नियम तथा तीन मनोरथ चिन्तन का नियम था साथ ही शीलव्रत का भी नियम लिया। 2014 से 2017 तक आपश्री पद्मावती पोरवाल जैन समिति, जयपुर के अध्यक्ष रहे। आपके अग्रज श्री उम्मेदचन्दजी, श्री दानमलजी एवं अनुज भ्राता श्री ऋषभजी संघसेवा एवं धर्म आराधना में तत्पर रहते हैं। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती मंजुलाजी, सुपुत्र श्री अभिषेकजी (सी.ए.), डॉ. प्रज्वलजी, सुपुत्री अंजलीजी सहित समस्त परिवार धर्मभावना एवं समाजसेवा में तत्पर है।

-धनसुरेश जैन

इन्दौर-धर्मनिष्ठ, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री मोहनलालजी पीपाड़ा का 28 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आप श्री

जैन स्वाध्यायी विद्यापीठ, जलगाँव से स्नातक थे। आप लगभग 35 वर्षों से इन्दौर में धार्मिक शिक्षक एवं स्वाध्यायी के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे थे। आपके मार्गदर्शन में अनेक बालक-बालिकाओं एवं श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक, प्रतिक्रमण आदि धार्मिक ज्ञान अर्जित कर अपने जीवन को उज्ज्वल बनाया। आप हँसमुख, मिलनसार तथा सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। स्वधर्मी वात्सल्य में आपका विशेष सहयोग रहता था। आपने पर-कल्याण के साथ स्व-कल्याण हेतु भी प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय, रात्रि भोजन-त्याग आदि विविध त्याग-प्रत्याख्यान अङ्गीकार कर रखे थे।

-[illegible], संयोजक

जोधपुर-सेवाभावी धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न श्री भागचन्दजी कांकरिया का 26 मई, 2021 को देहावसान हो गया। 'दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं' की उक्ति को अपने जीवन में चरितार्थ करते हुए आपका विभिन्न गौशालाओं एवं हिंसा निवारक समिति में तन-मन-धन से योगदान रहता था। 'जे कम्मे सूरा ते धम्मे सूरा' इस सूत्र को जीवन में अपनाते हुए व्यावसायिक क्षेत्र में तो आपने नाम कमाया ही, साथ ही धर्म की जाहोजलाली में भी सदैव अन्तःकरण से जुड़े रहे। आप पर-कल्याण में नहीं, अपितु स्व-कल्याण हेतु भी प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय, रात्रि भोजन-त्याग आदि विविध त्याग-प्रत्याख्यान करते थे। आपने श्री कुशल जैन छात्रावास में वर्षों तक पदाधिकारी के रूप में कुशल सञ्चालन किया और संघ तथा विभिन्न संस्थाओं के विभिन्न पदों को सुशोभित करते हुए सर्वतोभावेन समर्पित होकर महनीय सेवाएँ प्रदान की। आपकी सुपुत्री श्रीमती श्वेताजी कर्णावट अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के सचिव पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रही हैं। -धनपत सेठिया, महामन्त्री

जोधपुर-सुश्राविका श्रीमती शान्तादेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री नवरतनमलजी डोसी का 26 मई, 2021 को देहावसान

हो गया। आपका जीवन त्याग-प्रत्याख्यान से युक्त था। सूर्यनगरी-जोधपुर में रत्नसंघीय चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। सन्त-सतीवृन्द की सेवा भक्ति में आपकी भावना सदा प्रशस्त रही थी। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था जिसके फलस्वरूप डोसी परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। आपके धर्मसहायक स्व. श्री नवरतनमलजी डोसी की वर्षों तक स्वाध्यायी और स्वाध्याय संघ के संयोजक के रूप में महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं,आप अपने पीछे सुपुत्र श्री अजयजी, सुपौत्र अक्षयजी डोसी का धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गई हैं।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री महावीरप्रसादजी सुपुत्र स्व. श्री हंसराजजी जैन (कठेला वाले) का 49 वर्ष की

वय में 5 जून, 2021 को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण आप सबके प्रियपात्र थे। आप नियमित रूप से स्थानक में जाकर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करते थे। आपका सम्पूर्ण परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप जुड़ा हुआ है। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों की आतिथ्य-सत्कार में आपका परिवार सदैव तत्पर रहता है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

रतलाम-अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सोहनलालजी पितलिया का 24 अप्रेल, 2021 को

देहावसान हो गया। आप नियमित रूप से गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने वाले अग्रणी श्रावकरत्न थे। रतलाम क्षेत्र में पधारने वाले रत्नसंघीय सन्त-सतीवृन्द की सार-सम्भाल तथा विहार-सेवा में आपका उल्लेखनीय योगदान प्राप्त होता था। सामायिक-

स्वाध्याय के प्रति जागरूक श्रावकरत्न पर्युषण पर्वाराधना में गुरुदेव की सन्निधि में पधारकर आराधना किया करते थे। आप अल्पभाषी एवं मितभाषी थे। आप परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सांसारिक जीजाजी थे। व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा रतलाम होकर पधारे तब आपकी विशेष सेवाएँ रहीं। अपनी धर्मसहायिका श्रीमती सुशीलाजी से आपको सदैव धर्मसहयोग प्राप्त होता था। श्रीमती सुशीलाजी एवं आपने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था जिसके फलस्वरूप सुपुत्र श्री विक्रमजी एवं श्री सुशीलजी संघ-सेवा में महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

बर्कले, केलिफोर्निया-बौद्धधर्म एवं जैनदर्शन के अन्तर्राष्ट्रीय मनीषी प्रोफेसर पद्मनाभ एस. जैनी का 25 मई, 2021

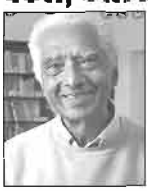

को 97 वर्ष की वय में निधन हो गया। आप सरल व्यक्तित्व और गहन अध्ययन के धनी थे। आपको परमपूज्य जगत् गुरु स्वस्ति श्री कर्मयोगी भट्टारक चारुकीर्ति जी श्रवणबेलगोला जी ने अन्तरराष्ट्रीय ज्ञानभारती प्राकृत पुरस्कार से सम्मानित किया था। आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय और लन्दन विश्वविद्यालय के 'स्कूल ऑफ ओरियन्टल एण्डी अफ्रीकन स्टडीज' में अध्यापन कार्य किया। आपकी अनेक पुस्तकों में "The Jaina Path of Purification" विशेष ख्याति प्राप्त है।

-प्रो. प्रेम सुमन जैन उदयपुर

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री चन्दनमलजी सुपुत्र श्री सोनराजजी चौपड़ा (पालासनी वाले) का 24 अप्रैल, 2021

देहावसान हो गया। आप सुमधुर गायक, सरल व्यक्तित्व के धनी, मृदुभाषी और मिलनसार थे। आप सदैव जिनवाणी श्रवण करने में अग्रणी रहते थे। अपने नजदीक के स्थानक में जब भी कोई साधु सन्त या महासतीजी म.सा. पधारते तब आप सदैव प्रवचन श्रवण करने की लालसा लेकर उपस्थित होते थे। आप कई बार प्रवचन सभाओं में गुरु गुणगान के मधुर भजन प्रस्तुत करते थे। आपके पिताजी श्री सोनराजजी एवं भाई श्री गौतमराजजी, हँसमुखराजजी एवं पुत्र ऋषभजी संघ-सेवा में तन-मन-धन से समर्पित हैं।

-गजेन्द्र चौपड़ा

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पारसदेवीजी धर्मपत्नी श्री घीसालालजी बम्ब (मूलनिवासी मदनगंज-किशनगढ़)

का 74 वर्ष की आयु में 21 मार्च, 2021 को संलेखना संथारा पूर्वक अमेरिका के न्यूजर्सी में समाधिमरण हो गया। आप अत्यन्त सरल, सहज, सौम्य व्यवहारा और मृदुभाषी थी। सन्त-सतियों के दर्शन और उनके प्रति अगाध श्रद्धा के भाव रखती थी। हमेशा व्रत और सामायिक के नियम की पालना करती थी। पूरे बम्ब परिवार को धर्मध्यान करने की प्रेरणा देती थी। स्वास्थ्य बिगड़ने पर उच्च भावों में प्रत्याख्यानों साथ परलोक गमन हुआ। आप अपने पूरे परिवार के साथ अमेरिका में ही निवास कर रही थी।

-कमल बम्ब

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री उम्मेदमलजी सिंघवी का 23 जून, 2021 को देहावसान हो गया। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहने वाले आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप नियमित रूप से स्थानक में पधारकर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने वाले अग्रणी श्रावकरत्न थे। सिंघवी परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी सदैव समर्पित रहा है। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में सिंघवी परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

पीपाड़ शहर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्यारेलालजी सुपुत्र स्व. श्री मोतीलालजी मुथा (नवरंग ट्रॉसपोर्ट वाले) का 6

1 को 85 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपने वर्ष 1986 के जयपुर चातुर्मास में गुरु हस्ती की प्रेरणा से व्यसनों का त्यागकर अपना जीवन परिवर्तित कर लिया। आप समय-समय पर गुरु भगवन्तों के दर्शन, वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सामयिक का लाभ प्राप्त करते थे। आपने संघ, समाज एवं राजनीति में सक्रिय रहते हुए क्षेत्र में अनेक विकास के कार्य कराए। आप 2 बार पार्षद, नगर पालिका के नेता प्रतिपक्ष और नगर कॉंग्रेस के अध्यक्ष रह चुके थे। आप अपने पीछे 6 पुत्र, 1 पुत्री, पोते, पोती, दोहिते-दोहिती का भरापूरा और संस्कारवान परिवार छोड़कर गये हैं। आपके सुपुत्र-सुपौत्र तेजराजजी बैंगलोर, पारसमलजी, रविजी सरस्वती नगर जोधपुर, मनोजजी, रितिकजी पीपाड़ में सन्त-सती की सेवाभक्ति और रत्न संघ की स्थानीय शाखाओं में संघ सेवा का लाभ ले रहे हैं। *-मोहित जैन*

आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ वरिष्ठ सुश्रावक श्री मोतीलालजी जैन (भगवतगढ़ वाले) का 1 जून, 2021 को देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी एवं व्यवहार कुशल थे। आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति असीम श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

आलनपुर-सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री घनश्यामजी जैन (पुसेदा वाले) का 29 अप्रेल, 2021 को

लगभग 80 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। आपका जीवन सरल एवं मधुर था। नियमित रूप से सामायिक करते थे। आप अपने पीछे एक पुत्र (आदित्य) पुत्रवधू (प्रीति) और चार पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

-आदित्य जैन

अलवर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी जैन का 07 अप्रेल, 2021 को देवलोकगमन हो गया। आपका

धर्ममय जीवन कर्त्तव्यपरायणता, कर्मठ सेवा भावना, विनम्रता एवं उदारता आदि सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप नियमित सामायिक-साधना करते थे। कई वर्षों तक आप साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा की सेवा में रत रहे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पाजी एवं दो सुपुत्र श्री नवीनजी एवं विनीतजी का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। आपके छोटे सुपुत्र श्री विनीतजी जैन ने शिक्षण बोर्ड एवं संस्कार केन्द्र में प्रचारक के रूप में चेन्नई एवं जोधपुर आदि स्थानों पर कई वर्षों तक अपनी महनीय सेवाएँ दी। *-बसन्त कुमार, जोधपुर*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ, स्वाध्यायी श्राविका श्रीमती पद्माजी धर्मसहायिका श्री महीपालराजजी मेहता का 25 अप्रेल,

2021 को देवलोकगमन हो गया। आप राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य, संस्कृत की व्याख्याता तथा एन.सी.सी. की भी प्रथम अधिकारी रही। आप उत्कृष्ट शिक्षक के रूप में सम्मानित हुई तथा करुणा इण्टरनेशनल, जोधपुर की उपचेयरपर्सन पर रहते हुए आपने शाकाहार, प्राणिरक्षा, गोसेवा एवं वृक्षारोपण का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। संस्कृत के साथ प्राकृत, जैनधर्म एवं बौद्धधर्म में आपकी विशेष रुचि रही। आप जुझारू व्यक्तित्व की साहसी महिला थी।

अहमदाबाद-धर्मनिष्ठ, श्रद्धाशील, सुश्राविका श्रीमती दिव्या देवीजी धर्मपत्नी श्री अशोककुमारजी बाँठिया का 25

अप्रैल, 2021 को 37 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। बाँठिया परिवार परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं रत्नसंघ के प्रति समर्पित निष्ठावान परिवार है। आपके ससुर श्री लूणचन्दजी स्थानकवासी संघ धर्मनगर, अहमदाबाद के कोषाध्यक्ष, मोतीलालजी साबरमती संघ के मन्त्री एवं ओमप्रकाशजी बाँठिया बालोतरा संघ के

मन्त्री है। रत्नसंघ के प्रति समर्पित आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय के साथ, धर्मनगर ज्ञानशाला में बच्चों को ज्ञान शिक्षण की सेवाएँ गत कई वर्षों से प्रदान कर रही थीं। *-वीरेंद्र बांठिया, अहमदाबाद*

दिल्ली-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती स्नेहप्रभाजी धर्मपत्नी सुश्रावक स्व. श्री नेमीचन्दजी पुत्रवधू श्री मिलापचन्दजी पारख का 99 वर्ष की आयु में 19 अप्रेल, 2021 को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति गहरी आस्था थी। आप दया-दान, 4-5 सामायिक, स्वाध्याय, माला, जप-तप, साधना-आराधना किया करती थीं। आपका हमेशा यही कहना था कि मुझे संथारा करा देना और अस्पताल मत ले जाना। आपने आखिरी दो दिनों में किसी से बात भी नहीं की, किसी से मोह नहीं रखा। आप अपने पीछे दो पुत्र श्री अभयचन्द, कुशलचन्दजी एवं दो सुपुत्रियाँ सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। *-पुष्पा पारख, जयपुर*

सोजतसिटी-सन्तसेवी, श्रद्धानिष्ठ श्राविका श्रीमती बदनकँवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री जौहरीलालजी पटवा का

89 वर्ष की आयु में 30 मई, 2021 को संथारे सहित देवलोकगमन हो गया। आपने बचपन से ही अनपढ़ रहते नियमित दो-तीन घण्टे सामायिक सहित आगम वाचन का अध्ययन प्रतिदिन 4-5 सामायिक करना लक्ष्य बना रखा था। लगभग 35 वर्षों से जमींकन्द एवं रात्रि भोजन-त्याग का नियम था। सन्त-सतीवृन्द की सेवा, जिनवाणी श्रवण करने में सदैव तत्पर रहती थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गयी हैं। *-कान्तिलाल पटवा, सोजत*

इन्दौर-धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न श्री विजयकुमारजी सुपुत्र श्री रघुनाथदासजी जैन खरकड़ी-सवाईमाधोपुर का 8 मई,

2021 को देवलोकगमन हो गया। आपकी सेवा की शुरुआत राजस्थान पत्रिका जयपुर कार्यालय से हुई तथा आपने पाली, इन्दौर, जबलपुर, बिलासपुर और भोपाल में राजस्थान पत्रिका संस्करण का प्रकाशन चालु करवाया। आपका धार्मिक, सामाजिक प्रवृत्तियों के समाचार प्रकाशन में अच्छा सहयोग रहा। आप मितभाषी, सरल, उदारमना श्रावक थे। आपकी माताजी श्रीमती मनभरबाईजी और धर्मपत्नी श्रीमती चन्दाजी अच्छी श्राविका हैं। आप राजस्थान पत्रिका के इन्दौर यूनिट हेड थे तथा श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर के छात्र रहे हैं। परिवार में बड़े भ्राता श्री रमेशचन्दजी सेवानिवृत्त जिला शिक्षा अधिकारी एवं अरुणजी सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी, सुपुत्र श्री भविष्य, निश्चयजी का संघसेवा की दिशा में धर्मानुराग अच्छा है। *-भविष्य जैन*

कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती लताजी धर्मपत्नी श्री गौतमचन्दजी जैन (खातोली वाले) का 4 मई, 2021 को

देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतियों के प्रति असीम श्रद्धा एवं धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि थी। आप मृदुभाषी एवं सरल व्यक्तित्व की धनी थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। *-त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर*

कोटा-धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी जैन (उनियारा वाले) का 3 जून, 2021 को

देवलोकगमन हो गया। आप वन विभाग में 1981 से सेवारत रहे तथा 31 मार्च, 2018 को सेवानिवृत्त हुए। कोटा-महावीर नगर संघ में सक्रिय सदस्य होने के साथ कोषाध्यक्ष पद का दक्षता पूर्वक निर्वहन किया। प्रार्थना, माला, सामायिक-स्वाध्याय आपके जीवन के अनमोल रत्न थे। आप गुरु दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ लेकर प्रसन्न होते थे। आपने समभाव का जीवन जिया। आप सरल स्वभावी, मितभाषी, उदारमना श्रावक थे। आपका जीवन कर्त्तव्य परायणता सेवाभावना विनम्रता आदि गुणों से ओतप्रोत था। आप जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका के नियमित पाठक थे। *-तरुण जैन, कोटा*

कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री धर्मचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री सर्वसुखजी जैन (नाहरी वाले) का 7 मई, 2021 को 56 वर्ष

में स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल और सादगी से परिपूर्ण था। देव-गुरु-धर्म के प्रति आस्थावान श्रावक थे। आप अपने पीछे भरापूरा एवं धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गये हैं।

-घनश्याम जैन, जयपुर

बालोतरा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री महेन्द्रकुमारजी सुपुत्र स्व. श्री तखतमलजी गोठी का 10 जून,

2021 को 52 साल की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आपका पूरा परिवार धार्मिक गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। आप सरल स्वभावी थे। आप पर्युषण में गाँव में आठ दिन व्यापार बन्द करके बालोतरा धर्म-ध्यान के लिए आते थे। आप भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं। *-सोहनलाल जैन, बालोतरा*

जोधपुर-श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री दलपतमलजी सुपुत्र स्व. श्री किशोरमलजी लोढ़ा का 07 मई,

2021 को 78 वर्षीय वय में स्वर्गगमन हो गया। आपका धर्ममय जीवन उदारता, सरलता, सहजता, कर्त्तव्य-परायणता, व्यवहार दक्षता एवं विनम्रता आदि सद्गुणों से ओतप्रोत रहा। आप अपने पीछे धर्मसहायिका श्रीमती ललिताजी (सुपुत्री श्रीमती अमरकँवरजी-स्व. श्री महावीरचन्दजी सिंघवी) सुपुत्रियाँ श्रीमती मनीषाजी, श्रीमती शालिनीजी, श्रीमती नीतूजी मेहता एवं दौहित्र-दौहित्रियों तथा दामादों सहित भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर संसार से विदा हो गए। *-अर्जुनराज गुलराजजी मेहता, जोधपुर*

अहमदाबाद-धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ, संघ समर्पित सुश्राविका श्रीमती पदमाजी मोहनोत धर्मपत्नी स्व. श्री पुखराजजी

मोहनोत का 17 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आपके धर्मसहायक आदरणीय स्व. श्री पुखराजजी मोहनोत का जीवन प्रारम्भ से ही संघ-सेवा के लिए समर्पित रहा था। ग्रन्थ भण्डारों के व्यवस्थितीकरण एवं प्रवचन-सम्पादन में उनका उल्लेखनीय सहकार रहा। जिनवाणी के वे सह सम्पादक रहे। प्राचीन ग्रन्थ और साहित्य को सुव्यवस्थित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया गया था। आप रत्नसंघीय श्रद्धेय श्री मगनमुनिजी म.सा. की सांसारिक पुत्रवधू थी। आदरणीय श्री गणपतराजजी मोहनोत की कार्यालय व्यवस्था में संघ में सेवाएँ प्राप्त हुई तथा श्री जेठमलजी मोहनोत स्वाध्याय संघ में स्वाध्यायी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। सम्पूर्ण मोहनोत परिवार संघ-सेवा में सक्रिय है। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री भँवरलालजी सुपुत्र श्री पारसमलजी गाँधी का 76 वर्ष की आयु में 12 मई, 2021 को

देहावसान हो गया। आप बहुत ही सरल स्वभावी, शान्तचित्त, सात्त्विक विचारों वाले श्रावक थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। *-हेमन्त जैन*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती चम्पाजी धर्मपत्नी स्व. श्री नरपतराजजी भण्डारी का 15 जून, 2021 को देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। आपके धर्मसहायक स्व. श्री नरपतराजजी ने वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में संघ को महनीय सेवाएँ प्रदान की थी। साहित्य के प्रचार-प्रसार में भी उनका निरन्तर प्रयास रहता था, उपयोगी साहित्य वितरण में सदैव तत्पर रहते थे। वे सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव अग्रणी रहती थी। भण्डारी परिवार संघसेवा, समाजसेवा में सदैव अग्रणी रहा है। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

नई दिल्ली-धर्मनिष्ठ सुश्राविका डॉ. प्रेरणा जैन धर्मसहायिका डॉ. अजीतजी जैन (विभागाध्यक्ष कार्डियक सर्जरी विभाग एवं नोडल ऑफिसर कोविड-19 राजीव गाँधी सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल) का 31 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आप व्यवहार कुशल, मृदुभाषी एवं धर्मनिष्ठ

आचरणशील सुश्राविका थी।

सोजतरोड़-धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती बसन्तादेवीजी धर्मपत्नी श्री राजेशकुमारजी गुन्देचा का 05 जून, 2021 को देहावसान हो गया। आप सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शेखेकाल सोजतरोड़ विराजने तथा रत्नसंघीय सन्त-सतीवृन्द के चातुर्मास में आप सहित परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। सेवा-धर्म की साधना में सब काम छोड़कर तन-मन-धन से एवं समर्पित भाव से सन्नद्ध हो जाते थे। सन्त-सती के सोजतरोड़-बेंगलोर पधारने पर गुन्देचा परिवार विहार-सेवा में महनीय योगदान प्राप्त होता है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जोधपुर-धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ सुश्रावक श्री चन्द्रप्रकाशजी मेहता का 06 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आप

Chief Office Suprintendent NW Railway के उच्च पद पर कार्यरत थे। आप सरल स्वभावी, विनय-विवेक के धनी, शान्त एवं स्नेह की प्रतिमूर्ति थे। आपका जीवन मधुरता, उदारता, सहिष्णुता जैसे गुणों से ओतप्रोत था। आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा भक्ति थी। आपके सुपुत्र अंकितजी एवं सुपुत्री रक्षिताजी भी धार्मिक संस्कारों से प्रेरित हैं एवं दोनों ही सी.ए. हैं। आपका परिवार यथावसर गुरु-दर्शन एवं सेवा में समर्पित है।

-कमलेश मेहता, जोधपुर

मण्डावर-धर्मपरायण, श्राविकारत्न श्रीमती मायादेवीजी धर्मपत्नी वरिष्ठ सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी जैन का 26

मई, 2021 को 80 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन 'गुरु हस्ती-गुरु हीरा' के प्रति श्रद्धानवत होने के साथ सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति के लिए सदैव तत्पर रहने वाला था। आप सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविका थी। जीवन में सरलता, व्यवहार में कुशलता, अन्तर्मन में सच्चाई जैसे सद्गुणों का समावेश था। आपके चार पुत्र श्री अशोकजी, अरविन्दजी, अभयजी, आशुतोषजी एवं तीन सुपुत्रियाँ हैं। आपका पूरा परिवार सन्त-सेवा, संघसेवा में सदैव अग्रणी रहता है।

-श्रेयांस जैन

जोधपुर-तपाराधिका सुश्राविका श्रीमती कमलाजी मेहता धर्मपत्नी श्री शुभराजजी मेहता का 74 वर्ष आयु में 16

मई, 2021 को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित सामायिक करती थी एवं रात्रि भोजन त्याग के पच्चक्खाण थे। आपने अठाई, मासक्षपण की तपश्चर्या पूर्ण की।

पाली-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती उच्छबकँवरजी धर्मसहायिका स्मृतिशेष श्री जवरीलालजी सूर्या का 11 मार्च, 2021 को 73 की वर्ष की वय में स्वर्गगमन हो गया। उदारता, शालीनता, कर्त्तव्य

परायणता, सेवा भावना, सहजता, वात्सल्य आदि अनेक सद्गुणों से आपका धर्ममय जीवन ओतप्रोत था। सामायिक-प्रतिक्रमण, स्वाध्याय-साधना में स्वयं तो सदैव तत्पर रहती एवं अन्यों को भी निरन्तर प्रेरित करती थीं। आपके सुपुत्र श्री राकेश कुमारजी, मुकेश कुमारजी सूर्या जैन सक्रिय युवारत्न के रूप में तपश्चर्या-वैयावृत्य सहित महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर संसार से विदा हुई।

-चन्द्रप्रकाश मेहता

तिरुवन्नामलै (तमिलनाडु)-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मोहनलालजी बोहरा (ब्यावर निवासी) का 27 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आप सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहते थे। व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा के तिरूवनामलै चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन,

प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। आप जैसे सुज्ञ श्रावक ने पुण्य से प्राप्त लक्ष्मी का समाज-सेवा हेतु मुक्त हस्त से सदुपयोग किया जो उनकी उदारता का परिचायक है। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी बोहरा परिवार सदैव समर्पित रहा है। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

अजमेर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती निधिजी धर्मसहायिका श्री राजकुमारजी पुत्रवधू श्री हस्तीमलजी-श्रीमती

प्रकाशदेवीजी लोढ़ा का 06 मई, 2021 को 40 वर्ष की वय में स्वर्गगमन हो गया। आप अत्यन्त सरल, सहज एवं सौम्य व्यवहार की धनी थी। आपका जीवन धार्मिकता से ओतप्रोत था। गुरु हीरा के प्रति श्रद्धानिष्ठ श्राविकारत्न नित्य प्रति सामायिक-आराधना के साथ अन्य धार्मिक गतिविधियों को निरन्तर रूप से जारी रखती थी। *-मनीष लोढ़ा, जोधपुर*

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री विकास जी गोलेछा का 10 अप्रेल, 2021 को 50 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

आप सरल स्वभावी, मितभाषी, हँसमुख स्वभाव के धनी थे। समाज-सेवा और सन्त-सतीवृन्द की सेवा में आपका विशेष योगदान रहा है। तिलक नगर में सभी सम्प्रदाय के सन्त-सतीवृन्द को नंगे पैर गोचरी पर ले जाने का लाभ कभी भी अपने नहीं खोया। गत 15 वर्षों में आप पर्युषण पर्व के आठ दिन उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में रहते थे। आपने ग्यारह, नौ उपवास की तपस्या की और एक बार केश लोचन भी किया था। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती पूर्णिमाजी गोलेछा भी नियमित सामायिक-स्वाध्याय करती है। सभी सन्त-सतियों के नियमित दर्शन-वन्दन को जाना उनकी दिनचर्या में शामिल है। श्री विकासजी ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने परिवारजनों को भी धार्मिक संस्कार प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया। *-विमलचन्द सुकलेचा*

उपर्युक्त दिवगंत आत्माओं को जिनवाणी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

शिष्टाचार प्रशंसक

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्दाचार्य ने मार्गानुसारी के 35 बोल में दूसरा बोल बताया। 'शिष्टाचार प्रशंसक' प्रकरण में बताया कि संघ को सुव्यवस्थित रूप से चलाने वाली बाते हैं-सारणा, वारणा और पडिचोयणा। सारणा का अर्थ है कि कर्त्तव्य की शिक्षा दी जाए और जो सदाचारी कर्त्तव्य परायण है उनकी प्रशंसा की जाय, इसे सारणा कहते हैं।

वारणा का अर्थ है अकर्त्तव्य का निषेध। जो अनाचार है, उसका निषेध करना, उसके आचरण की निंदा करना तथा अनाचार करने वालों की अवहेलना करना।

तीसरी बात है पडिचोयणा, यदि कोई व्यक्ति प्रमाद से लापरवाही से अनाचार का सेवन कर लेता है तो उसकी रख-पख नहीं करनी चाहिए, किन्तु कठोरता के साथ उसका प्रतिरोध करना चाहिए। ये तीन बातें जिस संघ या समाज में होती है वही संघ, संघ है और वही समाज, समाज है।

समाज या संघ में जो सदाचारी है, चाहे वो गरीब है या धनवान। वास्तव में जिसके पास सदाचार का धन है, वह कभी गरीब नहीं होता। यद्यपि उसके पास पैसा कम भी है तो भी समाज में उसका आदर होना चाहिए।

-सम्पादन एवं संकलनकर्त्ता, नवरतन डागा, 76, लक्ष्य, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 89
ISSN 2249-2011

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 16220 से 16221 तक कुल 2 सदस्य बने।

जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

11111/- श्री प्रकाशचन्दजी-श्रीमती सरिताजी कोठारी (दादा-दीदी) श्री अमितजी (ताऊ) श्री आशीषजी-श्रीमती अनुराधाजी (मम्मी-पापा) एवं आराध्या (बहिन), जयपुर, चि. राजवीर कोठारी की वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।

11000/- श्री हस्तीमलजी-प्रकाशदेवीजी, राजकुमारजी, सम्यक्जी, रानीजी लोढ़ा-अजमेर श्रीमती निधिजी धर्मसहायिका श्री राजकुमारजी लोढ़ा का 6 मई, 2021 को देहावसान हो जाने पर पुण्य स्मृति में।

11000/- श्री सुरेश कुमारजी-वनिताजी बोहरा (पीपाडसिटी वाले), हैदराबाद, श्रीमती शान्ताबाईजी बोहरा का 22 मई, 2021 को संथारापूर्वक देहत्याग देने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

11000/- श्री एस. सुरेशकुमारजी जैन, हैदराबाद श्री पी.शान्तिलालजी -श्रीमती कमलाजी गुन्देचा की 50वीं वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री अभयचन्दजी श्री कुशलचन्दजी पारख, दिल्ली पूजनीया मातुश्री श्रीमती स्नेहप्रभाजी का 99 वर्ष की आयु में 19 अप्रेल, 2021 को स्वर्गवास होने एवं अपने सुपुत्र स्व. श्री प्रशान्त की 15वीं पुण्यस्मृति में।

5100/- श्रीमती सरलाजी एवं श्री स्वरूपचन्दजी बाफणा, सूरत, सुपौत्र साध्य (सुपुत्र श्रीमती समृद्धिजी एवं श्री सुदर्शनजी बाफणा) के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में।

5100/- श्रीमती उर्मिलाजी-श्री सोहनलालजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा 24 जून, 2021 को वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।

5100/- श्रीमती कानकँवरजी, श्री रमेशजी, श्री रविजी मेहता, जोधपुर सुश्रावक श्री विजयमलजी मेहता (कालू सा) का 1 मई, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्यस्मृति में।

3100/- श्री लुणचन्दजी बाँठिया, अहमदाबाद, सुश्राविका श्रीमती दिव्यादेवीजी धर्मपत्नी श्री अशोककुमारजी बाँठिया के असायथिक निधन पर पुण्यस्मृति में।

2101/- श्री श्रीनिवासजी तुषारजी जैन (जरखोदा वाले) जयपुर, सुश्रावक श्री गौतमचन्दजी जैन का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

2100/- श्री मोहनलालजी जीरावाला, जोधपुर, अपने 75वें जन्मदिवस 6 जून, 2021 को होने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री हरकचन्दजी, कन्हैयालालजी, नीरजजी, निर्मलजी जैन, इन्दौर, श्री हरकचन्दजी के प्रपौत्र श्री कन्हैयालालजी के पौत्र तथा श्री नीरजजी के पुत्र दुर्विक के जन्म होने की खुशी में।

2100/- श्री अजीतजी रांका, भडगाँव, श्रीमती कमलादेवीजी सिंघवी का 1 अप्रेल, 2021 को संथारा पूर्वक समाधिमरण हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

2100/- श्रीमती शोभाजी खिंवसरा, मुम्बई, जिनवाणी सहयोगार्थ।

2100/- श्री प्रकाशचन्दजी, अशोक कुमारजी जैन, मण्डावर-महवा श्रीमती मायादेवीजी धर्मपत्नी श्री प्रकाशचन्द जी जैन के देवलोकगमन होने पर पुण्य स्मृति में।

1101/- श्री जीतमलजी, नीरजकुमारजी, आशीषकुमारजी जैन (एण्डवा वाले), सवाईमाधोपुर, सुश्राविका श्रीमती रानीदेवीजी का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री शुभराजजी मेहता, जोधपुर अपनी धर्मसहायिका श्रीमती कमलादेवीजी मेहता के 16 मई, 2021 को स्वर्गगमन होने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती अंजूजी कोठारी, जयपुर, जिनवाणी सहयोगार्थ।

1100/- श्रीमती दमयन्तीजी धर्मसहायिका श्री धर्मचन्दजी बागरेचा, जोधपुर, जिनवाणी सहयोगार्थ।

1100/- श्री मनोजकुमारजी, सुजलजी, दर्शनजी, एवं कोठारी परिवार, जलगाँव, वीर पिताश्री रमेशचन्दजी अमरचन्दजी कोठारी के कोरोना बीमारी से सकुशल स्वस्थ होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री डिग्गी प्रसादजी, पारसचन्दजी, हर्षकुमारजी करेला वाले, सवाईमाधोपुर श्री महावीरप्रसादजी जैन की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री रूपचन्दजी, त्रिलोकचन्दजी जैन, कोटा चि. राकेशजी के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती प्रभावतीजी दिलीप कुमारजी नागौरी (बम्बोरा वाले) उदयपुर, सुपुत्र श्री रौनक नागौरी के केन्द्र सरकार के अन्तर्गत एन.आई.सी. मुम्बई में प्रथम नियुक्ति की खुशी में।

1100/- श्री उम्मेदचन्दजी, दानमलजी, ऋषभजी, प्रज्वलजी जैन (जरखोदा वाले) जयपुर, श्रावकरत्न श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन (जरखोदा वाले) के 6 जून, 2021 को देवलोकगमन पर पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री नाथूलालजी, संदीपजी, तपनजी जैन (उनियारा वाले) कोटा, श्री प्रकाशचन्दजी जैन के 3 जून, 2021 को देवलोकगमन होने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन, कोटा, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती अनिता जैन का 14 मई, 2021 को देहावसान होने पर पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती ललिताजी-महेन्द्रजी गांग, सूरत आदरणीय स्व. श्री जतनराजजी कुम्भट, जोधपुर की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री लडडूलालजी, सुरेन्दकुमारजी, पदमचन्दजी जैन (चकेरी वाले), सवाईमाधोपुर, सुश्राविका श्रीमती बादामदेवीजी का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री रमेशचन्दजी संजयजी जितेन्द्रजी, दीपकजी जैन (सोंपवाले), टोंक, सुश्राविका श्रीमती सुशीलादेवी जी का देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री जगदीशप्रसादजी, चन्दनजी, कपिलजी, गौरवजी (इन्द्रगढ़ वाले), सुश्राविका श्रीमती पुष्पाबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री रामप्रसादजी जैन का 27 मई, 2021 को देवलोकगतन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती पुष्पाजी, श्री नवीनजी-प्रियंकाजी, विनीतजी-वन्दनाजी, श्रेयांसजी, पारसजी जैन, बडेर वाले, अलवर, पिताश्री प्रकाशचन्दजी जैन का 7 अप्रेल, 2021 को स्वर्गगमन होने पर भावाञ्जलिस्वरूप।

1100/- श्री अजयजी-श्रीमती भारतीजी मेहता, भोपाल, दर्शन-वन्दन करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री संजय कुमारजी, रविन्द्रकुमारजी, पंकजजी जैन (भगवतगढ़ वाले), हाउसिंग बोर्ड-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताजी श्री मोतीलालजी जैन का 1 जून, 2021 को स्वर्गवास हो जाने पर पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री आदित्यजी जैन (पुसेदा वाले), आलनपुर-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताजी श्री घनश्यामजी जैन का 29 अप्रेल, 2021 को स्वर्गवास हो जाने पर पुण्यस्मृति में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

25000/- श्री सुगनचन्दजी छाजेड, जोधपुर साहित्य प्रकाशन हेतु।

आगामी पर्व तिथि

आषाढ़ शुक्ला 8, शनिवार	17.07.2021	अष्टमी
आषाढ़ शुक्ला 14, शुक्रवार	23.07.2021	चतुर्दशी, चातुर्मासिक पर्व (चातुर्मास प्रारम्भ)
श्रावण कृष्णा 8, शनिवार	31.07.2021	अष्टमी
श्रावण कृष्णा 14, शनिवार	07.08.2021	चतुर्दशी, पक्खी
श्रावण कृष्णा अमावस, रविवार	08.08.2021	आचार्य पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. का 95वाँ स्मृति-दिवस
श्रावण शुक्ला 8, सोमवार	16.08.2021	अष्टमी
श्रावण शुक्ला 14, शनिवार	21.08.2021	चतुर्दशी
श्रावण शुक्ला पूर्णिमा, रविवार	22.08.2021	पक्खी

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 91
ISSN 2249-2011

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

श्रमिक महिलाओं की उदारता

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

मैं उन दो श्रमिक महिलाओं को नहीं भूल सकती जिन्होंने हमारी निराशा को अपने उच्च विचारों एवं व्यवहार से सुकून में परिवर्तित कर दिया।

सर्दी के दिन थे। नगर में विवाह की धूम-धाम मची हुई थी। सड़कों पर इतनी भीड़ थी कि पैर रखने को स्थान नहीं था। एक के बाद एक बारातें निकल रही थी। हमें पड़ोसी की बेटी के विवाह के सुरुचि भोज में पहुँचना था। विवाह का प्रतिष्ठान बहुत दूर था। सड़क के किनारे टैक्सी की राह में 40 मिनट तक खड़े रहना पड़ा। टैक्सी आयी और मुँह माँगे दाम देकर विवाह-स्थल पर पहुँच गए। खाना खाकर प्रतिष्ठान के बाहर टैक्सी की प्रतीक्षा में खड़े हो गए। अन्धेरा बढ़ रहा था। एक भी टैक्सी इधर से नहीं निकली।

मैंने (लेखिका) पति से कहा-''अन्दर चलकर किसी को कह दें कि हमें चौराहे तक छोड़ दें।'' हम अन्दर गए तो कुछ लोग खाना खाने में मस्त हो रहे थे, कुछ लोग बारात के स्वागत में व्यस्त थे। हम पुन: बाहर आकर टैक्सी की प्रतीक्षा में खड़े हो गए। इतने में एक टैक्सी आयी। हमें क्षणभर के लिए राहत मिली।

मैंने टैक्सी वाले से कहा-''बाबू! हमें सरदारपुरा 'सी' रोड़ जाना है, किराया क्या होगा?''

टैक्सी वाला-''यह टैक्सी दूसरों के लिए की हुई है; मैं उन्हें पहुँचाऊँगा।''

मैंने कहा-''आप इन्हें छोड़कर हमें पहुँचा देना। यहाँ कोई टैक्सी नहीं आ रही है।''

टैक्सी वाला-''बहिनजी! आज मेरे सोमवार का व्रत है; दिन भर से कुछ नहीं खाया है। पेट में चूहे कूद रहे हैं; आप क्षमा करियेगा।''

इतने में दो श्रमिक महिलाएँ अन्दर से आकर टैक्सी में बैठ गईं। हम सर्दी के मारे थरथरा रहे थे। टैक्सी में बैठते ही उनकी दृष्टि हमारे पर पड़ी। उन्होंने टैक्सी वाले से पूछा-''ये लोग इतनी सर्दी में क्यों खड़े हैं?''

टैक्सी वाला-''बाईजी! ये टैक्सी का इन्तज़ार कर रहे हैं। मुझे भी पहुँचाने के लिए कहा, मैंने मना कर दिया।''

महिलाएँ-''ए भाई! अब इधर टैक्सी का आना तो असम्भव है, रात और सर्दी दोनों बढ़ रहे हैं।''

वे तुरन्त उतरीं और हमारे पास आकर विनीत भाव से कहने लगीं-''बाबूजी! आप टैक्सी में बैठिए।''

लेखिका का पति-''यह टैक्सी आपकी की हुई है, आप घर कैसे जाएँगी?''

महिलाएँ-''चारों बैठ जाएँगे।''

लेखिका का पति-''एक टैक्सी में चार लोगों का बैठना कानूनी मना है, पुलिस चालान कर देगी और चार के बैठने पर फँसा-फसी हो जाएगी।''

एक महिला-''मैडमजी! हम आपको आराम से ले

जाएँगे चौराहे के पहले कोई पुलिस वाला खड़ा नहीं रहता है। आप डरें नहीं।''

मैं और पति एक-दूसरे को देखने लगे, लेकिन टैक्सी में बैठने के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं था। उन्होंने हमें सीट पर बैठा दिया, स्वयं नीचे हमारे पैरों के पास बैठ गई। मुझे इस प्रकार उनका बैठना अच्छा नहीं लगा।

लेखिका महिलाओं से-''आप तो दुबली-पतली हैं सीट पर आगे-पीछे होकर चारों बैठ जाते हैं।''

महिलाएँ-''मैडमजी! आप नए कपड़े पहने हुए हैं इनमें सिलवट पड़ जाएँगे। हम तो मजदूरनियाँ हैं। हमारा यहाँ घर है, इसलिए आने-जाने की टैक्सी की हुई है।''

चौराहा आ गया। टैक्सी रुकी और हम टैक्सी से उतर गए।

टैक्सी वाले को किराया पूछा-''उसने लेने से मना कर दिया।''

उसने कहा-''आपका आशीर्वाद चाहिए।''

हम दोनों ने, तीनों उपकारियों का अन्तर्मन से आभार व्यक्त किया और हृदय से आशीष दी।

वे तीनों उपकारी यह बात भूल गए होंगे; उनके लिए यह बात आई-गई हो गई होगी। मैं वर्षों पुरानी बात भूल नहीं पाई हूँ; भूलनी नहीं चाहिए। कृतघ्न कैसे बनूँ? क्योंकि उन अनपढ़ निर्धन मजदूरनियों की संवेदनशीलता, नम्रता, सहजता, बड़ों के प्रति श्रद्धा, दया और नि:स्वार्थ भाव ने छाप छोड़ दी। टैक्सी चालक की निर्लोभता और सज्जनता अनुकरणीय है।

-ई 123, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

सामायिक-प्रश्नोत्तर

प्र. 1-तिक्खुत्तो के पाठ का क्या प्रयोजन है?

उत्तर- यह गुरुवन्दन सूत्र है। आध्यात्मिक साधना में गुरु का पद सबसे ऊँचा है। संसार के प्राणिमात्र के मन में रहे हुए अज्ञान अन्धकार को दूर करके ज्ञानरूपी प्रकाश फैलाने वाले गुरु हैं। मुक्ति के मार्ग पर गुरु ही ले जाते हैं। ऐसे गुरुदेव की विनयपूर्वक वन्दना करना ही इस पाठ का प्रयोजन है।

प्र. 2-तिक्खुत्तो के पाठ का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर- तिक्खुत्तो के पाठ का दूसरा नाम गुरुवन्दन सूत्र है।

प्र. 3-तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दना क्यों करते हैं?

उत्तर- भगवतीसूत्र 3/1 में भी उल्लेख है कि बलिचंचा राजधानी के अनेक असुरों, देवों तथा देवियों ने तामली तापस की तिक्खुत्तो के पाठ से आवर्तन देते हुए तीन बार वन्दना की।

भगवतीसूत्र 12/1 में उल्लेख है कि श्रमणोपासक शंखजी और पुष्कलीजी ने भगवान महावीर को तीन बार आदक्षिणा-प्रदक्षिणा पूर्वक वन्दना की।

इनसे स्पष्ट है कि तीन बार वन्दना करने की प्राचीन परम्परा रही है, जन-सामान्य में यही विधि प्रचलित रही है। इसके साथ ही हमारे गुरु भगवन्त सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन तथा सम्यक् चारित्र इन तीन रत्नों के धारक होते हैं। उन तीनों रत्नों के प्रति आदर-बहुमान प्रकट करने तथा वे तीन रत्न हमारे जीवन में भी प्रकट हों, इसलिए भी तीन बार वन्दना की जाती है।

-'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

Vardhmān (Mahāvir) and the Monster

One afternoon, Vardhmān was playing a catch and ride game with his friends. The person who won would get to ride on the back of the loser. A new child joined their game. This child was not able to catch, hence lost every time. Almost every child got to ride on his back. Prince Vardhmān also caught the new child. Vardhmān also rode on his back.

A few minutes later, while Vardhmān was on his back, the child started to grow taller and bigger. At the first Vardhmān's friends watched this with curiosity. Later when the child's face began to turn weird, the children got scared and started to run. Some children climbed on the trees while others ran to tell their parents.

During all this Vardhmān remained calm and brave. The monster kept growing very tall, so Vardhmān hit the monster on the head with

his fist. The monster tried to throw Vadhmān off his bak to avoid the pain, but he could not succeed.

Ultimately the monster gave up and asked for forgiveness. Vardhmān frogave the monster. The monter called him Mahāvir, which means strong one. Since then, prince Vardhmān was called Mahāvir.

We will also become fearless and calm in difficult situation as Bhagwān Mahāvir.

-From "Learn Jainism With Fun."

जीवन है चार दिन का, सार्थक हम करेंगे

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

जीवन है चार दिन का, सार्थक हम करेंगे,
सार्थक जो हो गया तो, मुक्ति को वरेंगे।
जीवन है चार दिन का....।।तर्ज।।

अनमोल ज़िन्दगी है, किस्मत से यह मिली है,
हम कद्र करें इसकी, रत्नों से यह जड़ी है।
अवसर मिला अनूठा, प्रमाद न करेंगे,
जीवन है चार दिन का.....।।1।।

प्रभु वीर का है शासन, कुल जैन का मिला है,
जिनवाणी को जो पाया, गुलशन यह खिला है।
पाया है धर्म ऊँचा, जीवन सफल करेंगे,
जीवन है चार दिन का.....।।2।।

जाना है इस जहाँ से, नेकी के काम कर ले,
मानव का भव मिला है, पुण्य-झोली भर ले।
साथ रख ले पूँजी, आगे सफ़र करेंगे,
जीवन है चार दिन का.....।।3।।

-जनता साड़ी सेन्टर, फरिश्ता कॉम्पलेक्स, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

किससे क्या सीखना?

1. गुरु से ज्ञान पाना सीखो।
2. चींटी से संप करना सीखो।
3. सिंह से निडरता सीखो।
4. समुद्र से विशालता सीखो।
5. बादल एवं वृक्ष से परोपकार सीखो।
6. नदी से निर्मलता सीखो।
7. चन्द्रमा से शीतलता सीखो।
8. धरती से सहना सीखो।
9. कुत्ते से वफ़ादारी सीखो।
10. भारण्डपक्षी से अप्रमत्तता सीखो।

-संकलनकर्त्री, मौलिक जैन, बी-174, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

माता-पिता और गुरु का उपकार

संकलित

प्रात:काल का समय था। आदित्य विद्यालय जाने के लिए तैयार हो रहा था, तभी अनन्त उसे बुलाने आ गया। आदित्य ने माता-पिता को प्रणाम किया। उनसे आशीर्वाद लिया और विद्यालय के लिए निकल गया। अनन्त ने पूछा-"क्या तुम प्रतिदिन माता-पिता के चरण स्पर्श करते हो?" उसने कहा-"हाँ, क्योंकि इस संसार में माता-पिता और गुरु हमारे परम उपकारी होते हैं। माता-पिता हमें जीवन देते हैं, हमारा पालन-पोषण कर हमें योग्य बनाते हैं और गुरु इस जीवन में संस्कार देकर हमें अच्छा मानव बनाते हैं। अगर वे नहीं होते तो हम इस धरा पर आँख नहीं खोल पाते। उनका हम पर बहुत ऋण होता है। इसलिये हमें उनके सम्मान और बहुमान में मस्तक अवश्य झुकाना चाहिये। क्योंकि माँ नौ महीने पेट में रखकर बहुत वेदना सहकर हमें संसार में लाती है।"

खुद गीले में सोकर, हमें सूखे में सुलाती है।
जब हम रोते हैं तो, लोरी की मीठी तान सुनाती है।
अच्छा जीवन कैसे जीना, माँ ही हमें सिखाती है।
सिर पर हाथ फेर, वो ही हमें जगाती है।

गुरु दर्शन को ले जाती है, धर्म हमें समझाती है।
भूल हमारी सुधारने को, झूठा गुस्सा भी जताती है।
इस धरती पर भगवान स्वरूपा, माँ ही तो कहलाती है।

और पिता वे होते हैं जो–

अँगुली पकड़कर हमें चलना सिखाते हैं।
हर मुश्किल राह पर साथ जिन्हें हम पाते हैं
कन्धे पर अपने बिठलाकर जो दुनिया हमें दिखाते हैं
पढ़ा लिखाकर जो हमारा जीवन योग्य बनाते हैं
अधिकार और उपकार न कभी भी वे जताते हैं
जग में जीने का हमें, व्यावहारिक ज्ञान भी समझाते हैं।

और गुरु भगवन्त हमें–

प्रभु स्मरण की देते हैं भक्ति,
दु:खों से लड़ने की देते हैं शक्ति,
जिनके सान्निध्य से दूर होती है विपत्ति,
जो देते हैं सद्गुणों की सम्पत्ति।
जिनके उपदेशों से होती है संसार से विरक्ति,
और जीव पा जाता है सद्गति।

ऐसे माता–पिता और गुरु का उपकार सदैव मानना चाहिए। उनके चरणों में सदा झुकना चाहिये, क्योंकि झुकने का अर्थ होता है विनय। वृक्ष की डालियों पर जैसे–जैसे फल लगते जाते हैं, वे झुकती चली जाती हैं उसी प्रकार मनुष्य में जैसे–जैसे गुण बढ़ते जायेंगे वह भी अहंकार छोड़ विनम्र होने से झुकता चला जाएगा। अत: हमसे जो उम्र में, पद में, गुणों में, बुद्धि में, चारित्र में बड़े हैं सदा उनके प्रति सम्मान की भावना रहनी चाहिये।

बड़ों के आदेश देने पर हम काम करें,
नहीं इसमें मज़ेदारी।
उनका आशय बिन आदेश समझ जाएँ,
इसी में हमारी समझदारी।

Success.....is a result, not a goal

Shri Amit Jain

Dear boys & girls

It is a fact that success is always a talking point for those who are not successful in their chosen endeavour. The success of great people is analysed from every possible angle be it looks, vital statistics, dress, demeanour or intelligence. Sachin tendulkar and Amitabh Bachchan may be the touchstone for success in life. But what about thousands of others who wish to emulate the success of the original? They simply flounder on the seas of life, bemoaning and bewailing their fortune or luck for it.

Be an original and you will certainly blare a trail. So not be a copy cat. You may admire some qualities in your role models. But do not blindly imitate them. Once you have set a goal for yourself, your strengths and weaknesses, your background and aptitudes blank out all other considerations. always look ached. Successfully overcoming the obstacles in your path and learning your mistakes. This is what all successful individuals like tendulkar and Amitabh have done.....

They have made mistakes, stumbled and then risen from the ashes of their failure like a phoenix to face the challenges that lie ahead, you must emulate them, follow their career graph and draw your own conclusion.... try to be an original individual if you wish to be successful person. Strike out on your own, demolishing all opposition in the way. Climb the lader of success gradually one step at a time. You will certainly become a successful person.

-11, Tonk Road, Bazariya, Sawaimadhpour (Raj.)

आतिथ्य-धर्म से आत्म-धर्म की ओर

सुश्री लोरी मोदी

अतीत के ऐतिहासिक दिन की घटना है। ग्रामीण आँचल के एक ग्राम प्रतिष्ठानपुर का मुखिया नयसार

था। गाँव के समीप घने जंगल थे। एक दिन नयसार अनेक लकड़हारों को साथ लेकर सूखी इमारती लकड़ियाँ लेने घने जंगल में गया। मध्याह्न के समय सभी लकड़हारे भूख-प्यास से पीड़ित हो गये तब नयसार ने सबको भोजन-विश्राम का अवकाश दिया एवं स्वयं भी हाथ-मुँह धोकर एक सघन छायादार वृक्ष के नीचे भोजन करने बैठा। नयसार का नियम था-पहले किसी अतिथि को खिलाकर फिर स्वयं भोजन करना। अतिथि की प्रतीक्षा में इधर-उधर नज़र दौड़ाने लगा।

इधर-उधर देखते हुए नयसार को श्वेत वस्त्रों में कुछ साधु आते दिखाई दिये। नयसार का हृदय प्रसन्नता से खिल उठा, वह कुछ क़दम साधुओं के सामने गया।

साधु तेज धूप और भूख-प्यास से व्याकुल हो रहे थे। नयसार ने उन्हें वृक्षों की शीतल छाया में बैठने का आग्रह किया। विश्रान्ति लेने के बाद नयसार ने पूछा-''आप इस बीहड़ जंगल में किधर से आ रहे हैं?''

साधु प्रमुख ने कहा-''आयुष्मन्! हमें नगर में जाना था, किन्तु रास्ता भूल गए हैं, प्रात:काल से अब तक चले आ रहे हैं।''

नयसार ने पूछा-''भगवन्! इस घने जंगल में तो कहीं आपको भोजन भी नहीं मिला होगा?''

साधु प्रमुख बोले-''आयुष्मन्! साधु भोजन और पानी तभी ग्रहण करते हैं जब उन्हें अपने नियम के अनुकूल शुद्ध और निर्दोष प्राप्त हो। इस घने जंगल में तो निर्दोष भोजन-पानी की बात ही क्या, विश्रान्ति के लिए भी कहीं नहीं रुके, अभी सत्पथ का अता-पता भी नहीं है।''

नयसार ने अपनी शुद्ध, सात्त्विक भोजन-सामग्री की ओर इशारा करते हुए कहा-''भगवन्! मेरे पास यह शुद्ध-सात्त्विक भोजन तैयार है। आज मुझे अभी तक किसी अतिथि को भोजन प्रदान करने का लाभ भी नहीं मिला है, अत: कृपा करके मुझसे कुछ भोजन लीजिए।''

मुनियों ने नयसार से अनुकूल भिक्षा ग्रहण की। नयसार अत्यन्त प्रसन्न था, आज उसने त्यागी-तपस्वी महान् अतिथियों को भिक्षा प्रदान करते सुपात्रदान का पुण्यार्जन किया। शुद्ध एवं सात्त्विक दान, दाता और अदाता दोनों को ही आत्मिक प्रसन्नता देता है।

कुछ समय रुककर मुनिमण्डल आगे नगर की ओर बढ़ने लगे। नयसार दूर तक उनके साथ रास्ता बताने गया। जब वह लौटने लगा तो साधु-प्रमुख ने रुककर उसने पूछा-''आयुष्यमन्! कुछ धर्म-कार्य करते हो?''

नयसार बोला-''भगवन्! अतिथि-सेवा नियम का पालन करने का प्रयास तो जरूर करता हूँ, इसके अलावा धर्म-कार्य का ज्ञान मुझे नहीं है। आप जैसे, त्यागी सत्पुरुषों का सत्संग भी पहली बार ही मिला है।''

नयसार की सरलता, विनम्रता और पात्रता देखकर साधु-प्रमुख ने कहा-''तुमने सहज श्रद्धा के साथ हमें आहार दान दिया और नगर का रास्ता बताया है, अब तुम भी हमसे कुछ लाभ प्राप्त करो, आत्म-विकास का मार्ग जान सको तो अच्छा हो।''

मुनि के सरल हृदयग्राही धर्म-उपदेश का नयसार के निर्मल मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके सद्बोध सुन उसे अभूतपूर्व दृष्टि मिली, हृदय में प्रकाश-सा जग गया। उसके जीवन की दिशा बदल गई। दृष्टि बदली तो सृष्टि भी बदल गई। नि:स्वार्थ भाव से सुपात्रदान की भावना रखने से नयसार का जीवन धन्य-धन्य हो गया।

-सुपुत्री श्री लोकेन्द्रनाथ मोदी, 5-ए/1, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राजस्थान)

7 STEPS TO TURN YOUR MIND TO POSITIVIE THINKING.

Compiler-Sh. Manoj Kumar Jain

1. Keep smile, 2. Keep a gratitude list, 3. Find the good in others, 4. Speak positively, 5. Know your goals, 6. Listen to good speakers, 7. Begin an end each day with positive words.

-61/484, Rajat Path, Mansarovar, Jaipur-302020 (Raj.)

10 जुलाई 2021
जिनवाणी 96
ISSN 2249-2011

बाल-स्तम्भ

धर्मरुचि अनगार

संकलित

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अगस्त, 2021 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

चम्पा नाम की सुन्दर नगरी थी। उस नगर में तीन ब्राह्मण भाई रहते थे। उनका नाम था-सोम, सोमदत्त, सोमभूति। वे बहुत सम्पन्न, चार वेदों के ज्ञाता ताथ अन्य कामों में भी कुशल थे। उन तीन भाइयों की पत्नियों के नाम क्रमश: नागश्री, भूतश्री और यशश्री था। वे तीनों खूब आनन्द और सुख से रहती थीं।

एक दिन तीनों भाइयो ने तय किया कि तीनों के घर बारी-बारी से भोजन बनाकर सभी साथ में बैठकर भोजन करेंगे। एक बार नागश्री की खाना खिलाने की बारी थी। उसने बहुत प्रकार के पकवान बनाये। सभी भाइयों की पत्नियों से मेरी रसोई बेहतर है, उसे ऐसा दिखाने की बहुत इच्छा थी।

उसने रसोई में ऋतु के अनुसार तुम्बी की सब्जी बनाई। रसोई बनाने की हड़बड़ाहट में तुम्बी चखना भूल गई थी। सब्जी तैयार होने के बाद उसकी एक बूँद हाथ में लेखर चखी तो कड़वी और खाने में ज़हर जैसी लगी।

अब क्या करूँ? अभी सब आयेंगे और सब्जी देखेंगे तो मेरा मज़ाक उड़ायेंगे। मुछे इस सब्जी को निकालकर दूसरी सब्जी बनानी चाहिए। ऐसा सोचकर वह अपने काम में व्यस्त हो गई।

उस समय चम्पा नगरी में धर्मघोष नाम के आचार्य अपने शिष्य समुदाय के साथ पधारे थे। उनके धर्मरुचि नाम के एक उग्र तपस्वी शिष्य थे। वे मासखमण के पारणे में मासखमण की अति कठोर तपश्चर्या करते थे।

आज धर्मरुचि के मासखमण तप के पारणे का दिन था। इसलिये वे अपने गुरु की आज्ञा लेकर चम्पा नगरी में गोचरी लेने एक घर से दूसरे घर घूमते-घूमते नागश्री ब्राह्मणी के घर पहुँच गये। धर्मरुचि अनगार को अपने आँगन में आते देखकर नागश्री को गुप्त आनन्द की अनुभूति हुई।

अपनी भूल छुपाने के लिए उसने, इन मुनि का क्या होगा? यह सोचे बिना, तुम्बी की पूरी सब्जी उन मुनि के पात्र में बहरा दी। इतना आहार मेरे लिए पर्याप्त होगा, यह सोचकर धर्मरुचि अनगार अपने स्थान पर वापस आ गये।

धर्मरुचि ने गोचरी में लाई हुई सब्जी गुरुदेव धर्मघोष मुनि को बताई। गुरु को सब्जी की गन्ध पर शंका हुई और एक बूँद चखकर उन्होंने उसे कड़वी और न खाने जैसी जानकर धर्मरुचि अनगार को कहा-"यदि आप यह सब्जी खाओगे तो जरूर मृत्यु हो जाएगी। इसलिए हे मुनिराज! आप इस सब्जी को अचित्त भूमि पर यतनापूर्वक परठ दो और दूसरा निर्दोष आहार लाकर गोचरी करो।"

गुरु आज्ञा पाकर धर्मरुचि अनगार ने दूर जाकर निर्दोष भूमि देखकर एक बूँद सब्जी की ज़मीन पर डाली। सब्जी की भारी गन्ध से तुरन्त ही वहाँ सैकड़ों चींटियाँ आ गईं। उन चींटियों ने जैसे ही सब्जी खाई कि तुरन्त चींटियाँ कालधर्म को प्राप्त हुईं। धर्मरुचि अनगार यह दृश्य देखकर काँपने लगे। उन्होंने सोचा-'यदि सब्जी की एक बूँद से सैकड़ों चींटियाँ मर गई, तो जब मैं ये पूरी सब्जी परठ दूँगा तो कितनी हिंसा होगी? मुझे घोर हिंसा का पाप लगेगा।'' जैन मुनि दयालु होते हैं, दूसरे के दोष की ओर दृष्टि भी नहीं डालते और अहिंसा पालन के लिए प्राण देने में भी नहीं हिचकिचाते। उसी तरह धर्मरुचि अनगार ने मन से भी नागश्री का जरा भी दोष नहीं देखा और सोचा कि जहाँ एक भी चींटी की मृत्यु न हो, वैसा निरवद्य स्थान तो मेरा पेट ही है। इसलिए मैं यह सारी सब्जी खा जाऊँ तो कई जीवों की प्राण रक्षा होगी। ऐसा सोचकर उन्होंने पूरी सब्जी स्वयं ही खा ली।

कड़वी और ज़हरीली सब्जी के कारण उनके शरीर में वेदना उत्पन्न हुई। वह वेदना असह्य थी, फिर भी उन्होंने समभाव से सहन किया। उन्होंने जीवन पर्यन्त के पापों की आलोचना, प्रतिक्रमण किया और समाधिपूर्वक कालधर्म (मृत्यु) को प्राप्त हुए। धर्मरुचि अनगार सर्वार्थ सिद्ध विमान में देव के रूप में उत्पन्न हुये।

धर्मरुचि को आने में देर होते देख गुरु ने अपने दूसरे शिष्यों को उनकी खोज करने भेजा। खोज करते-करते शिष्यों को, धर्मरुचि अनगार कालधर्म को प्राप्त हुए, ऐसी जानकारी मिली। यह समाचार उन्होंने अपने गुरु को दिए। गुरु ने अपने ज्ञान द्वारा यह कृत्य नागश्री का है, ऐसा जाना।

लोगों को इस बात की धीरे-धीरे खबर मिली और लोग नागश्री को धिक्कारने लगे। अपनी भूल छुपाने से बेइज्जती हुई। तीनों भाइयों ने मिलकर उसे घर से बाहर निकाल दिया।

अब वह भीख माँग गुजारा करने लगी। उसको पीड़ा होने लगी। जीवन के अन्त समय तक दुःखी रहकर वह छठी नरक में उत्पन्न हुई। (उसके शरीर में 16 महारोग पैदा हो गए।)

जो जीव दूसरे का बुरा चाहता है, उसका भी बुरा ही होता है। जो जीव दूसरे का भला चाहता है, उसका अपना भी भला होता है।

धर्मरुचि अनगार की आत्मा सर्वार्थसिद्ध, देवलोक से च्यवकर महाविदेह क्षेत्र में मनुष्य भव पाकर सब कर्मक्षय कर सिद्ध (मोक्ष) हुई। धन्य है ऐसे उत्तम जैन मुनियों को जिन्होंने अनेक जीवों की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर मोक्ष प्राप्त किया।

-पुस्तक 'सचित्र जैन पाठ्यक्रम' से साभार

प्र. 1. नागश्री को किस बात का भय था?

प्र. 2. धर्मरुचि अनगार किन कारणों से जैनधर्म के इतिहास में अमर हो गए?

प्र. 3. नागश्री द्वारा किए गए कृत्य का उसे क्या फल मिला?

प्र. 4. धर्मरुचि अनगार ने सारी सब्जी को स्वयं ही क्यों खा लिया?

प्र. 5. प्रस्तुत कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

प्र. 6. कहानी में से चार उपसर्ग युक्त शब्द छाँटकर उनसे मूल शब्द एवं उपसर्ग अलग कर लिखिए।

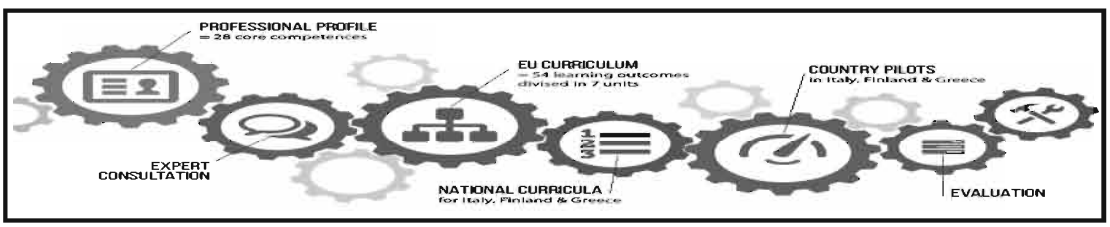

बाल-स्तम्भ [अप्रेल-2021] का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल-2021 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'गुण ग्रहण की आकांक्षा' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अनुष्का जैन, जयपुर (राजस्थान)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अरिन चोरड़िया, जयपुर (राजस्थान)	22
	विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	22
	यशवर्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	22
	सितेश जैन, कोटा (राजस्थान)	22
	नमन श्रेणिक छाजेड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	22

बाल-जिनवाणी मई-जून, 2021 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 अगस्त, 2021)

प्र. 1. 'माँ का भरोसा' कहानी में निहित मूल सन्देश लिखिए।
प्र. 2. आचार्यप्रवर किन 36 गुणों के धारक होते हैं?
प्र. 3. भौतिकवाद का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव दिखाई दे रहा है?
प्र. 4. सुरक्षित पर्यावरण में हम किस तरह योगदान दे सकते हैं?
प्र. 5. 'गुरु का जीवन में महत्त्व' विषय पर 40-50 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।
प्र. 6. सच्चे अर्थों में साधु किन्हें कहा जाता है?
प्र. 7. अपने किसी से प्राप्त ऐसी सीख का वर्णन कीजिए जो आपको सुख की अनुभूति कराती है।
प्र. 8. सिद्धों से पहले अरिहन्तों को नमस्कार क्यों किया जाता है?
प्र. 9. Why should we set our priorities to achieve a goal?
प्र. 10. Make one sentences from each-Pebbles, Recognize, Critical & Priorities.

बाल-जिनवाणी [मार्च-2021] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-2021 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	कविश जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	भूमि सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	38
तृतीय पुरस्कार- 300/-	यशवर्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	कुणाल भड़गतिया, जयपुर (राजस्थान)	36
	तीर्थ दफ्तरी, भीनासर-बीकानेर (राजस्थान)	36
	वंश जैन, जयपुर (राजस्थान)	36

संस्कार केन्द्रों हेतु दो नये प्रकाशन

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं धार्मिक पाठशालाओं के अध्यापकों से निवेदन है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा दो नवीन पुस्तकों *'प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर'* और *'हमारे जीवन की नई कहानियाँ'* का प्रकाशन किया गया है, जो बच्चों के लिए संस्कार प्रदात्री हैं। अतः बच्चों के लिए इनका उपयोग करें। बालकों को संस्कारित करने का यह भी एक उत्तम साधन है। *-सम्पादक*

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।

ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

फोन : **022 2628 7187**

ई-मेल : **oswalmatrimony@gmail.com**

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्जवल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. **We Have Launched Membership Plans For Donors.**

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	**GOLD MEMBER** RS.75000	**PLATINUM MEMBER** RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		**KOHINOOR MEMBER** RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund **IFSC Code** - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722 **PAN No.** - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यो एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची –

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)

श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।
श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन।
युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।

SILVER MEMBER (RS.50000)

श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (भोपालगढ़)
श्रीमान् सोहनराज जी बाघमार, कोयम्बटूर।
कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, अहमदाबाद।
श्रीमती हेमलता मदनलाल जी सांखला, मुम्बई।
श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर
श्रीमती सुशीला जी साण्ड धर्मपत्नी स्व. श्री कस्तूरमल जी साण्ड, अजमेर

PLATINUM MEMBER (RS.100000)

श्रीमान् दूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई।
श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई।
श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई।
श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।
श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई।
कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद।
प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)।
श्रीमान् विजय जतिन जी नाहर, इन्दौर।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़।
श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू।
श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरू पार्क, जोधपुर।
श्रीमान जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले)

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-56**

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

'छोटा सा चिंतन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रेल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अत: इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनका हार्दिक आभारी है।

(1) श्री विनयचन्दजी डागा, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(2) डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(3) श्री अशोक कुमारजी सेठ, जयपुर, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(4) श्री राजेन्द्र कुमारजी रितुलजी पटवा, जयपुर, कोषाध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
(5) श्री हिमांशुजी सुपुत्र श्री सोहनलालजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, जिला-टोंक
(6) श्री गौत्तमचन्दजी जैन, पूर्व जिला रसद अधिकारी (अलीगढ़-रामपुरा वाले), जयपुर
(7) न्यायमूर्ति श्री जसराजजी श्री आनन्दजी चौपड़ा, जयपुर
(8) श्री सुशीलजी सोलंकी, मुम्बई
(9) श्री रतनराजजी नेमीचन्दजी भण्डारी, मुम्बई (पीपाड़ सिटी वाले)
(10) नयनतारा रतनलाल सी. बाफणा एण्ड सन्स, जलगाँव
(11) श्री राजरूपमलजी, संजयजी, अंजयजी, दिवेशजी मेहता, शिवाकाशी
(12) डॉ. एस. एल. नागौरीजी, बून्दी
(13) श्री अरुणजी मेहता, सुनीताजी मेहता छत्तरछाया फाउण्डेशन, जोधपुर
(14) श्री उम्मेदराजजी, एवन्तकुमारजी, राजेशकुमारजी डूंगरवाल (थाँवला वाले), पाँच्यावाला-जयपुर
(15) श्री दुलीचन्दजी-श्रीमती कमलाजी बाघमार, चेन्नई
(16) श्री चंचलमलजी, अशोक कुमारजी चोरड़िया, जोधपुर
(17) श्री प्रमोदजी महनोत, जयपुर, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर
(18) श्री चंचलराजजी मेहता, अहमदाबाद
(19) श्री जिनेश कुमारजी, रोहितराजजी जैन (ढहरा वाले), हिण्डौनसिटी-जयपुर
(20) श्री सागरमलजी, हुकमचन्दजी नागसेठिया, शिरपुर
(21) श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

(1) श्री भागचन्दजी हेमेशजी सेठ, जयपुर
(2) श्री सौभाग्यमलजी, हरकचन्दजी, हनुमान प्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन (बिलोता वाले), अलीगढ़-रामपुरा, सवाईमाधोपुर, कोटा एवं जयपुर
(3) श्री स्वरूपचन्दजी बाफना, सूरत
(4) श्री सुमतिचन्दजी कोठारी, जयपुर
(5) श्री पवनलालजी मोतीलालजी सेठिया, होलनांथा
(6) श्रीमती अलकाजी, विजयजी नाहर, इन्दौर
(7) श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, जयपुर
(8) सेठ चंचलमल गुलाबदेवी सुराणा ट्रस्ट, बीकानेर
(9) श्री रंगरूपमलजी चोरड़िया, चेन्नई
(10) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
(11) इन्दर कुमार मनीष कुमार सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर
(12) श्री गणपतराजजी, हेमन्त कुमारजी, उपेन्द्र कुमारजी बाघमार (कोसाणा वाले), कोयम्बटूर
(13) Shri Ankit ji lodha, Jewels of Jaipur Gie gold creations Pvt Ltd, Mahaveer Nagar, Jaipur

JVS PURITY

JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

CERTIFIED ISO 22000 CERTIFIED

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)
Tel.: 0141-2770294
Email-jvsfoods@yahoo.com
Website-www.jvsfoods.com
FSSAI LIC. No. 10012013000138

Food Safety System Certification 22000

KALPA-TARU

WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T FORCE YOU TO CHOOSE. BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

022 3064 3065

ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with HDFC PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन